इस्लामी आस्थाएं

(कुरआन व सुन्नत की रोशनी में)

लेखक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अनुवादक

मुहम्मद सैफ़

प्रकाशक

सत्यमार्ग प्रकाशन

टैगोर मार्ग, लखनऊ

सभी अधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करणः (April 2018)

पुस्तक : इस्लामी आस्थाएं
(कुरआन व सुन्नत की रोशनी में)

लेखक : बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अनुवादकः मुहम्मद सैफ़

पृष्ठ : 112

मूल्य : Rs.80/-

मुद्रक
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रकाशक
सत्यमार्ग प्रकाशन
टैगोर मार्ग, लखनऊ

विषय-सूची

प्रस्तावना 5
प्राक्कथन 7
ईमान क्या है? 9
अल्लाह पर ईमान 11
तौहीद (एकेश्वरवाद) का अक़ीदा 12
मक्का के बहुदेववादियों की आस्था तथा एकेश्वरवाद 15
ख़ुदा को एक मानना 17
सज्दा 20
दुआ 23
ज़िबह व क़ुर्बानी 26
स्थान का सम्मान 27
फ़रियाद करना और पनाह चाहना 28
प्रत्यक्ष उपासना 30
गुणों व विशेषताओं का एकेश्वरवाद 31
इल्म–ए–ग़ैब 32
क़ुदरत व अख़्तियार 36
फ़रिश्तों पर ईमान 44
अल्लाह की किताबों पर ईमान 51
रसूलों पर ईमान 55
अक़ीदा–ए–रिसालत 57
अल्लाह के बन्दे और रसूल 57

नबियों के सरदार 58
सबसे बढ़कर अल्लाह के महबूब 59
आख़िरी रसूल 60
तमाम जहानों के रसूल 61
सबके आज्ञापालक 62
बशरियत 63
सम्मान 66
शफ़ाअत 67
मक़ाम–ए–महमूद 72
मोजज़ात 73
सहाबा का स्थान 74
आख़िरत पर ईमान 76
आलम–ए–बरज़ख़ 79
क़ब्र में सवाल व जवाब 82
क़यामत की बड़ी निशानियां 85
क़यामत 85
हिसाब–किताब जज़ा–सज़ा 89
पुल सरात 92
हौज़–ए–कौसर 95
जन्नत 97
दोज़ख़ 102
तक़दीर पर ईमान 108

بسم الله الرحمن الرحيم

प्रस्तावना

धर्म कोई भी हो उसका आधार उसकी आस्था पर होता है। पेड़ की भांति जैसे कि उसकी टहनियाँ और फल और विशेषताएं सब उसकी जड़ से ही उसमें आती हैं। इस्लाम में आस्था मूल रूप से पाँच वास्तविकताओं को मानने पर आधारित है। अल्लाह तआला को एक व सर्वशक्तिमान (क़ादिर–ए–मुतलक़) मानना, उसके फ़रिश्तों को मानना, उसकी वह्य (ईशवाणी) के द्वारा उतारी गयी किताबों को मानना, उसके द्वारा भेजे गये संदेष्टाओं (नबियों व रसूलों) को मानना, उसके द्वारा निश्चित किये गये भाग्य (तक़दीर) को हितकारी हो या न हो मानना और यह मानना कि इस लोक के बाद परलोक (आख़िरत) का जीवन होगा जिसमें उसके धरती के जीवन में किये गये कर्मों का हिसाब होगा और दण्ड व पुरुस्कार (जज़ा व सज़ा) का निर्णय होगा।

'ईमान लाया मैं अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, अच्छी व बुरी तक़दीर पर और मौत के बाद की ज़िन्दगी पर।''

इन आधारभूत नियमों में मूलभूत आधार तीन हैं। अल्लाह तआला की कामिल वहदानियत (पूर्ण एकेश्वरवाद) और क़ादिर–ए–मुतलक़ (सर्वशक्तिमान) होने को मानना। इन्सानों को सत्मार्ग बताने के लिये उसके भेजे हुए संदेष्टाओं को मानना और तीसरे परलोक के जीवन को और उसमें मिलने वाले बदले को मानना। इस्लाम में आस्था के उपरोक्त आधारों को मानने पर एवं

उनके अन्तर्गत दिये गये आदेशों का अनुपालन करना। यह आदेश उन्हीं आधारों के अनुसार होने पर स्वीकृत होंगे। परलोक का बदला उन्हीं के अनुसार होगा।

अतः हर मुसलमान को उपरोक्त नियमों को जानना और अपने कर्म व आचार–व्यवहार के लिये उनको आधार बनाना मुसलमान होने के लिये आवश्यक है। इस्लाम की आस्था के यही मूलभूत तत्व हैं। मुसलमानों के कर्म उन्हीं के अन्तर्गत रखे गये हैं। इस्लामी शरीअत के इन मूलभूत आदेशों को जानने के लिये विभिन्न भाषाओं में बहुत सी किताबें लिखी गयी हैं ताकि मुसलमान उनसे अनभिज्ञता के आधार पर आख़िरत में होने वाली क्षति से सुरक्षित रहें। यह किताबें बड़ी भी हैं और छोटी भी। छोटी किताबों में अभी हाल में विख्यात आलिम–ए–दीन (धर्मज्ञानी) और अनेक विख्यात किताबों के लेखक मौलवी सैय्यद बिलाल अब्दुल हयि हसनी ने यह किताब तैयार कर दी है जो छोटी होने के साथ–साथ इस विषय पर पर्याप्त है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इस पर जज़ा–ए–ख़ैर अता फ़रमाए और इसको सभी के लिये हितकारी बनाए।

सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

(प्रबन्धक– नदवतुल उलमा, लखनऊ)

بسم الله الرحمن الرحيم

प्राक्कथन

मृत्यु से लगभग एक वर्ष पहले की बात है लेखक के अभिभावक तथा बड़े भाई मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह0) ने एक दिन कहा कि "तक़्वीयतुल ईमान" ही के प्रारूप पर आवश्यकता है कि नयी शैली में एक किताब तैयार की जाए। तुम यदि यह काम कर डालो तो बेहतर है। शायद उसी दिन या एक–दो दिन बाद लेखक ने यह काम आरम्भ किया और अक़ीदा–ए–तौहीद (एकेश्वरवाद की आस्था) पर बड़ा भाग उसी समय तैयार हो गया। उसके बाद श्रीमान भाईसाहब की बीमारी आरम्भ हो गयी और उनकी मृत्यु हो गयी। यह कार्य दूसरी व्यस्तताओं के कारण आगे न बढ़ सका। जितना हो गया था वह मर्ज़कुल इमाम अबिल हसन अल नदवी, दारे अरफ़ात में प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। बहुत से लोगों ने इसकी आवश्यकता का एहसास दिलाया तो उसकी पूर्ति का ध्यान पैदा हुआ और अक़ीदा–ए–रिसालत, अक़ीदा–ए–आख़िरत और दूसरे अहम अक़ीदे (आस्थाओं) पर लेख तैयार किये गये। इस प्रकार यह संक्षिप्त किताब पाठकों के सामने है।

अक़ीदा–ए–तौहीद (एकेश्वरवाद की आस्था) के अध्याय में मूल रूप से हज़रत शाह इस्माईल शहीद (रह0) की किताब "तक़्वीयतुल ईमान" ध्यान में रही और अक़ीदा–ए–रिसालत के अध्याय में विशेष रूप से अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0) की "सीरतुन्नबी पाँचवें व छठे भाग" से लाभ उठाया गया। अक़ीदा–ए–रिसालत की व्याख्या

क्रमवार नहीं मिल सकी अतः उनको अपने तौर पर क्रमवार करने का प्रयास किया गया।

किताब का विषय भाषा की गूढ़ता बिल्कुल नहीं है बल्कि यह सरल भाषा में आस्था को प्रस्तुत करने का एक प्रयास मात्र है जिसकी आवश्यकता हालात को देखकर एक लम्बे समय से महसूस की जा रही थी। प्रमाण कुरआन मजीद व सही हदीसों से देने का प्रयास किया गया है।

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम का मुक़द्दमा किताब के लिये प्रमाण की हैसियत रखता है। अल्लाह तआला हज़रत को सेहत व आफ़ियत के साथ लम्बी आयु प्रदान करे। बड़ी हद तक कम्पोज़िंग और पूरी तरह से इसे संकलित करने का काम प्रिय मौलवी मुहम्मद अरमुग़ान नदवी ने किया। लेखक उनका आभारी है तथा उनके लिये दुआ करता है। प्रकाशन हर बार की भांति प्रिय मौलवी नफ़ीस ख़ाँ नदवी की निगरानी में हुआ। लेखक उनका भी आभारी है और जो लोग किसी भी प्रकार से इसके प्रकाशन में भागीदार रहे लेखक उन सबको धन्यवाद देता है। अल्लाह तआला उन सबको बेहतर बदला दे और इस कोशिश को अपने दरबार में क़ुबूल फ़रमाकर इस गुनहगार के लिये, उसके माता–पिता के लिये और बड़े भाई के लिये विशेष रूप से सदक़–ए–जारिया फ़रमाए। आमीन

बिलाल अब्दुल हयि हसनी
5/9/1436 हिजरी

ईमान क्या है?

ईमान कहते हैं आस्था रखने को और मानने को। ईमान किन चीज़ों पर लाना है, उसका विवरण अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में किया है। सूरह बक़रह में कहा जाता है:

﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أنزِلَ إِلَيه مِن رَّبِّه وَالمُؤمِنُونَ
كُلٌّ آمَنَ بِاللّه وَمَلآئِكَتِه وَكُتُبِه وَرُسُلِه لاَ نُفَرِّقُ بَينَ أحَدٍ مِّن رُّسُلِه
وَقَالُوا سَمِعنَا وَأطَعنَا غُفرَانَکَ رَبَّنَا وَإِلَيکَ المَصِيرُ﴾

"जो कुछ रसूल पर उनके रब की तरफ़ से उतारा गया, रसूल भी उस पर ईमान लाये, मुसलमान भी। सबके सब अल्लाह पर ईमान लाये और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों में (ईमान के एतबार से) अन्तर नहीं करते और उन्होंने कहा हमने सुना और पैरवी की। ऐ हमारे रब हम तेरी मग़्फ़िरत के तलबगार हैं और तेरी ही तरफ़ लौटना है।"

(सूरह बक़रहः 285)

इसी सूरह में दूसरी जगह कहा जाता है:

﴿لَّيسَ البِرَّ أن تُوَلُّوا وُجُوهكُم قِبَلَ المَشرِقِ وَالمَغرِبِ
وَلَـكِنَّ البِرَّ مَن آمَنَ بِاللّهِ وَاليومِ الآخِرِ وَالمَلآئِكَةِ وَالكِتَابِ وَالنَّبِيين﴾

"नेकी यह नहीं कि तुम अपने चेहरों को पूरब या पश्चिम की ओर कर लो बल्कि अस्ल नेकी तो उसकी है जो ईमान लाये और आख़िरत के दिन पर और फ़रिश्तों और किताबों और नबियों पर।"(सूरह बक़रहः 177)

सूरह निसा में भी इन्हीं अक़ीदों (आस्थाओं) की शिक्षा दी गयी है:

﴿يا أيها الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَالكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالكِتَابِ الَّذِي أنزَلَ مِن قَبلُ وَمَن يكفُر بِاللهِ وَمَلاَئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَاليومِ الآخِرِ فَقَد ضَلَّ ضَلاَلاً بَعِيدا﴾

"ऐ ईमान वालों! अल्लाह और उसके रसूलों पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूलों पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले उतारी यक़ीन पैदा करो और जिसने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़िरत के दिन को न माना वह दूर जा भटका।" (सूरह निसाः 136)

सूरह निसा की इस आयत में यह बात भी साफ़ हो गई है कि अगर कोई इन चीज़ों में से किसी का भी इन्कार करता है तो वह खुला हुआ गुमराह है।

अल्लाह के रसूल से जब हज़रत जिब्राईल (अलै0) ने ईमान के बारे में सवाल किया तो आप (स0अ0) ने फ़रमायाः

﴿أن تؤمن بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر والقدر خيره وشره﴾

(अल्लाह पर ईमान लाओ उसके फ़रिश्तों और किताबों और रसूलों और आख़िरत के दिन और तक़दीर पर ईमान लाओ)

यही क्रम ईमान–ए–मुफ़स्सल में भी बयान किया गया है। ईमान के इसी क्रम को आस्थाएं (अक़ीदा) भी कहते हैं।

इस्लाम में आस्था को मूलभूत महत्व प्राप्त है। अक़ीदा अगर ठीक न हो तो बड़े–बड़े काम बेहैसियत होकर रह जाते हैं और आदमी मुसलमान बाक़ी नहीं रह जाता। आस्था में भी सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी आस्था एकेश्वरवाद (तौहीद) की है। बाक़ी आस्थाएं इसी एकेश्वरवाद की आस्था से निकलती हैं। एकेश्वरवाद की आस्था के ठीक होने से शेष आस्थाओं का ठीक होना भी आसान हो जाता है।

अल्लाह पर ईमान

अल्लाह पर यक़ीन करना और उसको उसी तरह मानना जैसा कि उसके बारे में उसके नबियों ने बताया उसको अल्लाह पर ईमान कहते हैं। कुरआन मजीद अल्लाह की आख़िरी और मुकम्मल किताब है, जिसमें अल्लाह के गुण तथा विशेषताएं (सिफ़ात) बयान की गयीं हैं। जब उसकी सिफ़ात बयान की जाती हैं तो कुरआन मजीद उनको खोल–खोलकर बयान करता है। सूरह हश्र की आख़िरी आयतें इसकी खुली मिसाल हैं, कहा जाता है:

﴿هوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هوَ عَالِمُ الغَيبِ وَ الشَّهادَةِ هوَ الرَّحمٰنُ الرَّحِيمُ هوَ اللّٰهُ الَّذِي
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هوَ المَلِكُ القُدُّوسُ السَّلَامُ المُؤمِنُ المُهيمِنُ العَزِيزُ الجَبَّارُ المُتَكَبِّرُ
سُبحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يشرِكُونَ هوَ اللّٰهُ الخَالِقُ البَارِئُ المُصَوِّرُ لَه الأَسمَاءُ الحُسنَي
يسَبِّحُ لَه مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَ الأَرضِ وَهوَ العَزِيزُ الحَكِيمَ﴾

"वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, हर छिपी हुई और खुली हुई का जानने वाला है। वही रहमान व रहीम है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, जो बादशाह है, पाक है, सलामती ही सलामती है, अमन अता फ़रमाने वाला है, सबका निगेहबान है, ग़ालिब है, ज़बरदस्त है, बड़ाई का मालिक है, अल्लाह की ज़ात उनके हर तरह के शिर्क से पाक है, वही अल्लाह है जो पैदा करने वाला है, वजूद बख़्शने वाला है, शक्ल अता फ़रमाने वाला है, उसके अच्छे–अच्छे नाम हैं, उसी की तस्बीह में लगे हैं जो भी आसमान और ज़मीन में हैं और वही ग़ालिब है और हिकमत रखता है।" (सूरह हश्रः 22–24)

और जब उसकी पवित्रता व महानता के वर्णन का अवसर होता है तो उसको बिल्कुल दो टूक शब्दों में बयान कर दिया जाता है और बात साफ़ कर दी जाती है कि:

﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾

"उस जैसा कोई नहीं और वह ख़ूब सुनता ख़ूब देखता है।"

(सूरह शूराः 11)

वह अपने गुणों व विशेषताओं में अकेला व तन्हा है। कोई उसके जैसा नहीं। यही तौहीद का अक़ीदा है। जो ईमान के अध्याय में बुनियादी हैसियत रखता है। आगे के पन्नों में उसी की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है।

तौहीद (एकेश्वरवाद) का अक़ीदा

तौहीद (एकेश्वरवाद) कहते हैं एक मानने को। इसका संबंध अल्लाह के गुणों व विशेषताओं से है। कायनात का ज़र्रा–ज़र्रा पुकार–पुकार कर कहता है कि उन सभी चीज़ों का एक पैदा करने वाला है। सारी व्यवस्था उसी के हाथ में है। वह जिस तरह चाहता है उनमें फेरबदल करता है। उसके अच्छे–अच्छे नाम हैं। उन नामों से उसको पुकारा जाये और सिर्फ़ उसी की बन्दगी की जाए। उपासना योग्य सारे कर्म उसी के साथ विशेष हैं। किसी को इबादत में उसके साथ साझी न बनाया जाए। केवल उसी के आगे नतमस्तक हुआ जाये और उसी को मुश्किलकुशा (कष्ट निवारक) और हाजतरवा (दुखहरता) समझा जाए।

अल्लाह तआला ने दुनिया बनायी और उसमें इन्सानों को बसाया। हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) सबसे पहले इन्सान हैं जिनको उनकी बीवी के साथ दुनिया में आसमान से उतारा गया और यह कह दिया गया कि तुम और तुम्हारी औलाद जब तक एक अल्लाह को मानती रहेगी, उसी की इबादत करती रहेगी और उसके बताए हुए तरीक़े पर चलती रहेगी, उस वक़्त तक वह कामयाब होती रहेगी और जब वह इस रास्ते से हटेगी, अल्लाह के अलावा दूसरों को पूजेगी तो उसका ठिकाना जहन्नम होगा।

शैतान जो इन्सानों का हमेशा का दुश्मन है। उसने अल्लाह से पहले ही दिन इजाज़त ले ली कि इन्सान को बहकाऊंगा और उसको ग़लत रास्ते पर डालने की हर मुमकिन कोशिश करूंगा। अल्लाह ने कहा कि जा, अपनी सारी तरकीबें लगा ले, लेकिन मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा। उस दिन से शैतान की सबसे बड़ी कोशिश यही है कि वह इन्सान को शिर्क (बहुदेववाद) में डालकर कर एक अल्लाह की बन्दगी से हटा दे। इसलिए कि यही इन्सान की सबसे बड़ी गुमराही है कि वह अपने पैदा करने वाले के हक़ को भूल जाये और शिर्क (बहुदेववाद) व कुफ़्र (इन्कार) में पड़कर उसके परिणामस्वरूप हमेशा—हमेश के लिये नर्क का ईंधन बने।

अल्लाह का इन्सान पर यह बड़ी कृपा है कि उसने हमेशा बन्दों को सही रास्ते पर डालने के लिये और एक अल्लाह की बन्दगी में लगाये रखने के लिये हर दौर में रसूल अर्थात संदेष्टा भेजे। हर रसूल की दावत यही थी:

﴿مَالَكُم مِن إِلٰهٍ غَيرُه﴾

"उस एक अल्लाह के इलावा तुम्हारा कोई माबूद (उपास्य) नहीं।" (सूरह आराफ़: 59)

उन रसूलों में सबसे आख़िरी और सबसे श्रेष्ठ रसूल हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को सारी दुनिया के लिये और क़यामत तक के लिये भेजा गया। जिस वक़्त आप (स0अ0) तशरीफ़ लाये उस वक़्त मक्का के मुश्रिक अल्लाह को मानते तो थे लेकिन उसके साथ सैंकडों ख़ुदाओं को शरीक करते थे। उनकी उपासना करते और चढ़ावे चढ़ाते। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने हर शिर्क की काट की तथा उसको सबसे बड़ा गुनाह बताया और क़ुरआन मजीद में साफ़—साफ़ ऐलान कर दिया गया कि:

﴿إِنَّ اللهَ لاَ يَغفِرُ أَن يُشرَكَ بِهِ وَيَغفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ﴾

"अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और उसके अलावा जिसको चाहेगा माफ़ कर देगा।" (सूरह निसा: 116)

रसूलुल्लाह (स0अ0) के आने का अस्ल मक़सद तौहीद की दावत देना था और तौहीद के सिलसिले की ग़लतफ़हमियों को दूर करना था। आप (स0अ0) ने किसी ज़माने में शिर्क के साथ समझौता गवारा न किया। मुश्रिकीन मक्का (मक्का के बहुदेववादी) कहते थे कि आप (स0अ0) हमारे माबूदों की काट करना छोड़ दें तो हमारी सारी दुश्मनी ख़त्म हो जाएगी। हम आपकी हर बात मानने को तैयार हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने एक लम्हे के लिये भी इसमें ढ़िलाई नहीं बरतते और सारी ज़िन्दगी तौहीद की हक़ीक़त बयान फ़रमाते रहे और ख़ुदा और बन्दे का फ़र्क़ बताते रहे।

ख़ुद रसूलुल्लाह (स0अ0) को जब अपनी ज़ात–ए–अक़दस के बारे में ख़ौफ़ हुआ कि कहीं उम्मत आप (स0अ0) को उसी तरह ख़ुदाई का दर्जा न दे दे जिस तरह ईसाईयों ने हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के साथ किया। तो आप (स0अ0) ने खुलकर यह घोषणा की:

﴿لاتطروني كمااطرت النصاري ابن مريم
فانما أنا عبده فقولوا عبدالله ورسوله﴾

(मुझे इस तरह आगे न बढ़ाओ जिस तरह नसारा ने ईसा बिन मरियम के साथ किया। यक़ीनन मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूं तो तुम कहो कि अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं) [1]

और मृत्यु से पहले पवित्र ज़बान से यह बात निकली:

﴿لعن الله اليهود والنصاري اتخذوا قبور انبيائهم مساجد﴾

(अल्लाह तआला यहूद व नसारा पर लानत करे, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया) [2]

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने किस तरह तौहीद (एकेश्वरवाद) को साफ़–साफ़ बयान किया; उसके लिये पहले मक्का के मुश्रिको के अक़ीदे को समझना होगा और उनके शिर्क की हक़ीक़त को जानना

---

1. सही बुख़ारी : 34456
2. सही बुख़ारी : 1330

पड़ेगा, जिसका आप (स0अ0) ने सुधार किया। फिर कुरआन मजीद और रसूलुल्लाह (स0अ0) की हदीसों की रोशनी में तौहीद की हक़ीक़त साफ़ होगी।

मक्का के बहुदेववादियों की आस्था तथा एकेश्वरवाद

आप (स0अ0) का आना यद्यपि पूरी दुनिया के लिये और सदा के लिये है फिर भी आप (स0अ0) का प्रथम सम्बोधन मक्का वालों के लिये था। आप (स0अ0) ने जब उनके सामने एकेश्वरवार की दावत दी तो उन्होंने साफ़ कहा कि हम अस्ल में इबादत के लायक़ अल्लाह ही को समझते हैं, लेकिन दूसरों की इबादत हम इसलिये करते हैं कि वो हमें अल्लाह से क़रीब कर देंगे। कुरआन मजीद में इस बात का ज़िक्र मौजूद है:

﴿مَا نَعۡبُدُهُمۡ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلۡفَىٰٓ﴾

"हम उनकी बन्दगी इसलिये करते हैं ताकि वे हमें अल्लाह से मर्तबे में क़रीब कर दें।" (सूरह ज़ुमरः 3)

इससे साफ़ मालूम होता है कि वे अल्लाह को ख़ुदा समझते थे और उसके रब होने को मानते थे लेकिन इबादत में वे औरों को भी शरीक करते थे। इसका भी इतिहास हमें एक सही हदीस से मालूम होता है कि वे जिन बुतों को पूजते थे, उनके बारे में हदीस में है कि ये सब नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम के नेक लोग थे। जब उनकी मृत्यु हो गयी तो शैतान ने लोगों को ये बात समझायी कि यह नेक लोग जिस जगह बैठते थे वहां पत्थर लगाओ और पत्थरों को उनके नाम से पुकारो। तो उन्होंने ऐसा ही किया। फिर जब यह लोग भी मर गये और उनसे इल्म उठ गया तो उनकी औलादों ने इन पत्थरों और यादगारों की पूजा करना शुरू कर दिया।[1]

यह बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) का इतिहास है। मगर इस बुत परस्ती के साथ वे यक़ीन रखते कि अल्लाह ही ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला है। करने वाली ज़ात उसी की है। उनके इस अक़ीदे का ज़िक्र कुरआन मजीद में मौजूद है:

---

1. सही बुख़ारीः 4920

﴿قُل لِّمَنِ الأَرضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُم تَعلَمُونَ ○ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُل أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ○ قُل مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبعِ وَرَبُّ العَرشِ العَظِيمِ ○ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُل أَفَلَا تَتَّقُونَ ○ قُل مَن بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيهِ إِن كُنتُم تَعلَمُونَ ○ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُل فَأَنَّى تُسحَرُونَ﴾

"पूछिये कि ज़मीन और ज़मीन में जो कुछ है वह किसका है (बताओ) अगर तुम इल्म रखते हो? वो झट से यही कहेंगे कि अल्लाह का। फिर भी तुम ध्यान नहीं रखते। पूछिये सातों आसमानों और अर्शे अज़ीम का मालिक कौन है? वे फ़ौरन यही कहेंगे कि अल्लाह के हैं। कहिये फिर भी तुम डर नहीं रखते? पूछिये कि हर चीज़ की बादशाहत किसके हाथ में है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता (बताओ) अगर तुम जानते हो? वे फ़ौरन यही कहेंगे कि अल्लाह के हाथ में। आप कह दीजिये कि फिर कहां का जादू तुम पर चल जाता है?!"

(सूरह मोमिनूनः 84–88)

इसका नतीजा था कि जब वे किसी बड़ी मुसीबत में पड़ जाते तो अल्लाह ही को पुकारते फिर जब मुसीबत टल जाती तो दूसरों की पूजा करने लगते। कुरआन मजीद में उनके इस तरीक़े का ज़िक्र भी मौजूद है:

﴿حَتَّى إِذَا كُنتُم فِي الفُلكِ وَجَرَينَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ المَوجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُم أُحِيطَ بِهِم دَعَوُا اللهَ مُخلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِن أَنجَيتَنَا مِن هٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ﴾

"यहां तक कि जब कश्ती में सवार होते हो और खुशगवार हवा के ज़रिये वह लोगों को लेकर चलती है और लोग उसमें मगन हो जाते हैं तो एक सख़्त आंधी उनको आ लेती है और हर तरफ़ से मौजें उन पर उठती हैं और वो समझ जाते हैं कि वो इसमें घिर गये तो बन्दगी में ध्यानमग्न होकर वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में से होंगे।" (सूरह यूनुसः 22)

इन आयतों से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वे अल्लाह को रब मानते थे और बड़ी हद तक "तौहीद" (एकेश्वरवाद) के मानने वाले थे मगर अल्लाह के साथ दूसरों की भी इबादत करते थे और उनके लिये चढ़ावा चढ़ाते थे और इसको अल्लाह से क़रीब होने का ज़रिया समझते थे। इसीलिये उनको "मुश्रिक" (बहुदेववादी) कहा गया। यह चीज़ टर्म में *"शिर्क फ़िल उलूहियत"* या *"शिर्क फ़िल इबादह"* है। यानि उलूहियत या इबादत में शिर्क कहलाती है। जबकि तौहीद के लिये ज़रूरी है कि अल्लाह को रब मानने में तौहीद के साथ–साथ इबादत में भी तौहीद हो और अल्लाह के गुणों में भी तौहीद हो। आगे इबादत में तौहीद और अल्लाह की सिफ़ात में तौहीद की तफ़सील बयान की जाती है।

खुदा को एक मानना

इसको इबादत में तौहीद भी कहते हैं। इसका मतलब यह है कि इबादत की सभी क़िस्मों को सिर्फ़ अल्लाह के लिये ख़ास कर लिया जाये। जैसे दुआ, नज़र, कुर्बानी, सम्मान के वे काम जो सिर्फ़ अल्लाह के लिये ठीक हैं। जैसे सज्दा, रूकुअ इत्यादि। अर्थात यह कि इबादत की सारी क़िस्में ज़ाहिरी हों या अन्दरूनी सिर्फ़ अल्लाह के लिये ख़ास कर ली जायें। उनमें से किसी में भी अल्लाह के साथ किसी को साझी न किया जाये। चाहे वह नबी हो या फ़रिश्ता, वली हो या शहीद, यही वह तौहीद है जिसका ज़िक्र कुरआन मजीद की इन आयतों में किया गया है:

﴿إِيَّاكَ نَعبُدُ وإِيَّاكَ نَستَعِينُ﴾

"हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझसे ही मदद चाहते हैं।"

(सूरह फ़ातिहाः 4)

﴿فَاعبُده وَتَوَكَّل عَلَيه﴾

"उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो।"(सूरह हूदः 123)

﴿رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرضِ وَمَا بَينَهُمَا فَاعبُده
وَاصطَبِر لِعِبَادَتِه هَل تَعلَمُ لَه سَمِياً﴾

"आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ इनके दरमियान है, बस उसी की इबादत कीजिये और उसी की इबादत पर जमे रहिये कि क्या आप उसका कोई हमसर जानते हैं।"

(सूरह मरियमः 65)

"इला" कहते हैं उसको जो इबादत के लायक़ हो। मक्का के मुश्रिक चूंकि अल्लाह के साथ दूसरों की इबादत करते थे, इसलिये उन्होंने बहुत से माबूद बना लिये थे। एक "इला" का उनके यहां कोई विचार नहीं था। इसीलिये जब रसूलुल्लाह (स0अ0) ने सिर्फ़ एक ही रब की इबादत की दावत पेश की तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। कुरआन मजीद ने उसको यूं बयान किया हैः

﴿أَجَعَلَ الآلِهَةَ إِلَهاً وَاحِداً إِنَّ هذَا لَشَيءٌ عُجَابٌ﴾

"उन्होंने अपने माबूदों की जगह एक ही माबूद रहने दिया, वाक़ई ये बहुत ही अजीब बात है।" (सूरह स्वादः 5)

अब उन दोनों बातों को समझने की ज़रूरत है। ऊपर गुज़र चुका है कि वे रब को एक मानते थे और उसी को अस्ल पैदा करने वाला व मालिक समझते थे लेकिन इबादत में दूसरों को भी भागीदार बनाते थे। और बहुतों की इबादत के विचारक थे। इबादत में शिर्क करने की वजह से उनको मुश्रिक कहा गया और रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उनको तौहीद–ए–इबादत और एकेश्वरवार की दावत दी और कहाः

﴿قولوا لا اله الا الله تفلحوا﴾

(मान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं कामयाब हो जाओगे)[1]

माबूद कहते ही उसको हैं जिसकी इबादत की जाये। कुरआन मजीद में जगह–जगह आया हैः

﴿وَإِلَـهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ﴾

---

1. मुसनद अहमद बिन हम्बल : 19520

"और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है उसके इलावा कोई माबूद नहीं है वही बहुत रहमान और रहीम है।" (सूरह बक़राः 163)

﴿وَمَن يدعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهاً آخَرَ لا بُرهانَ لَهُ بِهِ
فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يفلِحُ الكَافِرُونَ﴾

"और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को पुकारे और उसकी उसके पास कोई दलील भी न हो तो इसका हिसाब उसके रब के पास होगा। वह इन्कार करने वालों को कामयाब नहीं करता।" (सूरह अलमोमिनीनः 117)

अरब के मुश्रिक (बहुदेववादी) अल्लाह तआला के वजूद को मानते थे। ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ उसी को जानते थे। मुश्किल वक़्त में उसी को पुकारते थे। उसको अपना रब समझते थे। मगर इसके बावजूद अल्लाह ने उनको मुश्रिक क़रार दिया और रसूलुल्लाह (स0अ0) ने ज़िन्दगी भर उनसे जंग जारी रखी। इसका कारण केवल यह है कि वो अल्लाह को ख़ालिक़ व मालिक मानने के बावजूद बीच के वास्तों के इस तौर पर क़ायल थे कि उनकी नज़र व नियाज़ करने और वे काम जो अस्ल में इबादत हैं, उन काम में वे बीच के वास्तों को शरीक कर लिया करते थे। इनको इस शिर्क से रोका गया है और तौहीद की खुली दावत दी गयी हैः

﴿إِنَّا أنزَلنَا إِلَيكَ الكِتَابَ بِالحَقِّ فَاعبُدِ اللّٰهَ مُخلِصاً لَّهُ الدِّينَ﴾

"हमने ठीक–ठीक किताब आप पर उतारी है। दीन को उसी के लिये ख़ालिस करके उसकी इबादत करते रहिए।" (सूरह ज़ुमरः 2)

उन्होंने इसका जो जवाब दिया उसको क़ुरआन मजीद ने नक़ल किया हैः

﴿مَا نَعبُدُهم إِلَّا لِيقَرِّبُونَا إِلَي اللّٰهِ زُلفَي﴾

"हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिये करते हैं ताकि वो हमको ख़ुदा से क़रीब कर दें।" (सूरह ज़ुमरः 3)

यही कारण है कि अल्लाह तआला ने उनके बारे में कहाः

﴿وَمَا يؤمِنُ أكثَرُهم بِاللهِ إلاَّ وَهم مُّشرِكُونَ﴾

"उनमें अक्सर अल्लाह को मानते हैं मगर इस तरह कि उसके साथ दूसरों को शरीक करते हैं।" (सूरह ज़ुमरः 2)

अरब के मुश्रिक (बहुदेववादी) इबादत में दूसरों को शरीक करते थे और कहते थे कि यह शिर्क नहीं है। यह शिर्क इस सूरत में होगा जब हम दूसरों को पैदा करने वाला व मालिक समझेंगे। उपरोक्त आयतों में इसकी ज़ोरदार तरीक़े से काट की गयी है और इसको शिर्क ही घोषित कर दिया गया है। आगे इबादत के कामों को स्पष्ट रूप से वर्णित किया जाएगा।

सज्दा

इबादत के कामों में सज्दे का सबसे अधिक महत्व है। यह केवल अल्लाह के साथ ख़ास है। किसी और को सज्दा करना शिर्क है। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿لاَ تَسجُدُوا لِلشَّمسِ وَلاَ لِلقَمَرِ وَاسجُدُوا لِلّهِ الَّذِي خَلَقَهنَّ إن كُنتُم إياه تَعبُدُونَ﴾

"न सूरज को सज्दा करो और न चांद को और सज्दा अल्लाह को करो जिसने पैदा किया। अगर तुम उसी की बन्दगी करते हो।" (सूरह फ़ुसलतः 37)

एक हदीस में आता है किः

﴿وعن قيس بن سعد بن عبادة الانصاري قال: أتيت الحيرة فرأيتهم يسجدون لمرزبان لهم فقلت: لرسول الله أحق أن يسجدواله فأتيت رسول الله ﷺ فقلت: إني أتيت الحيرة فرايتهم يسجدون لمرزبان لهم فأنت أحق أن يسجد لک فقال لي: أرايت لو مررت بقبري اكنت تسجد له؟ فقلت: لا فقال: لا تفعلوا﴾

"हज़रत क़ैस बिन साद बिन इबादा कहते हैंः मैं हियरा (एक जगह का नाम) गया वहां मैंने लोगों को देखा कि वे अपने चौधरी को सज्दा करते हैं, तो मैं रसूलुल्लाह (स0अ0) की ख़िदमत में आया और मैंने कहाः मैं हीरा गया वहां देखा कि वे लोग अपने चौधरी को सज्दा करते हैं तो आप इस बात के ज़्यादा हक़दार हैं कि आपको सज्दा

किया जाये तो आप (स0अ0) ने मुझसे फ़रमायाः तुम्हारा क्या ख़्याल है कि अगर तुम मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे तो क्या उसको सज्दा करोगे? नहीं। तो आप (स0अ0) ने फ़रमाया, तो ऐसा न करो।"[1]

बहुत से लोगों के दिमाग़ में यह बात आती है कि अगर अल्लाह के अलावा किसी को सज्दा करना शिर्क होता है तो अल्लाह तआला हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को फ़रिश्तों से सज्दा न कराते। इसी तरह हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) और उनके बेटे हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के आगे सज्दे में न गिर जाते। यह एक शैतानी ख़्याल है। पिछले नबियों की शरीअतें अलग थीं। यह उम्मत सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद (स0अ0) की शरीअत की पाबन्द है। हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) की शरीअत में भाई—बहन की शादी जायज़ थी। हज़रत याकूब और हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की शरीअत के बहुत से हुक्म अलग थे। उनके यहां सम्मान हेतु सज्दा करने की छूट थी लेकिन इस शरीअत में अल्लाह के अलावा किसी के लिये सज्दे की इजाज़त नहीं। जैसा कि ऊपर गुज़र चुकी आयत व हदीस गुज़र है। जो चीज़ें मुहम्मद (स0अ0) की शरीअत में मना और हराम हैं दूसरी पिछली शरीअतों से दलील लेकर उन पर अमल करना खुली गुमराही है और हमारे नबी (स0अ0) की हक़तलफ़ी है।

आप (स0अ0) ने मृत्यु से दो—तीन दिन पहले यह बात कही थी किः

﴿لعن الله اليهود والنصارىٰ اتخذوا قبور انبياءهم مساجد﴾

"अल्लाह यहूद व नसारा पर लानत करे उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया है।"[2]

आप (स0अ0) ने अन्त में यह बात स्पष्ट रूप से इसलिए कही कि कहीं रसूलुल्लाह (स0अ0) की पवित्र क़ब्र के साथ रसूलुल्लाह (स0अ0) के उम्मती वही काम न करनें लगें जो दूसरी उम्मतों ने अपने नबियों की क़ब्रों के साथ किया।

---

1 अबूदाऊद : 2142

2. सही बुख़ारी : 1330

ज़ाहिर है कि जब आप (स0अ0) की पाक क़ब्र के सामने सज्दा नाजायज़ है तो किसी और वली की क़ब्र पर सज्दा करना कहां जायज़ हो सकता है। यह मुश्रिकाना काम जो लानत का मुस्तहिक़ है। आज उम्मत का एक गिरोह इसमें लगा हुआ है और वो अल्लाह और अल्लाह के रसूल (स0अ0) की खुली अवज्ञा कर रहा है।

जिस तरह क़ब्र को सज्दा करना शिर्क का काम है उसी तरह किसी ज़िन्दा आदमी या दूसरी चीज़ को सज्दा करना शिर्क का काम है। यह रस्म भी बहुत से इलाक़ों में पैदा हो गयी है कि बहुत से लोग अपने पीर को सज्दा करते हैं। इससे सज्दा करने वाले का भी ईमान जाता है और सज्दा कराने वाले का भी। इसलिये कि यह काम इबादत है और इबादत का काम अल्लाह के अलावा किसी और के लिये किया जाये तो ये शिर्क है, जिसको मिटाने के लिये आप (स0अ0) दुनिया में आये थे। अगर कोई यह सोचता है कि सज्दा इबादत के लिये नहीं बल्कि सम्मान के लिये तो इसका जवाब यह है कि आप (स0अ0) से बढ़कर कौन सम्मानित हो सकता है मगर ख़ुद आप (स0अ0) ने सख़्ती से इससे मना किया जैसा कि ऊपर हदीस में गुज़र चुका है। जिसमें सज्दे का ज़िक्र था वह सज्दा सम्मान हेतु ही था लेकिन उम्मत को रोक दिया गया इसलिये पूरी उम्मत इस पर सहमत है कि अल्लाह के अलावा किसी को भी किसी भी तरह का सज्दा जायज़ नहीं और यह शिर्क है। अल्लाह तआला कहता है:

﴿وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾

“और यह सज्दे सब अल्लाह ही के लिये हैं तो अल्लाह के सिवा किसी और को मत पुकारो।” (सूरह जिन: 18)

सज्दे के अलावा किसी के सामने नमाज़ की तरह हाथ बांधकर खड़े होना भी ठीक नहीं। एक हदीस में रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा:

﴿من سره أن يتمثل له الرجال قياماً فليتبوأ مقعده من النار﴾

"जिसको यह अच्छा लगता हो कि लोग उसके सामने तस्वीर (बुत) की तरह खड़े रहें, वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"[1]

आप (स0अ0) को तो यह भी पसन्द नहीं था कि आप सभा में किसी ऊंचे स्थान पर बैठें। आप (स0अ0) का नियम था कि आप (स0अ0) बैठ जाते और सहाबा किराम (रज़ि0) उनके चारों ओर बैठ जाते।

दुआ

दुआ ख़ालिस इबादत का काम है और अल्लाह के साथ ख़ास है। अगर किसी और से दुआ की जाती है तो यह शिर्क है। कुरआन की आयत में साफ़–साफ़ आया है कि:

﴿فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللّٰهِ أَحَدًا﴾

''बस अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो।''

(सूरह जिन्नः 18)

आयत में यह बात भी साफ़ हो गयी कि अगर कोई अल्लाह ही से दुआ करता है, ज़रूरत के वक़्त उसी को पुकारता है, मगर कभी–कभी किसी नबी या वली को भी इसमें शरीक कर लेता है और उनसे दुआ मांगने लगता है तो यह भी शिर्क है और अल्लाह ने इससे भी मना किया है।

इस ज़माने के मुश्रिकाना कामों में यह काम भी है कि लोग क़ब्रों के पास जाकर उनसे दुआंए करते हैं। किसी क़ब्र वाले से औलाद मांगते हैं। किसी से रोज़ी मांगते हैं और अपनी दूसरी ज़रूरते मांगते हैं और समझते हैं कि यह हमारा काम बना देंगे। यह सब मुश्रिकाना काम हैं। बहुत से लोग रसूलुल्लाह (स0अ0) से दुआंए करते हैं और आपको मुश्किल दूर करने वाला समझते हैं। यह भी शिर्क है। दुआ उन कामों में से है जो ख़ास अल्लाह के

---

1. सुनन तिरमिज़ी : 2979

लिये है। बहुत सी आयतों में अल्लाह ने साफ़–साफ़ बता दिया है कि दुआ सिर्फ़ अल्लाह से मांगो। ज़रूरत के वक़्त सिर्फ़ उसी को पुकारो। कहा जाता है:

﴿وَلاتَدعُ مِن دُونِ اللّٰہ مَا لاَینفَعُکَ وَلاَیضُرُّکَ﴾

''और अल्लाह के अलावा किसी को भी मत पुकारो जो न तुम्हें फ़ायदा पहुंचा सकता है और न तुम्हें नुक़सान पहुंचा सकता है।''

(सूरह यूनुस : 106)

एक जगह कहा गया है:

﴿وَالَّذِینَ تَدعُونَ مِن دُونِہٖ مَا یملِکُونَ مِن قِطمِیرٍ ○ إِن تَدعُوھم لا یسمَعُوا دُعَاءَ کُم
وَلَو سَمِعُوا مَا استَجَابُوا لَکُم وَیومَ القِیامَۃِ یکفُرُونَ بِشِرکِکُم وَلا ینَبِّئُکَ مِثلُ خَبِیرٍ﴾

"और जिनको तुम उसके अलावा पुकारते हो, गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी दुआ सुन नहीं सकते और अगर सुन भी लें तो तुम्हारी बात पूरी नहीं कर सकते और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इन्कार कर देंगे और आपको उस बताने वाले की तरह कोई बता नहीं सकता।"

(सूरह फ़ातिर: 13–14)

जिन औलिया अल्लाह से या नबियों से दुआएं की जाती हैं, अव्वल तो वे ज़रूरत पूरी नहीं कर सकते। दूसरे वे क़यामत में दुआ करने वालों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे कि यह सब उनकी बनायी हुई बातें हैं। हमने उनको इसका आदेश नहीं दिया था।

एक जगह इरशाद है:

﴿وَمَن أَضَلُّ مِمَّن یدعُو مِن دُونِ اللّٰہِ مَن
لَّا یستَجِیبُ لَہٗ إِلَي یومِ القِیامَۃِ وَھم عَن دُعَائِھم غَافِلُونَ﴾

"और उससे बढ़कर गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर ऐसों को पुकारे जो क़यामत तक उसका जवाब न दे सकें और उसकी पुकार का उनको पता ही न हो।" (सूरह एहक़ाफ़: 5)

बात यह है कि दुआ किसी से नहीं की जा सकती सिवाय अल्लाह के और अगर किसी दूसरे से दुआ की जायेगी तो ये शिर्क है। एक हदीस में आप (स0अ0) ने यहां तक कहाः

﴿فليسأل احدكم ربه حاجته كلها حتى يسأله شسع نعله إذا انقطع﴾

(तुममें से हर एक अपनी हर ज़रूरत अल्लाह से मांगे यहां तक कि अगर जूते का तल्ला भी टूट जाये तो वह भी अल्लाह से मांगे)[1]

दीन व दुनिया की कोई छोटी या बड़ी ज़रूरत हो वह अल्लाह ही से मांगी जाये। उसी से दुआ की जाये। किसी के बारे में ये समझना कि यह ग़ैब जानते हैं। हमारी ज़रूरत पूरी कर देंगे, शिर्क है। हाँ बुज़ुर्गों से दुआ कराने की न केवल इजाज़त है बल्कि उसको बेहतर कहा गया है लेकिन यहां भी इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि वे भी केवल दुआ करते हैं। अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते हैं। अल्लाह तआला के प्यारे बन्दे होते हैं। इसीलिये अल्लाह तआला की रहमत उनके साथ ख़ास होती है और उनकी ज़्यादा दुआंए कुबूल होती हैं। मगर यह समझना कि उनकी दुआ अल्लाह तआला रद्द कर ही नहीं सकता, ये भी मुश्रिकाना अक़ीदा है। रसूलुल्लाह (स0अ0) से बढ़कर न कोई हुआ है और न होगा। आप (स0अ0) चाहते थे कि अबूतालिब इस्लाम कुबूल कर लें, मगर अल्लाह का फ़ैसला यह नहीं था वो उनकी चाहत और दुआ के बावजूद इस्लाम नहीं लाये और अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल की किः

﴿إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ﴾

''आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते, हां अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।'' (सूरह क़ससः 56)

इससे बात साफ़ हुई कि अल्लाह तआला दुआ कुबूल करने पर मजबूर नहीं है। वे हर चीज़ का मालिक है। जिसकी चाहे दुआ कुबूल करे और जिसकी चाहें रद्द कर दे।

---

1. मुसनद अहमदः 1079

ज़िबह व कुर्बानी

यह काम केवल अल्लाह के लिये किया जा सकता है। अगर ज़िबह व कुर्बानी अल्लाह के अलावा किसी दूसरे की रज़ा के लिये की जायेगी तो ये काम शिर्क होगा। अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿قُلْ إِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي وَمَحيايَ وَمَمَاتِي لِلّهِ رَبِّ العَالَمِين﴾

"कि मेरी ज़िबह, मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मरना बस अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिये और उसी का मुझे हुक्म हुआ है और मैं सबसे पहला फ़रमाबरदार हूं।" (सूरह अलइनआमः 162)

और जो भी जानवर अल्लाह के अलावा किसी और के लिये छोड़ा जायेगा या अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर ज़िबह किया जायेगा वो नजिस होगा। अल्लाह फ़रमाता है:

﴿أو فِسقاً أُهلَّ لِغَيرِ اللهِ بِه﴾

"या गुनाह (का जानवर) हो जिस पर ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो।" (सूरह इनआमः 145)

यह मुश्रिकाना काम बहुत से लोगों के बीच चलन में है कि वो जानवर बुज़ुर्ग के नाम पर छोड़ देते हैं। उसको सम्मान देते हैं। कोई कहता है कि ये शेख़ सद्दू का बकरा है कोई कहता है कि अहमद कबीर की गाय है। यह फ़लां का जानवर है। किसी भी वली, नबी, जिन या किसी भी प्राणि के नाम पर जानवर छोड़ देना शिर्क का काम है और अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर ज़िबह करने से वह जानवर अपवित्र हो जाता है और उस काम के करने वाले पर शिर्क का गुनाह आता है। इसलिये कि जो काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये होना चाहिये वो अल्लाह के अलावा किसी दूसरे के लिये किया। हज़रत मुजद्दिद अलफ़े सानी (रह0) लिखते हैं: "बहुत से लोगों ने यह नियम बना लिया है कि वो अल्लाह के वली, नेक लोगों, और अपने बुज़ुर्गों के लिये जानवर का चढ़ावा चढ़ाते हैं।

उन जानवरों को उनकी क़ब्र पर ले जाते हैं और ज़िबह करते हैं। फ़ुक़्हा का कहना है कि उन्होंने इसको शिर्क में गिना है।"[1]

मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि हज़रत अली (रज़ि0) ने एक किताब निकाली उसमें लिखा थाः

﴿لعن الله من ذبح لغير الله﴾

(अल्लाह उस पर लानत करे जो अल्लाह के अलावा किसी और के लिये ज़िबह करे)[2]

स्थान का सम्मान

अल्लाह तआला ने अपने सम्मान के लिये कुछ स्थान विशेष कर लिये हैं जैसे काबा, अरफ़ात, मुज़दलिफ़ा, मिना, सफ़ा व मरवा, मक़ाम–ए–इब्राहीम और पूरी मस्जिद–ए–हराम, मक्का मुअज़्ज़मा बल्कि पूरा हरम, लोगों के दिलों में वहां पहुंचने का शौक़ डाल दिया है। लोग दूर–दूर से वहां पहुंचते हैं। तवाफ़ करते हैं। दिल के अरमान जी भर–भर कर निकालते हैं। कोई चौखट से लिपटा है। कोई ग़िलाफ़ पकड़े हुए इल्तिजा कर रहा है। कोई वहीं रात–दिन बैठा अल्लाह की याद में लगा है। कोई अदब से खड़ा उसको देख रहा है। सफ़ा मरवा का चक्कर काटा जा रहा है। ख़ास दिनों में मिना, अरफ़ात व मुज़दलिफ़ा में ठहरा जा रहा है। सारा काम अल्लाह के सम्मान के लिये और उसकी बन्दगी के तौर पर है। अल्लाह उनसे राज़ी है। इस तरह के काम किसी और के सम्मान के लिये करना शिर्क है। किसी की क़ब्र के पास उसकी रज़ा के लिये चिल्ला करना। किसी जगह को मुक़द्दस व पवित्र मानकर दूर दराज़ का सफ़र करके आना और मन्नतें पूरी करना या किसी क़ब्र या मकान का तवाफ़ करना और उसके आस–पास की जगह को पवित्र समझना। वहां शिकार न करना। पेड़ न काटना, घास न उखाड़ना और उस जैसे काम करना और उस पर दीन व दुनिया के

1. मकतूबात मुजद्दिद अलफ़े सानी रह0ः 35–41
2. मुस्लिमः 5240

फ़ायदे की उम्मीद बांधना यह सब शिर्क की बाते हैं क्योंकि ये सब काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये ख़ास हैं। किसी ग़ैर के लिये इन कामों का करना शिर्क है।

इसी तरह किसी चीज़ को मुक़द्दस व पवित्र समझकर उससे उम्मीदें बांधना और उसका सम्मान करना जैसे किसी के नाम की छड़ी, ताज़िया, ताज़िया का चबूतरा, अलम, इमाम क़ासिम और पीर दस्तगीर की मेंहदी, शहीद के नाम का ताक़, लोग इन चीज़ों का सम्मान करते हैं। वहां जाकर नज़रें अर्थात चढ़ावे चढ़ाते हैं और मन्नतें मानते हैं। उसकी क़सम खाते हैं। यह सब काम शिर्क के हैं।

अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इसकी ख़बर दी है कि लोग आख़िर दौर में इस तरह की चीज़ों को पूजने लगेंगे। तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत है:

﴿لاتقوم الساعة حتي تلحق قبائل
من امتي بالمشركين وحتي يعبدوا الأوثان﴾

(क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक कि मेरी उम्मत के कुछ क़बीले मुश्रिकों से मिल नहीं जायेंगे, यहां तक कि मेरी उम्मत के कुछ क़बीले अल्लाह के अलावा किसी और को पूजने लगेंगे)[1]

पूजने का मतलब यही है कि जो काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये ख़ास हैं और जो सम्मान केवल अल्लाह के लिये विशेष हैं वह दूसरों का किया जायेगा। यही इबादत में शिर्क है। जिसमें उम्मत का एक बड़ा वर्ग लगा हुआ है।

फ़रियाद करना और पनाह चाहना

यह दोनों काम यानि फ़रियाद करना और पनाह चाहना भी सिर्फ़ अल्लाह के लिये ख़ास हैं। हदीस में आता है कि:

﴿لا يستغاث بي انما يستغاث بالله عز وجل﴾

---

1. तिरमिज़ी : 2380

(मेरे सामने फ़रियाद नहीं की जा सकती, फ़रियाद तो सिर्फ़ अल्लाह ही से की जा सकती है)[1]

कुरआन मजीद में साफ़–साफ़ कहा गया है किः

﴿وَإِن يمسَسكَ اللهُ بِضُرٍّ فَلاَ كَاشِفَ لَهُ إِلاَّ هُوَ
وَإِن يرِدكَ بِخَيرٍ فَلاَ رَآدَّ لِفَضلِهِ يصِيبُ بِهِ مَن يشَاءُ مِن عِبَادِهِ﴾

''और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उसके सिवा उसको दूर करने वाला नहीं और अगर वह तुम्हारे साथ भलाई का इरादा कर ले तो उसके फ़ज़ल को कोई टाल नहीं सकता है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे अता करे।'' (सूरह यूनुसः 107)

यह भी इबादत में शिर्क का काम है कि आदमी अपने आप को किसी का बन्दा कहे। बन्दगी सिर्फ़ अल्लाह की है। बहुत से लोगों को देखा गया है कि वो इस तरह के जुम्ले ज़बान से अदा करते हैं किः

﴿نحن عباد محمد و الله رب محمد﴾

(हम मुहम्मद (स0अ0) के बन्दे हैं और अल्लाह मुहम्मद (स0अ0) का रब है)

यह खुला हुआ मुश्रिकाना जुम्ला है। सब अल्लाह के बन्दे हैं और सबका रब अल्लाह है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने ज़िन्दगी भर इसी की शिक्षा दी है, कहा गयाः

﴿إنما أنا عبد الله و رسوله فقولوا عبد الله و رسوله﴾

(मैं अल्लाह का बन्दा और रसूल हूं तो तुम अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल कहो)[2]

इसी तरह रसूलबख़्श, अब्दुलनबी, अब्दुर्रसूल, पीरबख़्श, हुसैनबख़्श, सालारबख़्श जैसे नाम रखना भी ठीक नहीं। इससे भी शिर्क की बू

---

1. कन्ज़ुल उम्मालः 29862
2. सही बुख़ारीः 3445

आती है। बख़्शिश सिर्फ़ अल्लाह का काम है। किसी दूसरे को उसमें किसी तरह से भी शरीक करना तौहीद के ख़िलाफ़ है।

प्रत्यक्ष उपासना

अल्लाह तआला ने अपने रसूल (स0अ0) पर आदेश उतारे। उन पर चलना और आप (स0अ0) की बात मानना फ़र्ज़ है और आप (स0अ0) की पैरवी को ज़रूरी जानना ईमान का बुनियादी हिस्सा है। यही अस्ल दीन है कि अल्लाह के हुक्म पर चला जाए और अल्लाह का हुक्म रसूलुल्लाह (स0अ0) के बताने ही से मालूम होता है। बस इस पर अमल करने में नजात है। अगर किसी दूसरे की प्रत्यक्ष उपासना के क़ाबिल समझा जाये और उसकी बात को रसूलुल्लाह (स0अ0) की बात पर मुक़द्दम किया जाये तो यह शिर्क है चाहे जितना ही बड़ा बुज़ुर्ग, वली, इमाम, मुजतहिद, या कुतुब हो, सब अल्लाह के बन्दे हैं और अल्लाह के रसूल (स0अ0) के पैरोकार हैं। नमाज़ अल्लाह ने फ़र्ज़ की। अब अगर कोई नमाज़ माफ़ कर दे तो ऐसे शख़्स की बात मानना और उसको पैरवी के क़ाबिल समझना शिर्क है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने नमाज़ माफ़ नहीं की और चारों भागों नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज को दीन का स्तम्भ बताया और कहा कि जिसने नमाज़ को ढा दिया माना उसने दीन की बुनियाद ढा दी फिर उसके बाद उसके विपरीत किसी दूसरे की बात मानकर नमाज़ को माफ़ समझना और शरीअत के एहकाम को ज़रूरी न समझना और रसूलुल्लाह (स0अ0) की बात छोड़कर पीर की बात से सनद पकड़ना, यह शिर्क का काम है। यहूद व नसारा ने यही किया। अल्लाह कहता हैः

﴿اتَّخَذُوا أَحبَارَهم وَرُهبَانَهم أَربَاباً مِّن دُونِ الله﴾

''उन्होंने अपने उलमा और अपने बुज़ुर्गों को अल्लाह के अलावा रब बना लिया।'' (सूरह तौबाः 31)

यह उलमा और अइम्मा–ए–कुरआन और हदीस को स्पष्ट रूप से खोल–खोलकर बयान करते हैं। कोई हुक्म अपनी तरफ़ से नहीं

देते। इसीलिए उनकी बात मानी जाती है। हक़ीक़त में इत्तेबा व तक़लीद उनकी नहीं होती बल्कि रसूलुल्लाह (स0अ0) की होती है।

और जो लोग अपनी तरफ़ से उसमें ठहराते हैं और उनका पूरा करना ज़रूरी जानते हैं, यह सब मुश्रिकाना काम है। सितारों से शगुन लेना, ग़ैरुल्लाह की क़समें खाना, ग़ैरुल्लाह की नज़र मानना, किसी के नाम पर जानवरों के नाक या कान काटना और उनकी शक्लें बिगाड़ना और किसी के नाम पर उनका छोड़ देना और उन पर सवारी को बेअदबी समझना और इनके अलावा भी ख़ास महीनों के ख़ास पकवान किसी के नाम पर पकाना या ख़ास लिबास किसी के नाम पर पहनना और उसको ज़रूरी समझना यह सब बहुत ही ग़लत और मुश्रिकाना काम है। शरीअत एक है जो अल्लाह के रसूल (स0अ0) के ज़रिये से उम्मत को मिली है। उस पर चलने को ज़रूरी जानना यह इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा है और अगर कोई यह समझता है कि शरीअत में तब्दीली मुमकिन है और कोई भी आकर इसमें तब्दीली कर सकता है तो यह खुला हुआ शिर्क है। इसलिए कि अल्लाह तआला ऐलान कर चुका है:

﴿اليومَ أكمَلتُ لكُم دِينَكُم وَأتمَمتُ عَلَيكُم نِعمَتِي وَرَضِيتُ لكُمُ الإسلامَ دِيناً﴾

"आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और दीन के तौर पर तुम्हारे लिये इस्लाम को पसंद कर लिया।" (सूरह माइदाः 3)

गुणों व विशेषताओं एकेश्वरवाद

जिस तरह अल्लाह को अकेले रब समझना और इबादत के कामों को उसके लिये ख़ास करना ज़रूरी है। जिसको तौहीद–ए–रुबूबियत कहते हैं। इसी तरह इसकी सिफ़ात में भी इसको एक व तन्हा समझना तौहीद के लिये ज़रूरी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿لَيسَ كَمِثلِهِ شَيء﴾

"कोई भी उसके जैसा नहीं।" (सूरह शूराः 11)

न अल्लाह की ज़ात में न उसके गुणों व विशेषताओं में, उसका ज्ञान, उसकी कुदरत, उसका फेरबदल और उसके अलावा उसकी सब विशेषताएं उसकी ज़ात की तरह असीमित हैं। उसकी ज़ात व गुणों के अलावा सब उसके प्राणी हैं। जिनकी अल्लाह ने हद क़ायम की है। इसी तरह उनके गुण भी सीमित हैं। अल्लाह तआला ने जिस प्राणी को जैसा बनाया उसके हिसाब से उसके अन्दर विशेषताएं रखी हैं। मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। उसके अन्दर जो विशेषताएं हैं वे दूसरे प्राणियों में नहीं। फिर इन्सानों में अल्लाह तआला ने समझ के एतबार से बड़ा अन्तर रखा है। इसी हिसाब से विशेषताएं भी बहुत अलग–अलग होती हैं। एक समझ जाहिल आदमी की होती है और एक समझ पढ़े–लिखे आदमी की होती है। लेकिन यह सब अल्लाह की दी हुई ज़ाहिरी चीज़ों पर होता है।

इल्म–ए–ग़ैब

अल्लाह ने जो हवास (इन्द्रियां) दिये हैं उनसे काम लेकर आदमी नतीजा निकालता है। किसी चीज़ को चखता है तो उसके स्वाद का फ़ैसला करता है। देखता है तो रंग समझ में आता है। सूंघता है तो बू की हक़ीक़त मालूम होती है। सुनता है तो आवाज़ बहुत कुछ नतीजा निकालती है। छूता है तो नर्मी–सख़्ती, चिकनेपन या खुदरेपन का एहसास करता है। लेकिन जो चीज़ उसके हवास से बाहर हो उसके बारे में वो कुछ नहीं कह सकता। न हक़ीक़त तक पहुंच सकता है। जो चीज़ समझ में न आ सके, वह ग़ैब कहलाती है। आदमी ख़ुद से किसी भी ग़ैब की बात को नहीं जान सकता है यद्यपि अल्लाह तआला अपने नबियों को बहुत सी बातें बताता है। बस जितनी बातें अल्लाह तआला उनको बता देता है, उतनी बातें वे जान लेते हैं। अपनी तरफ़ से वे एक बात भी नहीं बता सकते हैं।

आख़िरी नबी और नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0अ0) को भी अल्लाह ने ग़ैब की बहुत सी बातें बतायीं। जितनी बातें अल्लाह ने आप (स0अ0) को बता दीं, वे उनके इल्म में आ

गयीं। उसके अलावा जो ग़ैब की चीज़ें थीं वे रसूलुल्लाह (स0अ0) के लिये भी ग़ैब रहीं और उनका इल्म आप (स0अ0) को नहीं था। बहुत सी आयतों और हदीसों में इसकी व्याख्या आयी है, अल्लाह तआला कहता है:

﴿قُل لَّا يعلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرضِ الغَيبَ إِلَّا اللهَ وَمَا يشعُرُونَ أَيانَ يبعَثُونَ﴾

"कह दीजिये कि आसमानों और ज़मीन में जो लोग भी हैं वे ग़ैब नहीं जानते सिवाए अल्लाह के और वे यह भी नहीं जानते कि वे कब उठाए जायेगें।" (सूरह नमल: 10)

दूसरी आयत में है:

﴿إِنَّ اللهَ عِندَهُ عِلمُ السَّاعَةِ وَينَزِّلُ الغَيثَ وَيعلَمُ مَا فِي الأَرحَامِ وَمَا تَدرِي نَفسٌ مَّاذَا تَكسِبُ غَداً وَمَا تَدرِي نَفسٌ بِأَيِّ أَرضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ﴾

"यक़ीनन अल्लाह ही के पास क़यामत का इल्म है और वही बारिश करता है और रहम (भ्रूण) के अन्दर जो कुछ है उसको जानता है और कोई नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि किस जगह उसकी मौत होगी निसंदेह अल्लाह ख़ूब जानता पूरी ख़बर रखता है।" (सूरह लुक़मान: 34)

और कहा:

﴿وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الغَيبِ لاَ يعلَمُهَا إِلاَّ هُوَ﴾

"और ग़ैब की कुन्जिया उसी के पास हैं, वही उनको जानता है।"

(सूरह ईनाम: 59)

यानि ग़ैब की सब बातें अल्लाह के इल्म में हैं। क़यामत जिसका आना यक़ीनी है। उसके वक़्त की भी किसी को जानकारी नहीं। न नबी को, न फ़रिश्ते को, न किसी वली को, न ग़ौस व क़ुतुब को। सरवर–ए–दो आलम (स0अ0) से उसका वक़्त पूछा गया तो आप (स0अ0) ने कहा कि इसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है और आयत–ए–शरीफ़ा में है:

﴿يسألونَکَ عَنِ السَّاعَةِ أيانَ مُرساها قُل إنَّمَا عِلمُها عِندَ رَبِّي لاَيجَلِّيها لِوَقتِها إِلاَّ هوَ ثَقُلَت فِي السَّمَاوَاتِ وَالأرضِ لاتَأتِيكُم إلاَّ بَغتَةً يسألونَکَ كَأنَّكَ حَفِي عَنها قُل إنَّمَا عِلمُها عِندَ اللهِ وَلَـكِنَّ أكثَرَ النَّاسِ لاَيعلَمُونَ﴾

“वे आपसे क़यामत के बारे में पूछते रहते हैं कि कब इसके बरपा होने का वक़्त है। कह दीजिये कि इसका इल्म तो मेरे रब के पास है। वही अपने वक़्त पर इसको ज़ाहिर कर देगा। आसमानों और ज़मीन पर वह भारी है। अचानक ही वह तुम पर आ जायेगी। वह आपसे ऐसा पूछते हैं कि मानों आप उसकी कुरेद में हैं। कह दीजिए कि इसका पता अल्लाह ही को है। लेकिन अक्सर लोग बेख़बर हैं।” (सूरह आराफ़ः 187)

इसी तरह और जो ग़ैब की बातें हैं उनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। जीत हो या हार, सेहत हो या बीमारी, मरना–जीना हो, अमीरी–ग़रीबी हो और जो भी ग़ैब की बातें है उनको सिर्फ़ अल्लाह जानता है। बदर की जंग के मौक़े पर रसूलुल्लाह (स0अ0) पर अजीब कैफ़ियत तारी थी। आप (स0अ0) को मालूम नहीं था कि आगे क्या होने वाला है। आप (स0अ0) रो–रोकर दुआएं कर रहे थे। फिर अल्लाह ने उनको बताया कि आप ग़म न करें अल्लाह फ़रिश्तों से उनकी मदद करेगा और जीत होगी।

हज़रत आयशा (रज़ि0) पर इल्ज़ाम लगाया गया। आप (स0अ0) के कई दिन परेशानी में बीते। खोज करते रहे मगर कोई खुली बात सामने नहीं आयी। आख़िर में आयत नाज़िल हुई और उसमें हज़रत आयशा (रज़ि0) की पवित्रता प्रामाणित की गयी और आप (स0अ0) की चिन्ता दूर हुई।

यह आस्था होना चाहिये कि ग़ैब की कुन्जियां सिर्फ़ अल्लाह के पास हैं वो जिसको चाहता है जितना चाहता है देता है। बस जो कोई यह दावा करे कि मेरे पास ऐसा इल्म है कि जब चाहूं ग़ैब की बातें मालूम कर लूं और आगे की बातों को मालूम करना मेरे क़ाबू

में है। वह बड़ा झूठा है और जो किसी नबी या वली के बारे में ये अक़ीदा रखे। वह शिर्क में पड़ जाता है इसलिये कि यह सिर्फ़ अल्लाह की विशेषता है कोई दूसरा इसमें साझीदार नहीं।

कुरआन मजीद में ख़ुद रसूलुल्लाह (स0अ0) से कहलवाया गया:

﴿قُل لاَّ أَملِكُ لِنَفسِي نَفعاً وَلاَ ضَرّاً إِلاَّ مَا شَاءَ اللهُ وَلَو كُنتُ أَعلَمُ الغَيبَ لاَستَكثَرتُ مِنَ الخَيرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِن أَنَا إِلاَّ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَومٍ يُؤمِنُونَ﴾

"आप बता दीजिये कि मैं अपने लिये कुछ भी फ़ायदे नुक़सान का मालिक नहीं सिवाए उसके जो अल्लाह चाहे और अगर मैं ग़ैब की बात जानता तो बहुत कुछ अच्छी–अच्छी चीज़ें जमा कर लेता और मुझको तकलीफ़ भी न पहुचंती। तो मैं उन लोगों के लिये डराने वाला और बशारत देने वाला हूं जो मानते हैं।"

(सूरह आराफ़: 188)

यह बात आप (स0अ0) से कहलवायी जा रही है जो सब नबियों के सरदार हैं। दुनिया में जिस किसी को बुज़ुर्गी मिली हुई वह सब आप (स0अ0) के ज़रिये हासिल हुई। आप (स0अ0) कहते हैं कि मैं ख़ुद अपने फ़ायदे–नुक़सान का मालिक नहीं तो दूसरों का क्या कर सकूं और न ग़ैब जानता हूं अगर जानता तो पहले हर काम का अन्जाम मालूम कर लेता। अच्छा होता तो करता, और अगर बुरा अन्जाम होता तो हाथ रोक लेता। यह किसी कि अख़्तियार में नहीं, जो जब चाहे मालूम करे और जिसको चाहे हिदायत दे यह अल्लाह का काम है। एक आयत में अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने पैग़म्बर से कहा:

﴿إِنَّكَ لاَ تَهدِي مَن أَحبَبتَ وَلَكِنَّ اللهَ يَهدِي مَن يَشَاءُ﴾

"आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते। हां अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।" (अलक़सस: 56)

अब नीचे कुछ सही हदीसें नक़ल की जाती हैं जिनमें साफ़ तौर से रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है:

﴿عن الربيع بنت مسعود بن عفراء قالت جاء النبي ﷺ فدخل حين بني عليّ
فجلس علي فراشي كمجلسك مني فجعلت جوريات لنا يضربن بالدف
ويندبن من قتل من آبائي يوم بدر إذ قالت إحداهن: وفينا نبيّ يعلم ما في غد
فقال: دعي هذه وقولي بالذي كنتِ تقولين﴾

(हज़रत रबीअ बिन्त सऊद बिन उफ़रा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) जब मेरी शादी हुई थी उस वक़्त तशरीफ़ लाये और जिस तरह तुम बैठे हो उस तरह आप (स0अ0) बैठे थे तो कुछ बच्चियां दफ़ बजा–बजा कर उन लोगों का ज़िक्र करने लगीं जो बदर में शहीद हुए थे। तो उनमें से एक बोली कि हममें एक ऐसे नबी हैं जो कल की बात जानते हैं। आप (स0अ0) ने कहा यह बात मत कहो और जो तुम कर रहीं थी वह कहो) [1]

बुख़ारी की दूसरी रिवायत में हैः हज़रत आयशा (रज़ि0) कहती हैं कि अगर तुममें से कोई कहे कि रसूलुल्लाह (स0अ0) उन पांच चीज़ों को जानते हैं जिनके बारे में अल्लाह कहता हैः

﴿إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾

"तो बड़ा बोहतान बांधा।" (सूरह लुक़मानः 34)

कुदरत व अख़्तियार

अख़्तियार व कुदरत सिर्फ़ अल्लाह की विशेषता है। वह जो चाहे करे उसको सब अख़्तियार है। उसके आगे किसी को कोई अख़्तियार नहीं। जिस किसी को भी अख़्तियार है वो उसी का दिया हुआ है और सीमित है। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में ऐलान फ़रमा दियाः

﴿أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ﴾

"कान खोल कर सुन लो उसी का काम पैदा करना और उसी का काम इन्तिज़ाम चलाना।" (सूरह आराफ़ः 54)

ऐसा नहीं है कि वो पैदा करके मुक्त हो गया और उसने व्यवस्था दूसरों के हाथ में दे दी हो और न उसकी मिसाल बादशाहों

---

1. बुख़ारी : 5147

की है कि वो अपने कामों के लिये वज़ीर रखते हैं और उनको अख़्तियार दिये रहते हैं। जैसा कि मक्का के मुश्रिको का ख़्याल था अलग–अलग देवी–देवताओं के बारे में वे यही विचार रखते थे कि अल्लाह ने उनको पूरा अख़्तियार दे दिया है। कोई बारिश का मालिक है, कोई औलाद देने का, कोई रोज़ी का, इसीलिये वे उन देवी–देवताओं को पुकारते थे मगर सबसे बड़ा अल्लाह को समझते थे। फिर भी उनको मुश्रिक ही बताया गया और आप (स0अ0) को इसीलिये भेजा गया कि आप (स0अ0) उनको शिर्क के अंधेरे से निकालें और यह यक़ीन पैदा करें कि सब कुछ अल्लाह के अख़्तियार में है। सूरह मोमिनून में मक्का के मुश्रिकों के बारे में कहा जा रहा है:

﴿قُل مَن بِيدِه مَلَكُوتُ كُلِّ شَيءٍ وَهوَ يجِيرُ وَلَا
يجَارُ عَلَيهِ إِن كُنتُم تَعلَمُونَ سَيقُولُونَ لِلّهِ قُل فَأَنّي تُسحَرُونَ﴾

"पूछिये हर चीज़ की बादशाहत किसके हाथ में है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता (बताओ) अगर तुम जानते हो। वे फ़ौरन यही कहेंगे कि अल्लाह के हाथ में। आप कह दीजिये कि तो कहाँ का जादू तुम पर चल जाता है।" (मोमिनूनः 88–89)

वे बुनियादी तौर पर मानते थे कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है मगर यह भी अक़ीदा रखते थे कि अल्लाह ने यह अख़्तियार दूसरों को भी दे दिया है। इसीलिये आप (स0अ0) भेजे गये ताकि उनके इस मुश्रिकाना अक़ीदे को दूर करें और ये बता दें कि सब कुछ अल्लाह की कुदरत और उसके अख़्तियार में है। उसने किसी को यह अख़्तियार नहीं दिया कि वह जो चाहे कर ले। इसकी आख़िरी मिसाल ख़ुद आप (स0अ0) की ज़ात है जो नबियों के सरदार हैं। आख़िरी रसूल हैं। अल्लाह के महबूब हैं। मगर आप (स0अ0) को सम्बोधित करके कहा जा रहा है:

﴿إِنَّكَ لَا تَهدِي مَن أَحبَبتَ وَلَكِنَّ اللّهَ يهدِي مَن يشَاءُ﴾

“आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते। हाँ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।” (क़ससः 56)

इससे बात साफ़ हो गयी कि अल्लाह के दरबार में किसी को कोई अधिकार नहीं। कुरआन मजीद में आप (स0अ0) से कहलवाया जा रहा हैः

﴿قُل إِنِّي لَا أَملِكُ لَكُم ضَرّاً وَلَا رَشَداً ○
قُل إِنِّي لَن يجِيرَنِي مِنَ اللهِ أَحَدٌ وَلَن أَجِدَ مِن دُونِهِ مُلتَحَداً﴾

“कह दीजिये कि मैं तुम्हारे लिये ज़रा भी नुक़सान का मालिक नहीं हूं और न ज़रा भी भलाई का। कह दीजिए कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता और न उसके सिवा मैं कहीं भी पनाह की जगह पाता हूँ।” (अलजिन्नः 21—22)

कायनात के सारे प्राणियों में सबसे ऊँचा स्थान रसूलुल्लाह (स0अ0) का है मगर रसूलुल्लाह (स0अ0) को आदेश दिया जा रहा है कि उम्मत से साफ़ कह दें कि मैं तुम्हारे फ़ायदे—नुक़सान का मालिक नहीं। कहीं तुम धोखे में न पड़ जाना कि हम जो चाहें करें हमारे नबी हमको बचा लेंगे। मैं ख़ुद अपने फ़ायदे—नुक़सान का मालिक नहीं। सब अल्लाह करता है।

सही रिवायतों में है कि जब ये आयत

﴿وأنذِر عَشِيرَتَكَ الاَقرَبِينَ﴾

उतरी कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये तो आप (स0अ0) ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया, आम सभा भी की और ख़ास तौर पर भी कहाः ऐ काब बिन लवी के क़बीले वालों! अपने आप को जहन्नम की आग से बचाने का उपाय करो। मैं तुम्हारे लिये अल्लाह के यहां कुछ अधिकार नहीं रखता। ऐ मरवा बिन काब के क़बीले वालो! तुम भी अपने आप को आग से बचाने का उपाय करो। मैं अल्लाह से तुम्हारे लिये कोई अख़्तियार नहीं रखता। फिर आप (स0अ0) ने इसी तरह बनू अब्दुशशम्स को सम्बोधित किया, फिर बनू अब्दे मुनाफ़ को,

फिर बनू हाशिम को, फिर बनू अब्दुल मुत्तलिब को सम्बोधित किया। यहाँ तक कहाः

﴿يا فاطمه انقذي نفسک من النار﴾[1]

और एक दूसरी जगह ये शब्द भी आये हैं:

﴿سليني ما شئت من مالي لا أغني عنک من الله شيئاً﴾

(ऐ फ़ात्मा अपने आप को जहन्नम की आग से बचाओ, मेरे माल में से जो हो मुझसे मांगो लेकिन मैं तुम्हारे लिये अल्लाह के यहाँ कोई अख़्तियार नहीं रखता)[2]

इस लम्बी हदीस से बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है कि जब आप (स0अ0) ये फ़रमा रहे हैं जबकि आप (स0अ0) को अल्लाह ने वह दिया जो किसी को नहीं दिया और रसूलुल्लाह (स0अ0) अपनी सबसे चहेती बेटी के बारे में यह कह रहे हैं तो फिर कोई दूसरा कैसे भरोसा करके बैठ सकता है कि हम जो चाहे करें अल्लाह के रसूल हमको बख़्शवा देंगे। यक़ीनन आप (स0अ0) को शफ़ाअत–ए–कुबरा का हक़ हासिल होगा। मगर उसकी हक़ीक़त समझ लेनी चाहिये जिसको ख़ुद अल्लाह ने कुरआन मजीद में बयान कर दिया है कि सिफ़ारिश अपने अख़्तियार से नहीं होगी बल्कि अल्लाह तआला इजाज़त देगा तो होगीं अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿مَن ذَا الَّذِي يشفَعُ عِندَه إلاَّ بِإذنِه﴾

"कौन है जो बग़ैर उसकी इजाज़त के उसके पास सिफ़ारिश कर सके।" (सूरह बक़रहः 255)

ऐसा नहीं है कि जैसे कोई बादशाह न चाहते हुए सिफ़ारिश कुबूल करता है। बीवी का दबाव होता है, बच्चों का होता है, ख़ास–ख़ास दोस्तों का होता है, बादशाह न चाहते हुए भी इनकी सिफ़ारिश कुबूल करता है। अल्लाह की ज़ात उससे बहुत बुलन्द है। हाँ इसकी मिसाल इस तरह दी जा सकती है कि किसी ने कोई

---

1. मुस्लिम : 522
2. सही बुख़ारी : 2753

जुर्म किया, बादशाह खुद भी चाहता है कि माफ़ कर दे लेकिन वो अपने ख़ास लोगों से उनका दर्जा बढ़ाने के लिये या किसी मसलहत से सिफ़ारिश कराना है फिर सिफ़ारिश कुबूल करना और माफ़ करना है। अल्लाह तआला भी अपने जिन बन्दों को बख़्शना चाहेगा उनकी सिफ़ारिश करवायेगा और शफ़ाअत का ये दरवाज़ा सबसे बढ़कर आप (स0अ0) के लिये खुलेगा। आप (स0अ0) तमाम इन्सानियत की शफ़आत उस वक़्त फ़रमायेगे जब जन्नत व दोज़ख़ का फ़ैसला हो चुकेगा और जन्नत वाले जन्नत में जाने का इन्तिज़ार करेंगे और इजाज़त का इन्तिज़ार होगा तो वे एक–एक नबी के पास जायेंगे। सब ही माफ़ी चाहेंगे आख़िर में आप (स0अ0) के पास आयेंगे और उनकी सिफ़ारिश से सब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे। ये शफ़ाअत–ए–कुबरा कहलाती है। इसकी और व्याख्या इंशाअल्लाह रिसालत के अध्याय में बयान की जायेगी।

मालूम हुआ कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। न रोज़ी देना किसी के अख़्तियार में है, न पानी बरसारा, न औलाद देना, न फ़ायदा–नुक़सान पहुंचाना और यह जो कुछ लोग नबियों, बुज़ुर्गों के बारे में यह विचार रखते हैं कि उनको क़ुदरत तो है मगर वो अल्लाह के सामने अपनी क़ुदरत को ज़ाहिर नहीं करते और इसको अदब के ख़िलाफ़ समझते हैं। अगर चाहें तो एकदम उलट–पुलट कर दें मगर अदब में ऐसा नहीं करते, ये सब मुश्रिकाना विचार है, अल्लाह फ़रमाता है:

﴿وَيعبُدُونَ مِن دُونِ اللہِ مَا لاَ يملِکُ لَهم
رِزقاً مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرضِ شَيئاً وَّلاَ يستَطِيعُونَ﴾

"और अल्लाह के अलावा वे ऐसों को पूजते हैं जो आसमानों और ज़मीन में उसके रिज़्क़ के कुछ भी मालिक नहीं और न वह उनके बस में है।" (सूरह नहलः 73)

एक जगह आप (स0अ0) के वास्ते से पूरी उम्मत को कहा जा रहा है:

﴿وَلَاتَدعُ مِن دُونِ اللّٰہِ مَا لَا یَنفَعُکَ وَلَا یَضُرُّکَ فَإِن فَعَلتَ فَإِنَّکَ إِذاً مِّنَ الظَّالِمِینَ﴾

"और अल्लाह के अलावा किसी ऐसे को मत पुकारना जो न तुम्हें फ़ायदा पहुंचा सके, न नुक़सान पहुंचा सके बस अगर आपने ऐसा किया तो ज़रूर आप नाइन्साफ़ों में हो जायेंगे।" (यूनुसः 106)

ऐसे ज़बरदस्त ज़ात वाले क़ादिर–ए–मुतलक़ के होते हुए किसी और को पुकारना कैसी नाइन्साफ़ी और बेवकूफ़ी है। पीरान–ए–पीर शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह0) ने इसको एक मिसाल से बड़ी अच्छी तरह समझाया है और जो लोग मुसीबतों को दूर करने या किसी तरह का फ़ायदा पाने के लिये अल्लाह के अलावा किसी और का सहारा लेते हैं उनकी मूर्खता का नक़्शा खींच दिया है। वो कहते हैंः

"सभी प्राणियों को एक ऐसा आदमी समझो जिसके हाथ एक बहुत महान व बड़े साम्राज्य के राजा ने जिसका राज्य महान है, उसकी ताक़त का अन्दाज़ा नहीं है, बांध दिये हों फिर उस बादशाह ने उस आदमी के गले में फन्दा डाल दिया है और उसके पैर भी बांध दिये, उसके बाद सनोबर के एक ऐसे पेड़ पर लटका दिया है जो ऐसी नदी के किनारे पर है जिसकी मौजें ज़बरदस्त, चौड़ाई बहुत, गहराई बेपनाह, जिसका बहाव बहुत तेज़ है, उसके बाद बादशाह खुद एक ऐसी कुर्सी पर बैठ गया है जो बड़ी शानदार और बहुत बुलन्द है इतनी कि उस तक पहुंचने का इरादा करना और पहुचंना कठिन है, उस बादशाह ने अपने पहलू में तीरों, भालों, बरछों, और हर तरह के हथियारों का इतना बड़ा भण्डार कर लिया है कि उसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता है। अब जो व्यक्ति इस दृश्य को देखे, क्या उसके लिये यह उचित है कि बादशाह की तरफ़ देखने के बजाए, उससे डरने और उम्मीद लगाने के बजाए, उस सूली पर लटके हुए शख़्स से डरे और उससे उम्मीद लगाये, जो शख़्स ऐसा करे क्या वो हर अक़्ल वाले के निकट बेअक़्ल, मजनू और जानवर कहलाने योग्य नहीं।" [1]

---

1. फुतूहुल ग़ैब, सत्तरवां हिस्सा

एक जगह इरशाद फ़रमाता हैः

﴿قُلِ ادعُوا الَّذِينَ زَعَمتُم مِّن دُونِ اللهِ لَا يملِكُونَ مِثقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الأَرضِ وَمَا لَهُم فِيهِمَا مِن شِركٍ وَمَا لَهُ مِنهُم مِّن ظَهِيرٍ ○ وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَن أَذِنَ لَهُ حَتَّى إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِم قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُم قَالُوا الحَقَّ وَهُوَ العَلِيُّ الكَبِيرُ﴾

''कह दीजिए कि अल्लाह के अलावा तुम जिसका दावा करता हो उनको पुकारो। वे आसमान और ज़मीन में ज़र्रा बराबर किसी चीज़ के मालिक नहीं और न उनका उन दोनों में कोई साझा है और न उनमें कोई उसका मददगार है। और उसके पास उसी की सिफ़ारिश काम आयेगी जिसके लिये उसने इजाज़त दी हो। यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो वह कहते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या कहा, वे जवाब देते हैं कि सच ही कहा और वह बुलन्द है बड़ा है।'' (सूरह सबाः 22–23)

एक हदीस में रसूलुल्लाह (स0अ0) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि0) को सम्बोधित करके तौहीद की वास्तविकता का वर्णन किया और स्पष्ट किया कि किसी को अधिकार नहीं कि किसी को अल्लाह के हुक्म के बिना नफ़ा व नुक़सान पहुंचा सके। आपने बतायाः

﴿وعن ابن عباس رضي الله عنهما قال: كنت خلف النبي يوماً فقال: يا غلام! إني أعلمك كلمات: احفظ الله يحفظك احفظ الله تجده تجاهك إذا سألت فاسأل الله وإذا استعنت فاستعن بالله واعلم أن الأمة لو اجتمعت علي أن ينفعوك بشيئ لم ينفعوك إلا بشيئ قد كتبه الله تعالي لك وإن اجتمعت علي أن يضروك بشيئ لم يضروك بشيئ إلا قد كتبه الله عليك رفعت الأقلام وجفت الصحف﴾

(ऐ बच्चे! अल्लाह को याद रखो और अल्लाह तुम्हें याद रखेगा। अल्लाह को याद रखो तुम उसको अपने सामने पाओगे। जब कुछ मांगो अल्लाह ही से मांगो और जब मदद चाहो तो अल्लाह ही से मदद चाहो और जान लो कि अगर पूरी उम्मत इस बात पर एक हो जाए कि तुम्हें कुछ फ़ायदा पहुंचा दे तो उतना ही फ़ायदा पहुंचा

सकती है जितना अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है और अगर पूरी उम्मत इस बात पर एक हो जाए कि तुम्हें कुछ भी नुक़सान पहुंचा दे तो उतना ही नुक़सान पहुंचा सकती है जितना अल्लाह ने लिख दिया है। क़लम उठा लिये गये और पन्ने सूख चुके)[1]

इस हदीस में बड़ी स्पष्टता के साथ यह बात बता दी गयी है कि नफ़ा व नुक़सान का अख़्तियार किसी को नहीं। यह सब कुदरत अल्लाह ही के पास है, वह जो चाहे करे।

इन आयतों और हदीसों से यह बात खुलकर सामने आ गयी कि सब अख़्तियार व अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है। यह अधिकार किसी को भी नहीं कि वह जो चाहे कर डाले। अगर कोई अपनी ज़रूरत अल्लाह को छोड़कर किसी और के सामने रखता है। नबी, वली, पीर, इमाम, बुज़ुर्ग किसी से मांगता है ते यह शिर्क है। अलबत्ता दुआ करना बेहतर है। मगर यह समझना कि उनको पूरा अख़्तियार है। उनकी दुआ कुबूल हो जाएगी। अल्लाह उनकी दुआ रद्द कर ही नहीं सकता। यह ख़्याल मुश्रिकाना हैं। सब अल्लाह के बन्दे हैं। अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते हैं। हां! अल्लाह अपने ख़ास बन्दों की दुआएं अक्सर कुबूल करता है। इसी तरह यह मुश्रिकाना जुम्ला अच्छे–अच्छे लोगों की ज़बान से निकल जाता है कि हज़रत तसर्रुफ़ फ़रमा दें तो काम हो जाएगा। तसर्रुफ़ अर्थात तक़दीर में फेरबदल करना अल्लाह का हक़ है। उसकी इजाज़त के बिना कोई कुछ नहीं कर सकता। किसी के बारे में यह सोचना कि जो चाहेंगे हो जाएगा मुश्रिकाना विचार है और तौहीद की आस्था के विपरीत है।

अल्लाह को एक मानने तथा रब मानने के साथ अल्लाह की विशेषताओं में भी तौहीद ज़रूरी है। इसके बिना तौहीद का अक़ीदा अपूर्ण है।

---

1. सुनन तिरमिज़ीः 2516

फ़रिश्तों पर ईमान

अल्लाह पर ईमान के बाद कुरआन मजीद में बहुत सी जगहों पर फ़रिश्तों पर ईमान का ज़िक्र आता है।

अल्लाह तआला कहता हैः

﴿كُلٌّ آمَنَ بِاللهِ وَمَلآئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ﴾

"सबके सब अल्लाह पर ईमान लाये और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर।" (सूरह बक़रहः 285)

फ़रिश्ते अल्लाह की ऐसे प्राणी हैं जो न खाते हैं, न पीते हैं और न उनकी कोई मांग होती है और न उनको उन चीज़ों की ज़रूरत है। अल्लाह तआला ने उनको केवल अपनी इबादत के लिये पैदा किया है। उनका काम सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म को पूरा करना है। उनकी संख्या की जानकारी सिर्फ़ अल्लाह को है।

इनमें वे फ़रिश्ते भी हैं जिनको "हिफ़ज़ह" कहा गया है। जिनका काम ही इन्सानों की हिफ़ाज़त है। दुनिया में वे बड़ी संख्या में हैंः

﴿وَيرسِلُ عَلَيكُم حَفَظَةً﴾

"और वह तुम पर हिफ़ाज़त के फ़रिश्ते भेजता है।"

(सूरह इनामः 61)

इनमें *"किरामन कातिबीन"* भी हैं, जिनका काम बन्दों के अच्छे–बुरे कर्मों को सुरक्षित करना हैः

﴿وَإِنَّ عَلَيكُم لَحَافِظِين ○ كِرَاماً كَاتِبِينَ ○ يعلَمُونَ مَاتَفعَلُونَ﴾

"जबकि तुमपर निगेहबान तय किया गया है, इज़्ज़तदार लिखने वाले, वह सब कुछ जानते हैं जो तुम करते हो।"(इन्फ़ितारः 10–12)

﴿مَا يلفِظُ مِن قَولٍ إِلَّا لَدَيهِ رَقِيبٌ عَتِيد﴾

"जो बात भी उसके मुंह से निकलती है तो उसके पास ही एक मुस्तैद निगरां मौजूद रहता है।" (सूरह क़ाफ़: 18)

इनमें मुनकर नकीर भी हैं जो क़ब्र में आकर सवाल करेंगे। अबूदाऊद की रिवायत में आता है:

﴿ويأتيه ملكان فيجلسانه فيقولان له: من ربك؟... الخ﴾

(यानि उस व्यक्ति के पास दो फ़रिश्ते आते हैं जो उसको बिठाते हैं और उससे मालूम करते हैं कि तेरा रब कौन है) [1]

यद्यपि बैहिक़ी की रिवायत में स्पष्टता के साथ इन्हीं दोनों फ़रिश्तों को *"मुनकर नकीर"* के नाम से वर्णित किया गया है:

﴿فيأتيه منكر ونكير الخ﴾

(यानि उस शख़्स के पास मुनकर व नकीर आते हैं) [2]

इनमें वे फ़रिश्ते भी हैं जो जन्नत–दोज़ख़ पर मामूर हैं। उनमें जो जन्नत के फ़रिश्तों के सरदार हैं, उनका नाम हदीसों में "रिज़वान" बताया गया है:

﴿يا رضوان افتح أبواب الجنان﴾

(ऐ रिज़वान! जन्नत के दरवाज़ों को खोल दो) [3]

और जहन्नम के दारोग़ा का नाम "मालिक" है:

﴿وَنَادَوا يَا مَالِكُ لِيَقضِ عَلَينَا رَبُّكَ﴾

(और वे आवाज़ देंगे कि ऐ मालिक (जहन्नम का दारोग़ा) तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे)

इनमें वे महान फ़रिश्ते भी हैं जिनको "हमलतुल अर्श" कहा गया है। यह अल्लाह के आसमान को थामे हुए हैं। सब ही अल्लाह की पवित्रता व प्रशंसा में लगे रहते हैं:

---

1. सुनन अबी दाऊद : 4755
2. शोएबुल ईमान लिलबैहिक़ी : 395
3. शोएबुल ईमान लिलबैहिक़ी : 3695

﴿وَتَرَي الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِن حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِم﴾

''और आप देखेंगे कि फ़रिश्ते अर्श को हर तरफ़ से घेरे हुए होंगे अपने रब के साथ हम्द में मशगूल होंगे।'' (सूरह ज़ुमरः 75)

﴿الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا﴾

''जो फ़रिश्ते अर्श को उठाए हुए हैं जो उसके आस–पास हैं वह अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह में व्यस्त हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं।'' (सूरह ग़ाफ़िरः 7)

﴿وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِم
وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَن فِي الْأَرْضِ أَلَا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ﴾

''और फ़रिश्ते अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते रहते हैं और ज़मीनवालों के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। सुन लो अल्लाह ही है जो बहुत बख़्शने वाला निहायत रहम करने वाला है।'' (सूरह शूराः 5)

यहां यह बात भी साफ़ कर दी गई कि मग़्फ़िरत करने वाली ज़ात अल्लाह ही की है। फ़रिश्ते सिर्फ़ दुआ करते हैं। बख़्शिश उनके अख़्तियार में नहीं है।

इन सभी फ़रिश्तों पर चार फ़रिश्ते बहुत ही महान हैं। उनमें भी दो का नाम क़ुरआन मजीद में आया है। एक ''हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम)'' यह तमाम फ़रिश्तों के सरदार हैं। उनका काम अल्लाह के रसूलों के पास अल्लाह की तरफ़ से वह्य (ईशवाणी) लाना और संदेश पहुंचाना है। दूसरे जिस फ़रिश्ते का नाम बाक़ायदा क़ुरआन मजीद में मौजूद है वह हज़रत मीकाईल (अलैहिस्सलाम) हैं। जिनके ज़िम्मे रोज़ी का बंटवारा और बारिश है। उनके अलावा दो फ़रिश्ते और हैं, जिनका नाम बार–बार हदीसों में आता है। एक हज़रत इज़्राईल (अलैहिस्सलाम) जिनका काम रूह क़ब्ज़ करना है, और दूसरा ''हज़रत इस्राफ़ील (अलैहिस्सलाम)'' का जो सूर मुंह में

लिये हुए क़यामत के इन्तिज़ार में हैं। यह सब फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म के पाबन्द हैं। अल्लाह ने उनके अन्दर नाफ़रमानी की सलाहियत नहीं रखी है।

इस्लाम की शिक्षा उन फ़रिश्तों के सिलसिले में यही है कि उनको मासूम समझा जाए। अलबत्ता उनकी मासूमियत उनकी स्वयं की नहीं, बल्कि अल्लाह की दी है। यह अल्लाह के हुक्म से बाल बराबर भी नहीं हट सकते हैं। दुनिया की क़ौमें फ़रिश्तों के सिलसिले में भी गुमराही का शिकार हुईं। बहुतों ने उनको ख़ुदाई में शरीक समझ लिया। मक्का के मुश्रिकों ने उनको ख़ुदा की बेटियां बनाया। अल्लाह तआला उनको आर दिलाते हुए कहता है कि ख़ुद तो बेटी को अपमान का कारण समझते हैं और ख़ुदा के लिये उनको बेटियां ही मिलीं। कहा जाता है:

﴿أَلِرَبِّكَ البَنَاتُ وَلَهُمُ البَنُون ○ أم خَلَقنَا المَلَائِكَةَ إِنَاثاً وَهم شَاهِدُون ○
أَلَا إِنَّهم مِّن إِفكِهم لَيَقُولُون ○ وَلَدَ اللهُ وَإِنَّهم لَكَاذِبُونَ ○
أَصطَفَي البَنَاتِ عَلَي البَنِينَ ○ مَا لَكُم كَيفَ تَحكُمُون﴾

''उनके रब के लिये बेटियां हैं और उनके लिये बेटे हैं या हमने फ़रिश्तों को औरत बनाया और वे देख रहे थे। अच्छी तरह सुन लो वे जी में गढ़—गढ़ कर कहते हैं कि अल्लाह के यहां औलाद हुई और यक़ीनन वे झूठे ही हैं। क्या उसने बेटों की बनिस्बत बेटियां अख़्तियार कीं। तुम्हें हुआ क्या है। तुम कैसे फ़ैसले करते हो।''

(सूरह इनामः 149—154)

एक जगह कहाः

﴿أَفَأَصفَاكُم رَبُّكُم بِالبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ المَلآئِكَةِ إِنَاثاً إِنَّكُم لَتَقُولُونَ قَولاً عَظِيما﴾

''क्या फिर तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिये और ख़ुद फ़रिश्तों को बेटियां बना लिया? यक़ीनन तुम बहुत बड़ी बात कहते हो।'' (सूरह बनी इस्राईलः 40)

और कहाः

﴿وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ﴾

''और उन्होंने फ़रिश्तों को जो रहमान के बन्दे हैं औरतें क़रार दिया। क्या वह उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे।''

(सूरह ज़ुख़रुफ़ः 19)

सूरह अम्बिया में बड़ी सराहत के साथ फ़रमाया गयाः

﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبحَانَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ○ لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ○ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَى وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ○ وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِّن دُونِهِ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ﴾

''और वह कहते हैं कि रहमान ने बेटा तजवीज़ कर लिया। उसकी ज़ात पाक है। हां, (वह उसके) बाइज़्ज़त बन्दे हैं। वह उससे आगे बढ़कर बोल नहीं सकते और उसके हुक्म के मुताबिक़ ही अमल करते हैं। उनके आगे–पीछे जो कुछ है वह सब जानता है और वह किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते मगर हां जिसके लिये उसकी मर्ज़ी हो और वह उसके डर से कांपते रहते हैं और उनमें जो यह कहे कि उसके सिवा मैं माबूद हूं तो उसको हम जहन्नम की सज़ा देंगे। हम ज़ालिमों को ऐसे ही सज़ा दिया करते हैं।''

(सूरह अम्बियाः 26–29)

इसी तरह यहूद व नसारा और दुनिया की बहुत सी दूसरी क़ौमें भी फ़रिश्तों के बारे में इन्तिहा पसंदी का शिकार थीं और उन्हें ख़ुदाई में शरीक करती थीं। इस्लाम ने खुलकर इसकी काट की और साफ़ कर दिया कि यह सब अल्लाह के प्राणी हैं। बन्दगी सिर्फ़ उसी वाहिद अल्लाह की होगी। नीचे की आयतों में इसकी स्पष्टता हैः

﴿وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ﴾

''और न वह तुमसे यह कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को अपना रब बना लो, क्या वह तुम्हें मुसलमान होने के बाद कुफ़्र के लिये कहेगा।'' (सूरह आले इमरानः 80)

﴿وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي
شَفَاعَتُهُمْ شَيْئاً إِلَّا مِن بَعْدِ أَن يَأْذَنَ اللهُ لِمَن يَشَاءُ وَيَرْضَى﴾

''और आसमानों में कितने फ़रिश्ते हैं उनकी भी सिफ़ारिश ज़रा फ़ायदा नहीं पहुंचाती अलबत्ता उसके बाद ही (काम आ सकती है) कि अल्लाह जिसके लिये चाहे इजाज़त दे दे और (उससे) राज़ी हो जाए।'' (सूरह नज्मः 26)

दूसरी तरफ़ यहूदियों की ओर से बहुत से फ़रिश्तों को अपमानित भी किया गया और उनको मनमानी करने वाला बताया गया। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इस हाल की भी काट की और साफ़ कहाः

﴿مَن كَانَ عَدُوّاً لِّلّهِ وَمَلآئِكَتِهِ وَرُسُلِهِ
وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِينَ﴾

''जो कोई दुश्मन हुआ अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्राईल और मीकाईल का तो यक़ीनन अल्लाह भी इन्कार करने वालों का दुश्मन है।'' (सूरह बक़रहः 9)

इस्लाम ने फ़रिश्तों के बारे में यह संतुलित अक़ीदा दिया कि सब अल्लाह के प्राणी हैं और उसके पूरी तरह आज्ञाकारी और उसकी बन्दगी में हमेशा लीन रहने वाले। उससे ज़रा सा भी न हटते हैं। न हट सकते हैं और न वे ख़ुदाई में शरीक हैं और न ख़ुदा के नाफ़रमान हैं। बल्कि यह दुनिया के निज़ाम में अल्लाह के दूत हैं। मलक के माने ही दूत के आते हैं। मलाएका इसकी बहुवचन है। उनका काम ही अल्लाह के हुक्मों को लागू करना है। अल्लाह तआला उनके दिलों में जो डालता है वे बेअख़्तियार फ़रमाबरदारों की तरह उसको मख़लूक़ात में जारी करते हैं।

इन्सान को अल्लाह तआला ने तमाम प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ बनाया है। यहां तक कि फ़रिश्तों पर भी उसे वरीयता दी। उसको फ़रिश्तों से सज्दा करवाया गया। उसकी वजह यही है कि फ़रिश्तों की मासूमियत अल्लाह की दी हुई है। इसमें उनके इरादे को कोई दख़ल नहीं। जबकि इन्सान की मासूमियत अख़्तियारी है। नबियों को मासूम बनाया गया है। इसके अलावा अल्लाह तआला अपने जिन बन्दों को चाहता है, हिफ़ाज़त फ़रमाता है। मगर चूंकि इसमें इन्सान के इरादे व अख़्तियार का हिस्सा होता है इसके लिये यह उसके लिये बड़ी श्रेष्ठता की बात है। वह ग़लती कर सकता है। ठोकर खा सकता है। मगर अपनी सुरक्षा करता है। ग़लती से अपने आप को बचाता है। यह चीज़ उसको बुलन्दी पर ले जाती है। फ़रिश्तों में यह योग्यता ही नहीं है। मगर इसका हरगिज़ यह मतलब नहीं है कि हर इन्सान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है। इन्सानों में जो मुकम्मल इन्सान हैं, जिन्होंने अपनी इन्सानियत पर हैवानियत के दाग़–धब्बे नहीं लगाये और अगर कभी कोई नुक़्ता लग भी गया तो फ़ौरन उसको उन्होंने धो दिया। यह इन्सान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है। जिनमें सबसे ऊपर अल्लाह के संदेष्टा हैं और जो इन्सान, इन्सान को भुला दे। अपने पैदा करने वाले ही को भूल जाए, तो वह जानवरों में शामिल हो जाता है। अल्लाह तआला ने कहाः

﴿أولئك كالأنعام بل هم أضل﴾

"वे तो जानवरों की तरह हैं बल्कि उन से गये गुज़रे हैं।"

(सूरह आराफ़ः 179)

ऐसे इन्सान तो जानवरों से बदतर हैं। फ़रिश्तों से उनको क्या निसबत। वे तो हक़ीक़त में इन्सान कहलाने के भी अधिकारी नहीं।

अल्लाह की
किताबों पर ईमान

ईमान के पूरा होने के लिये यह भी ज़रूरी है कि उन किताबों को स्वीकार किया जाए जो अल्लाह ने उतारी हैं। इसको ईमान–बिल–कुतुब कहते हैं। यह ईमान संक्षिप्त भी है और व्याख्यात्मक भी। संक्षिप्त इस तौर पर कि अल्लाह तआला ने जिस नबी पर भी किताबें उतारीं, हम उन सब किताबों को मानते हैं। फिर उनमें अल्लाह ने जिन नबियों का तज़किरा इस बारे में ख़ास तौर पर किया उनको मानना, कि उन सब पर अल्लाह ने किताबें उतारी हैं।

अल्लाह तआला कहता है:

﴿قُل آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَينَا وَمَا أُنزِلَ عَلَى إِبرَاهِيمَ
وَإِسمَاعِيلَ وَإِسحَاقَ وَيعقُوبَ وَالأَسبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَى
وَعِيسَى وَالنَّبِيونَ مِن رَّبِّهِم لاَ نُفَرِّقُ بَينَ أَحَدٍ مِّنهُم وَنَحنُ لَهُ مُسلِمُونَ﴾

''आप कह दीजिए कि हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस पर जो हम पर नाज़िल किया गया और उस पर जो इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व याकूब और उनकी औलाद पर उतारा गया और जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की ओर से दिया गया, हम उनमें आपस में कोई फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।'' (सूरह आले इमरानः 84)

सूरह बक़रह में पूरी उम्मत को सम्बोधित करके यही बात कही गयी है:

﴿قولوا آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ إِلَى إِبرَاهِيمَ وَإِسمَاعِيلَ وَإِسحَاقَ وَيعقُوبَ وَالأَسبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَى وَعِيسَى وَمَا أُوتِيَ النَّبِيونَ مِن رَّبِّهِم لاَ نُفَرِّقُ بَينَ أَحَدٍ مِّنهم وَنَحنُ لَهُ مُسلِمُونَ﴾

"तुम कह दो कि हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस पर जो हम पर उतारा गया और उस पर जो इब्राहीम व इस्माईल और इस्हाक़ व याक़ूब और औलाद (याक़ूब) पर उतारा गया और जो मूसा व ईसा को दिया गया और जो नबियों को उनके रब की तरफ़ से दिया गया। हम उनमें से किसी के बीच फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी के फ़रमाबरदार हैं।" (सूरह बक़रहः 136)

सूरह निसा में ईमान लाने के हुक्म के साथ इन्कार को कुफ़्र क़रार दिया गया है:

﴿يا أيها الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَالكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالكِتَابِ الَّذِي أَنزَلَ مِن قَبلُ وَمَن يكفُر بِاللهِ وَمَلاَئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَاليومِ الآخِرِ فَقَد ضَلَّ ضَلاَلاً بَعِيدا﴾

"ऐ ईमान वालों! अल्लाह और उसके रसूल पर और उसकी किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी उस किताब पर जो उसने पहले उतारी यक़ीन पैदा करो और जिसने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़िरत के दिन को न माना वह दूर जा भटका।" (सूरह निसाः 136)

नाम के साथ क़ुरआन मजीद में चार किताबों का ज़िक्र है। क़ुरआन मजीद के अलावा "तौरात" जो मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतरी। "ज़बूर" जो हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) पर उतारी गयी और "इन्जील" जो हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारी गयी। इनके अलावा "सुहुफ़–ए–इब्राहीम" का भी ज़िक्र है और एक जगह तौरात को "सुहुफ़–ए–मूसा" भी कहा गया है। इसके अलावा सामूहिक रूप से "सुहुफ़–ए–ऊला" (पिछले सहीफ़ों) और "ज़बरुल अव्वलीन" (पहलों की किताबें) का भी ज़िक्र है।

इस्लाम की शिक्षा यह है कि इन सब किताबों पर ईमान लाया जाए और उनको अल्लाह की किताबें समझा जाए। इसके बिना कोई मुसलमान मुसलमान नहीं हो सकता।

अल्लाह की किताबों पर इस सामूहिक अक़ीके के साथ अल्लाह की आख़िरी और मुकम्मल किताब कुरआन मजीद पर पूरी तरह से ईमान ज़रूरी है कि इसका एक–एक अक्षर अल्लाह की ओर से उतारा गया है और ठीक–ठीक उतरा भी है:

﴿وَبِالحَقِّ أنزلناه وَبِالحَقِّ نَزَلَ﴾

"और ठीक–ठीक हमने उसे उतारा है और ठीक–ठीक ही वह उतरा भी है।" (सूरह अलइस्राः 105)

अल्लाह ने दोनों बातें बता दीं। फिर तीसरी बात जिसका यक़ीन ज़रूरी है वह यह है कि तन्हा यह वह किताब है जिसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने ख़ुद ली है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿إِنَّا نَحنُ نَزَّلنَا الذِّكرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُون﴾

"हम ही ने इस नसीहत (नामा) को उतारा है और यक़ीनन हम ही उसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।" (सूरह अलहिज्रः 9)

इस किताब के अलावा दुनिया में और कोई ऐसी किताब नहीं है जिसके मानने वालों का यह दावा हो कि यह किताब पूरी तरह से सुरक्षित है। हर किताब बदल चुकी है और इन्सानी हाथों ने बेदर्दी के साथ उन पर बदलाव का अमल किया और अपनी–अपनी समझ व ज़रूरतों के हिसाब से उनमें बदलाव करते रहे और कोई किताब ऐसी नहीं जो उस ज़बान में मौजूद हो जिस ज़बान में उसको अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया। यह सिर्फ़ और सिर्फ़ कुरआन मजीद की ख़ासियत है कि उसको अरबी ज़बान में जिस तरह उतारा गया था वह उसी तरह महफ़ूज़ है और क़यामत तक महफ़ूज़ रहेगी। अगर वह बदलेगी तो दुनिया ही न रहेगी और सब कुछ बदल जाएगा। अल्लाह तआला कहता है:

﴿إِنَّ عَلَيۡنَا جَمۡعَهُۥ وَقُرۡآنَهُۥ ○ فَإِذَا قَرَأۡنَاهُ فَاتَّبِعۡ قُرۡآنَهُۥ ○ ثُمَّ إِنَّ عَلَيۡنَا بَيَانَهُۥ﴾

"उसको महफ़ूज़ करना और पढ़ना हमारे ज़िम्मे है। फिर जब हम (जिब्राईल की ज़बानी) उसको पढ़ें तो आप उसको पढ़ने के साथ–साथ पढ़ते रहें। फिर उसकी वज़ाहत भी हमारी ज़िम्मेदारी है।"

(सूरह क़ियामाः 17–19)

आगे कहता हैः

﴿وَإِنَّهُۥ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ○ لَّا يَأۡتِيهِ ٱلۡبَاطِلُ مِنۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَلَا مِنۡ خَلۡفِهِۦ تَنزِيلٌ مِّنۡ حَكِيمٍ حَمِيدٍ﴾

"और वह तो एक बुलन्द मर्तबा किताब है। उस पर झूठ का गुज़र नहीं। सामने से न पीछे से। उस ज़ात की तरफ़ से उतारी गयी है जो हिकमत रखने वाली क़ाबिले तारीफ़ है।"

(सूरह हा.मीम.सज्दाः 41–42)

एक मुसलमान के लिये जिन चीज़ों पर ईमान ज़रूरी है उनमें अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना है और ख़ास तौर पर क़ुरआन मजीद के बारे में तीन बातों का यक़ीन करना और उसको तस्लीम करना। एक तो यह कि वह अल्लाह की तरफ़ से आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (स0अ0) पर उतारी गयी। दूसरे यह कि यह ठीक–ठीक उसी तरह उतरा जिस तरह उतारा गया। और तीसरे यह कि क़यामत तक उसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता। वह जिस तरह उतरा है, उसी तरह क़यामत तक बाक़ी रहेगा।

रसूलों पर ईमान

रिसालत का अर्थ भेजने के हैं और पारिभाषिक रूप से रिसालत पैग़म्बरों (ईशसंदेष्टा) के भेजे जाने को कहते हैं। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि पैग़म्बरों को आसमान से उतारा गया है। अल्लाह की व्यवस्था यह रही है कि उसने इन्सानों ही में से किसी–किसी का इस काम के लिये चुनाव किया और आम तौर से जिस क़ौम में सुधार का उद्देश्य होता, उसी क़ौम में से किसी का चुनाव होता और नुबूव्वत के लिये अल्लाह उसको चुन लेता। कुरआन मजीद में इसका बहुत सी जगहों पर ज़िक्र मिलता है कि अल्लाह तआला ने नबी का चुनाव उसी क़ौम से किया जिस क़ौम में नबी को भेजना था। हर ज़माने में और हर क़ौम में नबी आये। अल्लाह ने बताया:

﴿وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ﴾

"और कोई क़ौम ऐसी नहीं है जिस पर ख़बरदार करने वाला न गुज़रा हो।" (फ़ातिरः 24)

हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) से यह सिलसिला चला और चलता रहा। यहां तक कि अल्लाह ने आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद (स0अ0) को भेज दिया। इन सभी पैग़म्बरों के सिलसिले में यह अक़ीदा रखना ज़रूरी है कि यह सब अल्लाह के भेजे हुए बन्दे थे जिनको अल्लाह ने चुन लिया और अपना पसंदीदा बनाया। यह सब मासूम हैं और वही कहते हैं और करते हैं जो उनको अल्लाह की तरफ़ से हुक्म मिलता है। यह हुक्म उनके पास आम तौर पर उनके पास फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) के द्वारा आते हैं और बहुत सी बातें अल्लाह तआला

सीधे उनके दिलों में डाल देता है या उनको ख़्वाब के ज़रिये बताता है। उनमें से बहुत से रसूलों का ज़िक्र अल्लाह तआला ने कुरआन में फ़रमाया है। उन सबको नबी/रसूल मानना ज़रूरी है। उनमें से पाँच बहुत बड़े पैग़म्बर हैं: 1— हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) 2— हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) 3— हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) 4— हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) 5— सैय्यदना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)।

सूरह बक़रह के आख़ीर में रसूलुल्लाह (स0अ0) और ईमान वालों के बारे में बताया जा रहा है:

﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أنزِلَ إِلَيهِ مِن رَّبِّهِ وَالمُؤمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلآئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِه
لاَنُفَرِّقُ بَينَ أحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعنَا وَأطَعنَا غُفرَانَکَ رَبَّنَا وَإِلَيکَ المَصِيرُ﴾

"जो कुछ रसूल पर उनके रब की तरफ़ से उतारा गया, रसूल भी उस पर ईमान लाये और मुसलमान भी, सबके सब अल्लाह पर ईमान लाये और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों में (ईमान के एतबार से) फ़र्क़ नहीं करते और उन्होंने कहा हमने सुना और इताअत की, ऐ हमारे रब, हम तेरी मग़्फ़िरत के तलबगार हैं और तेरी ही तरफ़ लौटना है।"

(सूरह बक़रहः 285)

इसमें बात साफ़ कर दी गयी कि ईमान लाने के सिलसिले में किसी भी नबी या रसूल के बारे में कोई फ़र्क़ नहीं होगा। तमाम नबियों और रसूलों पर ईमान लाना ईमान की शर्तों में से है। अलबत्ता उनमें मर्तबे के एतबार से अन्तर है। अल्लाह ने उनमें बाज़ को बाज़ पर बड़ी फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है। अल्लाह का इरशाद है:

﴿تِلکَ الرُّسُلُ فَضَّلنَا بَعضَهم عَلَي بَعضٍ
مِّنهم مَّن كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعضَهم دَرَجَاتٍ﴾

"यह वे रसूल हैं जिनमें बाज़ को हमने बाज़ पर फ़ज़ीलत दी, उनमें वो भी हैं जिनसे अल्लाह ने कलाम फ़रमाया और बाज़ों के दरजात बढ़ाए।" (सूरह बक़रहः 253)

अक़ीदा–ए–रिसालत

इनमें से आख़िरी रसूल (स0अ0) जिनकी उम्मत में हमको पैदा किया गया है सब नबियों के सरदार हैं। आप (स0अ0) की रिसालत पूरी दुनिया के लिये और क़यामत तक के लिये है। आप (स0अ0) पर अल्लाह की वह्य (ईशवाणी) का सिलसिला पूरा हो चुका है। अब किसी पर वह्य नहीं आ सकती है। अगर कोई यह दावा करे कि उस पर वह्य आती है या उसका इल्हाम वह्य के दर्जे का है और उसकी पैरवी ज़रूरी है तो वो झूठा और गुमराह करने वाला है।

आप (स0अ0) के बारे में निम्नलिखित अक़ीदे रखना मुसलमान होने के लिये ज़रूरी है और यह सब बातें रिसालत के अक़ीदे में शामिल हैं। इनके बग़ैर रिसालत का अक़ीदा ठीक और पूरा नहीं हो सकता।

अल्लाह के बन्दे और रसूल

1– आप (स0अ0) अल्लाह के बन्दे हैं।

2– और अल्लाह के रसूल हैं। खुद आप (स0अ0) ने इस बात को साफ़ किया है और इसकी ताकीद की है:

﴿إنما أنا عبد الله ورسوله فقولوا عبد الله ورسوله﴾

(यक़ीनन मैं अल्लाह का बन्दा और रसूल हूं, तो तुम मानो और कहो कि अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं)

(बुख़ारी: 3261, अहमद: 397)

आप (स0अ0) के लिये मेराज के मौक़े पर अल्लाह तआला ने जिन शब्दों का प्रयोग किया, वो अब्द का है। कहा जाता है:

﴿سُبحَانَ الَّذِي أسرَي بِعَبدِه لَيلاً
مِّنَ المَسجِدِ الحَرَامِ إِلَي المَسجِدِ الأقصَي﴾

"वह ज़ात पाक है, जो रातों रात ले गयी अपने बन्दे को मस्जिद–ए–हराम से मस्जिद–ए–अक़्सा की तरफ़।"(बनीइस्राईल: 1)

इसके अलावा भी बहुत सी जगह आप (स0अ0) के लिये क़ुरआन मजीद में "अब्द" का शब्द प्रयोग हुआ। एक जगह कहा गया:

﴿فَأَوحَي إِلَي عَبدِهِ مَا أَوحَي﴾

"फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर जो वही करनी थी वो उसने की।" (नज्मः 10)

दूसरी जगह इरशाद हैः

﴿وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبدُ اللّٰهِ يدعُوهُ كَادُوا يكُونُونَ عَلَيهِ لِبَداً﴾

"और यह कि जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होकर उसको पुकारता है तो वो उस पर गिरोह के गिरोह लगा लेते हैं।" (जिन्नः 19)

एक जगह फ़रमायाः

﴿وَإِن كُنتُم فِي رَيبٍ مِمَّا نَزَّلنَا عَلَي عَبدِنَا﴾

"और अगर तुम उस चीज़ के बारे में ज़रा भी शुब्हा में हो जिसको हमने अपने बन्दों पर उतारा है।" (बक़राः 23)

रसूल होने से पहले बन्दे होने का ज़िक्र ख़ुद हुज़ूर (स0अ0) ने इसलिये किया कि बन्दगी जितनी मुकम्मल होगी इन्सान उतना ही कामिल होगा। आप (स0अ0) को बन्दगी का जो कमाल हासिल था वो किसी को न हासिल हुआ और न हो सकेगा। इसीलिये जो मक़ाम व मर्तबा आप (स0अ0) को हासिल है किसी को न हासिल हुआ और न हो सकेगा।

नबियों के सरदार

3— आप (स0अ0) सैय्यदुल मुरसलीन हैं। सभी रसूलों के सरदार व इमाम हैं। एक सही हदीस में ख़ुद आप (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः

﴿أنا سيد ولد آدم يوم القيامة وأول من ينشق عنه القبر وأول شافع وأول مشفع﴾

(मैं क़यामत के दिन तमाम इन्सानों का सरदार हूँ और सबसे पहले क़ब्र से मुझे ही निकाला जायेगा और सबसे पहले सिफ़ारिश

करने वाला होऊंगा और सबसे पहले मेरी ही शिफ़ाअत कुबूल की जायेगी)[1]

एक रिवायत में कहा जाता है:

﴿أناسيدالناس يوم القيامة﴾

(मैं क़यामत के दिन सभी लोगों का सरदार होऊंगा)[2]

यद्यपि कन्जुल उम्माल की रिवायत में यह शब्द भी मिलते हैं:

﴿أناسيدالمرسلين اذابعثوا﴾

(मैं क़यामत के दिन तमाम नबियों का सरदार होऊंगा)[3]

सबसे बढ़कर अल्लाह के महबूब

4— तमाम जहानों में आप (स0अ0) अल्लाह को सबसे बढ़कर महबूब हैं। किसी को भी मुहब्बत का यह स्थान प्राप्त नहीं है। जो अल्लाह ने आपको अता किया है। हदीस में आया है:

एक मर्तबा नबियों के विशेष गुणों का वर्णन आया तो रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अन्त में कहा:

﴿وأنا حبيب الله ولا فخر أنا حامل لواء الحمد يوم القيامة ولا فخر وأنا أول شافع وأول مشفع يوم القيامة ولا فخر وأنا أول من يحرك حلق الجنة فيفتح الله لي فيدخلنيها ومعي فقراء المؤمنين ولا فخر وأنا أكرم الأولين والآخرين ولا فخر﴾

(और मैं अल्लाह का महबूब हूं और क़यामत के दिन हम्द का परचम मेरे ही पास होगा और मैं ही सबसे पहले शफ़ाअत करूंगा, और मेरी शफ़ाअत ही सबसे पहले कुबूल होगी और मैं ही सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा खुलवाऊंगा, तो वह मेरे लिये खोला जाएगा, तो मैं उसमें दाख़िल होऊंगा और मेरे साथ फुक़रा—ए—मोमिनीन दाख़िल होंगे, और मुझे ही अव्वलीन व

1. सही बुख़ारी: 79
2. मुस्लिम: 501
3. कन्जुल उम्माल: 32043

आख़िरीन में सबसे बढ़कर इज़्ज़त मिली है और मैं यह सब बतौर फ़ख़्र के नहीं कहता बल्कि यह एक हक़ीक़त का इज़हार है)[1]

मुहब्बत के ख़ास मक़ाम के साथ अल्लाह ने आपको दोस्ती का मक़ाम भी दिया। एक हदीस में आता है:

﴿إن الله تعالى قد اتخذني خليلاً كما اتخذ إبراهيم خليلاً﴾

(जिस तरह अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को ख़लील बनाया उसी तरह मुझे भी ख़लील बनाया) [2]

इस तरह अल्लाह ने रसूलुल्लाह (स0अ0) को मक़ाम–ए–ख़ल्त (दोस्ती का मक़ाम) दिया, जो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को अता किया गया था। विरास के साथ ख़ास मुहब्बत का वह मक़ाम भी दिया जो आप (स0अ0) का विशेषता है।

आख़िरी रसूल

5– आप (स0अ0) आख़िरी नबी है। नुबूव्वत का सिलसिला आप (स0अ0) पर पूरा कर दिया गया। अब कोई नबी आने वाला नहीं है। अल्लाह कहता है:

﴿وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ﴾

"अल्बत्ता आप (स0अ0) अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी हैं।" (अलएहज़ाब: 40)

सही हदीस में आप (स0अ0) ने बताया:

﴿إن لي أسماء أنا محمد و أنا احمد و أنا الماحي يمحو الله بي الكفر و أنا الحاشر الذي يحشر الناس على قدمي و أنا العاقب و العاقب الذي ليس بعده أحد﴾

(मेरे बहुत से नाम हैं, मैं मुहम्मद हूं, मैं अहमद हूं, और मैं मिटाने वाला हूं, और अल्लाह मेरे ज़रिये से कुफ़्र को मिटाता है, और मैं हाशिर हूं मेरे (नक़्श) क़दम पर लोग जमा होते हैं और मैं बाद में आने वाला हूं, ऐसा आने वाला हूं कि अब मेरे बाद कोई नहीं)[3]

---

1. तिरमिज़ी: 3976
2. मुस्लिम: 1216
3. मुस्लिम: 6252

तमाम जहानों के रसूल

6— आप (स0अ0) को तमाम इन्सानो और जिन्नातों के लिये भेजा गया है। अल्लाह तआला कहता है:

﴿وَمَا أَرسَلنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيراً وَنَذِيراً﴾

"और हमने आपको तमाम ही लोगों के लिये बशारत देने वाला और ख़बरदार करने वाला बनाकर भेजा है।" (सूरह सबा: 28)

﴿قُل يا أيها النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيكُم جَمِيعاً﴾

"कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का पैग़म्बर हूं।" (सूरह आराफ़: 157)

﴿وَأُوحِيَ إِلَيَّ هذَا القُرآنُ لأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ﴾

"और उस कुरआन की वह्य मुझ पर इसीलिये की गयी ताकि उसके ज़रिये मैं तुम्हें और जिस तक यह पहुंचे उसे ख़बरदार करूँ।" (अलईनाम: 19)

एक हदीस में आप (स0अ0) ने इरशाद फ़रमाया:

﴿كان النبي يبعث إلي قومه خاصة وبعثت إلي الناس عامة﴾

(नबी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था और मुझे तमाम लोगों के लिये भेजा गया)[1] दूसरी हदीस में आता है:

﴿والذي نفس محمد بيده لا يسمع بي أحد من هذه الأمة يهودي ولا نصراني ثم يموتوا ولم يؤمن بالذي ارسلت به إلا كان من اصحاب النار﴾

(उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, मेरी इस उम्मत में से कोई भी व्यक्ति मेरे बारे में सुने चाहे वो यहूदी हो या नसरानी हो, फिर वह इस पर ईमान न लाये तो वह जहन्नमियों में से होगा)[2]

रसूलुल्लाह (स0अ0) की रिसालत का दायरा सिर्फ़ इन्सानों और जिन्नातों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आप तमाम जहानों के नबी हैं। इसीलिए अल्लाह तआला कहता है:

---

1. बुख़ारी: 328
2. मुस्लिम: 403

﴿وما أرسلناک الا رحمة للعالمین﴾

"और हमने आपको तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है।" (सूरह अम्बियाः 107)

सबके आज्ञापालक

7— आप (स0अ0) की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है। आप (स0अ0) के अनुसरण को ज़रूरी समझना, रिसालत पर ईमान लाने का अहम हिस्सा है। इसके बग़ैर कोई मुसलमान नहीं हो सकता है जब तक आप (स0अ0) की पैरवी को ज़रूरी न समझे। यहां यह बात साफ़ कर देना भी ज़रूरी है कि आप (स0अ0) के आज्ञापालन को ज़रूरी समझना ईमान का हिस्सा है और इसका संबंध आस्था अर्थात अक़ीदे से है और अगर कोई इसको नहीं मानता तो वह ईमान से बाहर है। और अगर कोई अक़ीदे के एतबार से पैरवी को ज़रूरी तो समझता है लेकिन अमल में कोताही और ग़फ़लत हो जाती है तो वह शख़्स काफ़िर नहीं होगा। गुनहगार व पापी कहलाएगा।

कुरआन मजीद में बीसियों जगह आप (स0अ0) की आज्ञापालन का आदेश दिया गया है और उसको ईमान का एक भाग घोषित दिया गया है। एक जगह कहा गया हैः

﴿فَلاَ وَرَبِّکَ لاَ یُؤمِنُونَ حَتَّی یحَکِّمُوکَ فِیمَا شَجَرَ بَینَهم
ثُمَّ لاَ یجِدُوا فِي أنفُسِهم حَرَجاً مِّمَّا قَضَیتَ وَیسَلِّمُوا تَسلِیماً﴾

"बस नहीं आपके रब की क़सम! वे उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक कि वे अपने झगड़ों में आपको फ़ैसला करने वाला न बना लें फिर आपके फ़ैसले पर अपने जी में कोई तंगी महसूस न करें और पूरी तरह सर झुका दें।" (अन्निसाः 65)

एक जगह कहा गया हैः

﴿وَأَطِیعُوا اللهَ وَرَسُولَهُ إِن کُنتُم مُّؤمِنِینَ﴾

"अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो अगर तुम वास्तव में ईमान वाले हो।" (सूरह अनफ़ालः 1)

एक जगह फ़रमायाः

﴿قُل أَطِيعُوا اللهَ وَالرَّسُولَ فإن تَوَلَّوا فَإِنَّ اللهَ لاَ يُحِبُّ الكَافِرِينَ﴾

''आप कह दीजिए कि अल्लाह और रसूल की बात मानो फिर अगर वे मुंह फेर लें तो अल्लाह इन्कार करने वालों को पसंद नही फ़रमाता।'' (आले इमरानः 32)

इस आयत से साफ़–साफ़ यह बात मालूम होती है कि अगर कोई नहीं मानता और मुंह फेरता है तो वह काफ़िर है। एक जगह विरोध करने वालों को सख़्त अन्जाम से डराया गया है:

﴿وَمَن يشَاقِقِ اللهَ وَرَسُولَه فَإِنَّ اللهَ شَدِيدُ العِقَابِ﴾

"और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी मोल लेता है बिला शुब्हा अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।" (अन्फ़ालः 13)

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में यह भी साफ़ तौर से बता दिया कि रसूल की आज्ञा का पालन अल्लाह की आज्ञा का पालन है। अगर कुरआन मजीद में कोई आदेश साफ़ तौर पर न हो और आप (स0अ0) ने कोई बात कही हो तो वह अल्लाह ही की ओर से समझी जायेगी और उसको मानना ज़रूरी है। अल्लाह कहता है:

﴿مَّن يطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ﴾

''जिसने रसूल की इताअत की तो उसने अल्लाह की इताअत की।'' (अन्निसाः 80)

बशरियत

8– आप (स0अ0) बशर (इन्सान) हैं। कुरआन मजीद में कई जगह इसको साफ़ तौर से बयान किया गया है। सूरह कहफ़ की आख़िरी आयत में कहा गया है:

﴿قُل إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثلُكُم يوحَي إِلَي أَنَّمَا إِلَهكُم إِلَهٌ وَاحِدٌ﴾

''कह दीजिए कि मैं तो तुम्हारे जैसा एक इन्सान हूं, मेरे पास ये वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद (उपासक) सिर्फ़ एक माबूद है।'' (कहफ़ः 110)

सूरह हा.मीम. सज्दा में यही शब्द हैं:

﴿قُل إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثلُكُم يوحَيٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلٰهُكُم إِلٰهٌ وَاحِدٌ﴾

"कह दीजिए यक़ीनन मैं तो तुम्हारे जैसा एक इन्सान हूं (मेरे पास ये वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक माबूद है)।"

(हा.मीम. सज्दाः 6)

आप (स0अ0) के बारे में मक्का के मुश्रिकीन को एतराज़ हुआ कि यह कैसे रसूल हैं? उनके अन्दर तो वही गुण और वही आवश्यकताएं हैं, जो एक इन्सान में होती हैं। कुरआन मजीद ने उनका एतराज़ नक़ल किया है, कहा जाता है:

﴿وَقَالُوا مَالِ هٰذَا الرَّسُولِ يأكُلُ الطَّعَامَ وَيمشِي
فِي الأَسوَاقِ لَولَا أُنزِلَ إِلَيهِ مَلَكٌ فَيكُونَ مَعَهُ نَذِيراً﴾

"और वे कहते हैं कि ये कैसे रसूल हैं? खाना खाते हैं और बाज़ारों में चलते फिरते हैं, कोई फ़रिश्ता उनके साथ क्यों नहीं उतार दिया गया कि वह उनके साथ डराने को रहता।"

(अलफ़ुरक़ानः 08)

फिर आगे उसका जवाब भी दिया गया है, अल्लाह तआला का कहता है:

﴿وَمَا أَرسَلنَا قَبلَكَ مِنَ المُرسَلِينَ إِلَّا إِنَّهم لَيأكُلُونَ الطَّعَامَ وَيمشُونَ فِي الأَسوَاقِ﴾

"और आपसे पहले हमने जो रसूल भेजे वो सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते फिरते ही थे।" (अलफ़ुरक़ानः 20)

सूरह बनी—इस्राईल में और साफ़ तौर से यही बात कही गयी है। पहले मक्का के मुश्रिकों की मागों का बयान किया गया है। कुरआन मजीद उनको नक़ल कर रहा है:

﴿وَقَالُوا لَن نُّؤمِنَ لَكَ حَتَّي تَفجُرَ لَنَا مِنَ الأَرضِ ينبُوعاً ○ أَو تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن
نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الأَنهارَ خِلالَهَا تَفجِيراً ○ أَو تُسقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمتَ عَلَينَا
كِسَفاً أَو تَأتِي بِاللهِ وَالمَلآئِكَةِ قَبِيلاً ○ أَو يكُونَ لَكَ بَيتٌ مِّن زُخرُفٍ أَو تَرقَيٰ فِي
السَّمَاءِ وَلَن نُّؤمِنَ لِرُقِيكَ حَتَّي تُنَزِّلَ عَلَينَا كِتَاباً نَّقرَؤُه﴾

"और वे बोले कि हम तो उस वक़्त तक आपको मानने वाले नहीं जब तक कि हमारे लिये ज़मीन से कोई चश्मा न जारी कर दें। या आपके लिये खजूर व अंगूर का बाग़ हो फिर आप उसके बीच से नहरें निकाल दें। या जैसा कि आपका ख़्याल है हम पर आसमान के टुकड़े गिरा दें या अल्लाह को और फ़रिश्तों को निगाहों के सामने ले आयें। या सोने का आपका कोई घर हो या आप आसमान पर चढ़ जायें और हम तो आपके चढ़ जाने को भी उस वक़्त तक नहीं मानेंगे जब तक आप कोई ऐसी किताब लेकर न उतरें जिसको हम पढ़ सकें।" (बनी इस्राईलः 90—93)

फिर इसी आयत के आख़िर में आप (स0अ0) से कहलाया जा रहा हैः

﴿قُل سُبحَانَ رَبِّي هل كُنتُ إِلاَّ بَشَراً رَّسُولاً﴾

"कह दीजिए! मेरे रब की ज़ात पाक है, मैं क्या हूं, एक इन्सान हूं जिसे रसूल बनाया गया।" (सूरह बनी—इस्राईलः 93)

फिर अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाते हैं किः

﴿وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أن يؤمِنُوا إِذ جَاءهمُ الهدَي إِلاَّ أَن قَالُوا أَبَعَثَ اللّهُ بَشَراً رَّسُولاً﴾

"और लोगों के पास हिदायत आ जाने के बाद मान लेने में सिर्फ़ यही चीज़ रूकावट बनती है कि वो कहते हैं कि क्या अल्लाह ने इन्सान को रसूल बना दिया?" (सूरह बनी—इस्राईलः 95)

फिर अल्लाह तआला ने ख़ुद ही इस बात को साफ़ कर दिया कि रसूल अगर फ़रिश्तों की हिदायत के लिये आता तो यक़ीनन फ़रिश्ता होता लेकिन यह रसूल तो इन्सानों की हिदायत के लिये आता है, तो इसको फ़रिश्ता कैसे बनाया जाता। कहा जाता हैः

﴿قُل لَّو كَانَ فِي الأرضِ مَلآئِكَةٌ يمشُونَ
مُطمَئِنِّينَ لَنَزَّلنَا عَلَيهم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكاً رَّسُولاً﴾

"आप कह दीजिए कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते जो आराम से चल फिर रहे होते तो ज़रूर हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर उतार देते।" (सूरह बनी—इस्राईलः 95)

यह बात इन्सान की मानसिकता में अल्लाह तआला ने रखी है कि वह अपने ज़िन्स की ही पैरवी कर सकता है और चूंकि आप (स0अ0) को तमाम इन्सानों के लिये नमूना बनाया गया है, जैसा कि अल्लाह का ऐलान है:

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

''यक़ीनन तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल (स0अ0) में बेहतरीन नमूना मौजूद है।'' (एहज़ाबः 21)

इसलिये अल्लाह तआला ने आप (स0अ0) को बशर (इन्सान) बनाया ताकि आप (स0अ0) की ज़ात सभी इन्सानों के लिये नमूना हो। यह कामिल व बेहतरीन नमूना है जो एकमात्र मुक्ति मार्ग है।

सम्मान

9. नुबूव्वत व रिसालत की सबसे अहम ख़ासियत इस्लाम ने यह बतायी कि नबी व रसूल गुनाहों से पाक और बुराइयों से सुरक्षित और मासूम होते हैं। क्योंकि गुनाहगार गुनाहगारों की रहनुमाई का हक़दार नहीं और अंधा अंधे को राह नहीं दिखा सकता है। इसी बिना पर मुहम्मद (स0अ0) की वह्य व तालीम ने ख़ुदा के तमाम मासूमों की मान सम्मान दुनिया में स्थापित कर दिया।[1]

तमाम नबियों और रसूलों के सरदार हज़रत मुहम्मद (स0अ0) हैं। आपका आना तमाम दुनिया के लिये और क़यामत तक के लिये है। आप (स0अ0) के बारे में मासूम होने का अक़ीदा रखना रिसालत के अक़ीदे का अहम हिस्सा है। जिसके बिना ईमान का एतबार ही नहीं है।

हर नबी यक़ीनन इन्सानों ही में आया है और रसूलुल्लाह (स0अ0) इन्सान ही हैं, लेकिन इन्सानों से बुलन्द व पाक और मासूम, एक तरफ़ आप (स0अ0) खाते–पीते हैं, आप (स0अ0) ने शादियां की, इन्सानों के गुण और आवश्यकताएं आप (स0अ0) के जीवन में नज़र आते हैं, तो दूसरी तरफ़ अपनी आत्मिकता, मासूमियत और संदेष्टा के

---

1. सीरतुन्नबीः 4/435, नया प्रकाशनः दारूलमुसन्निफ़ीन

गुणों के एतबार से इन्सानों से बहुत अधिक श्रेष्ठ हैं, यह विशेषता व गुण किसी को प्राप्त नहीं हो सकती है।

इस्लाम की यह वह संतुलित शिक्षा है, जिसने रसूल को न ख़ुदा, न देवता, न फ़रिश्ता, न ख़ुदा का बेटा घोषित किया और न आम इन्सानों जैसा इन्सान घोषित किया, बल्कि इन्सानों में एक ऐसा इन्सान कहा जिसकी आत्मिकता व आचरण व सद्व्यवहार का स्तर इन्सानों से बहुत श्रेष्ठ होता है और वह आम इन्सानों के लिये नमूना होता है।

रसूलुल्लाह (स0अ0) के बारे में इन अक़ीदों का रखना हर ईमान वाले के लिये आवश्यक है और उसकी मांग यह है कि आपका सम्मान भी दिल में सबसे बढ़कर हो और मुहब्बत भी सबसे बढ़कर हो। इसको ईमान की पहचान बताया गया है। अल्लाह तआला ख़ुद कहता है:

﴿النبي أولي بالمومنين من أنفسهم﴾

''नबी को मामिनों पर उनकी जानों से ज़्यादा हक़ है।''

(सूरह एहज़ाब: 6)

और रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा:

﴿لا يؤمن أحدكم حتي أكون أحب اليه من والده وولده والناس أجمعين﴾

''तुममें से कोई भी व्यक्ति उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसके पिता और सन्तान और सभी लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं।'' [1]

शफ़ाअत

शफ़ाअत एक महान तोहफ़ा है जो अल्लाह तआला के लिये अपने महबूब और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के ज़रिये से आप (स0अ0) की उम्मत को अता किया है। उसके ज़रिये से न जाने कितने लोग जहन्नम से छुटकारा पायेंगे जो उसके हक़दार हो चुके थे। मगर इसके बारे में कुछ बातें स्पष्ट होना ज़रूरी हैं।

1. सही बुख़ारी : 15

इसलिए कि आज उम्मत में इसका बहुत ग़लत सोच पैदा हो गयी है। अक्सर लोगों का ख़्याल है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) अल्लाह चाहे या न चाहे उम्मत को बख़्शवा लेंगे और एक तबक़ा यहां तक कहने लगा कि कुछ करो या न करो अल्लाह के रसूल (स0अ0) से मुहब्बत रखो। यह बख़्शिश के लिये काफ़ी है। यह ख़ालिस मुश्रिकाना ख़्याल है। सबसे पहले तो जो लोग यह कहते हैं वह सिर्फ़ मुहब्बत का नाम लेते हैं। मुहब्बत उनके दिल में नहीं होती, वरना हक़ीक़त में मुहब्बत करने वाला महबूब की बात भी मानता है। अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने कहाः

﴿من أحيا سنتي فقد أحبني ومن أحبني كان معي في الجنة﴾

(जो मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करेगा, वह मुझे चाहेगा, और जो मुझे चाहेगा वह मेरे साथ जन्नत में होगा)[1]

इस तरह रसूलुल्लाह (स0अ0) ने एक पैमाना बता दिया उससे हर मोमिन आप (स0अ0) से मुहब्बत को जांच सकता है।

दूसरे यह कि कुरआन मजीद में बहुत सी जगहों पर शफ़ाअत को स्पष्ट कर दिया है कि कोई भी शफ़ाअत अपने अधिकार से नहीं कर सकता है, जो भी करेगा वह अल्लाह के हुक्म और उसकी इजाज़त ही से सिफ़ारिश कर सकेगा। अल्लाह कहता हैः

﴿مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾

''कौन है जो बिना उसकी इजाज़त के उसके पास सिफ़ारिश कर सके।'' (सूरह बक़रहः 255)

दूसरी जगह इरशाद हैः

﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ﴾

''और वह किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते मगर हां जिसके लिये उसी की मर्ज़ी हो और वे उसके डर से कांपते रहते हैं।''

(सूरह अम्बियाः 28)

---

1. सुनन तिरमिज़ीः 2894

शफ़ाअत का तमाम हक़ अस्ल में अल्लाह ही के पास होगा। कहा जाता है:

﴿قُل لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعاً لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾

"बता दीजिए कि सारी सिफ़ारिश अल्लाह ही के अधिकार में है। उसी के पास आसमानों और ज़मीन की बादशाहत है। फिर उसी के पास तुम्हें लौटकर जाना है।" (सूरह ज़ुमरः 44)

बिना उसकी इजाज़त के किसी को उसके सामने बोलने का भी हक़ नहीं होगा।

﴿يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفّاً لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَاباً﴾

"जिस दिन रूह और फ़रिश्ते क़तार बांधे खड़े होंगे, वे बोल न सकेंगे सिवाए उसके जिसको रहमान इजाज़त दे और वह ठीक बोले।" (सूरह नबाः 38)

अल्लाह यह शफ़ाअत सबसे बढ़कर अपने महबूब हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को अता फ़रमाएंगे। क़यामत के दिन ख़ास तौर पर आपकी आम शफ़ाअत से सारे इन्सान फ़ायदा उठाएंगे। अल्लाह के रसूल कहते हैं कि हर नबी को कोई न कोई ऐसी दुआ दी गई है जिसको कुबूल होना ही है। मैंने अपनी इस दुआ को अपनी उम्मत के लिये छिपा रखा है। [1]

रसूलुल्लाह (स0अ0) की शफ़ाअत के सिलसिले में हदीसों से मालूम होता है कि उसकी बहुत सी शक्लें होंगी। सबसे पहली शक्ल जो आम शफ़ाअत की शक्ल में ज़ाहिर होगी, उसका ज़िक्र सही हदीस में बार—बार आया है।

"सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0), हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि0), हज़रत जाबिर (रज़ि0) बिन अब्दुल्लाह, हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि0) से बहुत से तरीक़ों से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने सहाबा की एक मजलिस में बयान

---

1. सही बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब फ़िल मशीअत वल अरादत

फ़रमाया कि "क़यामत के हौलनाक मैदान में लोगों को एक सिफ़ारिशी की तलाश होगी, लोग पहले हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) के पास पहुंचेगे और कहेंगे कि, "आप हमारे बाप हैं, ख़ुदा ने आपको अपने हाथों से पैदा किया है, और आप में अपनी रूह फूंकी और फ़रिश्तों को आपके सज्दे का हुक्म दिया, ख़ुदा के दरबार में हमारी सिफ़ारिश कीजिए", वे जवाब देंगे कि "मेरा यह रुत्बा नहीं, मैंने ख़ुदा की नाफ़रमानी की थी, आज ख़ुदा का वह ग़ज़ब है जो कभी न हुआ था और न होगा, नफ़सी, नफ़सी!!

तुम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास जाओ" मख़लूक़ उनके पास जाएगी और अपनी वही दरख़्वास्त करेगी कि "आप तमाम इन्सानों में ख़ुदा के दोस्त हुए, अपने परवरदिगार से सिफ़ारिश कीजिए" वे भी कहेंगे "मेरा यह रुत्बा नहीं, आज ख़ुदा का वह ग़ज़ब है जो कभी न हुआ था और न होगा, नफ़सी, नफ़सी!!

तुम मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास जाओ।" लोग हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास जाएंगे, और कहेंगे कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ख़ुदा के पैग़म्बर हैं, ख़ुदा ने अपने पैग़ाम व कलाम से आपको लोगों पर वरीयता दी है, अपने ख़ुदा से हमारे लिये सिफ़ारिश कीजिए, क्या आप हमारी मुसीबतों को नहीं देखते?" हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) उनसे कहेंगे कि: "आज ख़ुदा का वह ग़ज़ब है जो कभी न हुआ था और न होगा, मैंने एक ऐसे शख़्स को क़त्ल किया जिसके क़त्ल का मुझे हुक्म नहीं दिया गया था, नफ़सी, नफ़सी!!

तुम लोग ईसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ" हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के पास जाकर लोग कहेंगे कि "ऐ ईसा (अलैहिस्सलाम)! आप ख़ुदा के वह रसूल हैं जिसने गोद में कलाम किया और कलिमतुलल्लाह और रूहुल्लाह हैं। अपने परवरदिगार से हमारी सिफ़ारिश कीजिए। वे भी कहेंगे "यह मेरा रुत्बा नहीं, आज ख़ुदा का वह ग़ज़ब है जो कभी न हुआ था और न होगा, नफ़सी, नफ़सी!!

तुम मुहम्मद (स0अ0) के पास जाओ" मख़लूक़ आपके पास आएगी, और कहेगी "ऐ मुहम्मद (स0अ0)! आप ख़ुदा के रसूल और

आख़िरी नबी हैं और वह हैं जिसके अगले–पिछले सब गुनाह माफ़ हैं। आप (स0अ0) अपने परवरदिगार से हमारी शफ़ाअत कीजिए।'' आप (स0अ0) उठकर अर्श के पास आएंगे और इजाज़त मागेंगे, इजाज़त होगी तो सज्दे में गिर पड़ेंगे। आप (स0अ0) के सामने वह कुछ खोल दिया जाएगा जो किसी और कि लिये नहीं खोला गया। अल्लाह तआला अपने हम्द और तारीफ़ों के वह माने और वे शब्द आप (स0अ0) के दिल में उतारेगा जो उससे पहले किसी को नहीं दिये गये। आप (स0अ0) देर तक सज्दे में रहेंगे। फिर आवाज़ आएगीः

''ऐ मुहम्मद (स0अ0)! सर उठाओ, कहो सुना जाएगा, मांगो दिया जाएगा। शफ़ाअत करो क़ुबूल की जाएगी।'' कहेंगे ''इलाही उम्मती! उम्मती! ख़ुदावन्द मेरी उम्मत, मेरी उम्मत'', हुक्म होगा जाओ जिसके दिल में जौ के दारे के बराबर भी ईमान होगा उसको निजात है।'' आप (स0अ0) ख़ुश–ख़ुश जाएंगे और उसकी तामील करके और फिर हम्द व सना करके फ़रमाएंगे और सज्दे में गिर पड़ेगें, फिर ग़ैब से आवाज़ आएगी कि ''ऐ मुहम्मद (स0अ0)! सर उठाओ, कहो सुना जाएगा, मांगो दिया जाएगा, शफ़ाअत करो क़ुबूल की जाएगी।''[1]

आप (स0अ0) की दूसरी सिफ़ारिश पुल सिरात पर गुज़रते वक़्त होगी। इसका ज़िक्र रिवायत में आता है। इस वक़्त तमाम नबियों व सुधार करने वालों और मोमिनों का शेआर यही होगा कि ''रब्बि सलम, रब्बि सलम'' का विर्द कर रहे होंगे, यह मुत्तफ़िक़ अलैहि रिवायत है। आप (स0अ0) की इस दुआ व सिफ़ारिश से न जाने कितने लोगों को फ़ायदा पहुंचेगा, फिर तीसरी सूरत सिफ़ारिश की यह होगी कि जहन्नम में जाने के बाद आप (स0अ0) उम्मत के ईमानवालों की सिफ़ारिश करेंगे। यह सिफ़ारिश क्रमवार होगी। सबसे पहले आपकी सिफ़ारिश से बड़ी संख्या में लोग जहन्नम से निकाले जांएगे। फिर इसी तरह दूसरी बार भी और यहां तक कि राई के बराबर भी अगर दिल में ईमान है तो वह आपकी सिफ़ारिश से जहन्नम से निकाला जाएगा। मुख़्तलिफ़ सही रिवायत में इसकी तफ़सील मौजूद है।

---

1. माख़ूज़ अज़ः सीरतुन्नबी भागः 3

सिफ़ारिश का एक प्रकार यह भी है जिसमें आप (स0अ0) उन काफ़िरों व मुश्रिकों को जहन्नम की गहराई से हल्के अज़ाब में लाने की सिफ़ारिश करेंगे और वह सिफ़ारिश कुबूल होगी।

﴿عن عبدالله بن الحارث قال: سمعت العباس يقول: قلت يا رسول الله!
ان أبا طالب كان يحوطک وينصرک فهل نفعه ذلک
قال: نعم وجدته في غمرات من النار فأخرجته الي ضحضاح﴾

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ि0 से रिवायत है, वे कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्बास को कहते हुए सुना, कि उन्होंने अल्लाह के रसूल (स0अ0) से पूछाः अबूतालिब आपकी बहुत हिमायत व समर्थन में रहते थे, क्या उनको इसका कुछ फ़ायदा हासिल हुआ, तो आप (स0अ0) ने कहाः हां, मैंने उनको जहन्नम की गहराई में पाया तो मैं उनको गहराई से ऊपरी सतह तक ले आया।[1]

मक़ाम–ए–महमूद

आप (स0अ0) के सर्वश्रेष्ठ स्थान का ज़िक्र कुरआन मजीद में किया गया हैः

﴿عَسَي أن يبعَثَکَ رَبُّکَ مَقَاماً مَّحمُوداً﴾

"उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ाम–ए–महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा।" (सूरह अलइस्राः 79)

इस आयत–ए–करीमा की तफ़सीर में सही रिवायतों में बहुत से सहाबियों ने नक़ल किया है कि *"मक़ाम–ए–महमूद" से मुराद "रुत्बा–ए–शफ़ाअत" है।*[2]

सही बुख़ारी में है कि हज़रत अनस (रज़ि0) ने शफ़ाअत के सभी वाक़्ये बयान करके यह ऊपर की आयत तिलावत की, फिर हाज़िरीन को मुख़ातिब करके फ़रमायाः

"यही वह मक़ाम–ए–महमूद है जिसका तुम्हारे पैग़म्बर से वादा किया गया है।[3]

1. सही मुस्लिमः 532
2. सही बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीरः 686/2
3. सही बुख़ारीः 1108

मोजज़ात (चमत्कार)

अल्लाह तआला अपने रसूलों को मोजज़ात (ईशचमत्कार) अता करता है, ताकि उनको देखकर लोगों के अन्दर सच्चा यक़ीन पैदा हो। मोजज़े के माने ही ऐसी चीज़ के हैं जो सामने वाले को विवश व बेबस कर दे। हर वह चीज़ जो इन्सान के बस में न हो उसको ख़ारिक़–ए–आदत कहते हैं। नबियों से जब ऐसी आदत के ख़िलाफ़ चीज़ें होती हैं, तो उनको मोजज़ा कहते हैं और कभी कभी औलिया अल्लाह से भी उनका सुदूर होता है। औलिया अल्लाह से सादिर होने वाली आदत के ख़िलाफ़ चीज़ों को करामात कहते हैं।

तमाम अम्बिया किराम को मोजज़े अता हुए, जिनमें ख़ास तौर पर हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के मोजज़े का ज़िक्र कुरआन मजीद में बार–बार किया है। आख़िरी नबी व नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को अल्लाह तआला ने बहुत से मोजज़े अता किये और अम्बिया (अलैहिस्सलाम) की सभी विशेषताएं एकत्र कर दीं।

हुस्न–ए–यूसुफ़ दम–ए–ईसा यद–ए–बैज़ा दारी।
आंचा ख़ूबां हमा दारिन्द तू तन्हा दारी।।

मोजज़ा और जादू में बड़ा फ़र्क़ यह है कि मोजज़ा वास्तविक होता है, और जादू सिर्फ़ ख़्याल और नज़रबन्दी। अल्लाह तआला फ़िरऔन के जादूगरों के बारे में कहता है:

﴿فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ﴾

"उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां मूसा को उनके जादू के ज़ोर से दौड़ती हुई लगने लगीं।" (ताहाः 66)

यही वहज है कि मोजज़े के सामने कोई चीज़ भी नहीं टिक सकती। बड़े से बड़ा जादू उसके सामने पानी हो जाता है।

रसूलुल्लाह (स0अ0) के अनगिनत मोजज़े हैं। मशहूर मोजज़े में शक़्क़े सदर (फ़रिश्तों का सीना चाक करके सफ़ाई करना), दरख़्तों और पत्थरों का सलाम करना, आप के इशारे पर चांद के दो टुकड़े हो जाना फिर वापस अपनी अस्ल हालत पर आ जाना, सुतून का रोना, इशारे से बुतों का गिर जाना, पहाड़ का हिलना, दरख़्तों का

चलना, अंधेरे में रोशनी होना, जानवरों का बातें करना, इसके अलावा बीमारियों से शिफ़ा, चीज़ों में इज़ाफ़ा, उंगलियों से पानी जारी हो जाना, कसरत से ग़ैब की ख़बरें बताना, और सबसे बढ़कर आसमानों की सैर और वाक़्या–ए–मेराज और उसके अलावा एक ऐसा मोजज़ा है जो क़यामत तक के लिये रसूलुल्लाह (स0अ0) को दिया गया और वह है कुरआन मजीद जिसने अरब के फ़सीह लोगों को बेबस कर दिया, उनको बार–बार ललकारा कि इस जैसा बनाकर लाओ। मगर वे बेबस होकर रह गये। यह वह मोजज़ा है जो क़यामत तक के लिये बाक़ी रहेगा।

सहाबा का स्थान

रसूलुल्लाह (स0अ0) के मोजज़ात में हज़रात सहाबा (रिज़ावानुल्लाहि अजमईन) की वह चमत्कारिक प्रशिक्षण भी है जिसका मानवीय इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिल सकता। मक्का मुकर्रमा के रहने वाले वे लोग जो ईमान से पहले मानवीय मूल्यों से अनभिज्ञ थे और उनमें बहुतों में ऐसी बुराइयां थीं जिनका ज़िक्र भी अपमान का कारण है, इन्सानियत की उस बुलन्दी पर पहुंच गये जिससे आगे की सोच भी मुश्किल है:

जिनको काफ़ूर पर होता था नमक का धोखा।
बन गये ख़ाक़ को अक्सीर बनाने वाले।।

अल्लाह तआला ने इस बुलन्द मक़ाम की गवाही दी है और उन पर अपने ख़ास फ़ज़्ल का ज़िक्र किया है। कहा जाता है:

﴿وَأَلْزَمَهم كَلِمَةَالتَّقْوَي وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهلَهَا﴾

"और परहेज़गारी की बात उनके पास छोड़ दी और वे उसी के हक़दार और उसकी के योग्य थे।" (सूरह फ़तेह: 26)

एक जगह कहा गया:

﴿وَلَكِنَّ اللهَ حَبَّبَ إِلَيكُمُ الإِيمَانَ وَزَيَّنَه فِي
قُلُوبِكُم وَكَرَّهَ إِلَيكُمُ الكُفرَ وَالفُسُوقَ وَالعِصيانَ﴾

"अलबत्ता अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये ईमान में आकर्षण पैदा कर दिया और तुम्हारे दिलों में उसे सजा दिया और कुफ़्र और गुनाह और बुराई से तुम्हें दूर किया।" (सूरह हुजुरातः 8)

और यह कहकर मोहर लगा दीः

﴿رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ﴾

"अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए।"

(सूरह माइदाः 119)

यही वजह है कि तमाम सहाबा के बारे में यह मुसलमानों का अक़ीदा है कि वे सबके सब उम्मत के सर्वश्रेष्ठ लोग हैं। कोई बड़े से बड़ा वली सहाबा के मक़ाम को नहीं पहुंच सकता। उनमें सबसे ऊंचा मक़ाम सैय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि0) का है। नबियों के बाद इन्सानों में अफ़ज़ल तरीन शख़्सियत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि0) की है। फिर हज़रत उमर (रज़ि0) का स्थान है, फिर हज़रत उस्मान–ए–ग़नी (रज़ि0) का स्थान है, फिर हज़रत अली–ए–मुर्तज़ा (रज़ि0) का।

सहाबा–ए–किराम से मुहब्बत ईमान की पहचान है और उनसे नफ़रत निफ़ाक़ की अलामत है। इसी तरह अहल–ए–बैत नबी से मुहब्बत भी ईमान का मांग है और यही सही मुसलमानों की पहचान है कि वे सहाबा से भी मुहब्बत रखते हैं और अहले बैत से भी।

रसूलुल्लाह (स0अ0) के बहुत से मोजज़े हैं, उनमें एक मोजज़ा ख़ुद हज़राते सहाबा किराम और अहले बैत हैं, जिनकी पाकीज़ा ज़िन्दगियां हुज़ूर अक़दस (स0अ0) का मोजज़ा हैं। उन हज़रात से मुहब्बत और उनकी अज़मत को दिल से मानना यह भी ईमान ही का एक हिस्सा है, और ख़ुद हुज़ूर (स0अ0) से मुहब्बत की पहचान है।

आख़िरत पर ईमान

आख़िरत का अक़ीदा अर्थात परलोक की आस्था इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ीदों में से एक है। जब तक आख़िरत का यक़ीन न हो और इन्सान इसको दिल से मान न ले, उस वक़्त तक वह मुसलमान नहीं हो सकता है। सूरह बक़रह के शुरूआत ही में तक़वे वालों अर्थात संयमी लोगों की जो विशेषताएं बयान हुईं हैं, उनमें सबसे ज़्यादा अहमियत के साथ आख़िरत पर ईमान का ज़िक्र है। इरशाद होता है:

﴿وَبِالآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ﴾

"और आख़िरत को यही (लोग) यक़ीन जानते हैं।"

(सूरह बक़राः 04)

इन्सान की ज़िन्दगी में अल्लाह के डर के बाद सबसे गहरा असर जो पड़ता है वो आख़िरत के यक़ीन का है। जिसको जितना ज़्यादा आख़िरत का ख़्याल रहता है उसके आमाल व अख़लाक़ (कर्म व आचरण) उसी के एतबार से होते हैं। क़ुरआन मजीद में तौहीद के अक़ीदे के बाद सबसे ज़्यादा आख़िरत के ध्यान देने की बात कही गयी है। इसका आधारभूत कारण यही है कि तौहीद और आख़िरत ही इन्सान की ज़िन्दगी में बदलाव पैदा करने और उनको सही रुख़ पर लाने की सबसे ताक़तवर बुनियादें हैं। अगर यह बुनियादें न हों तो मनुष्य का जीवन व्यर्थ होकर रह जाये और केवल दुनिया के फ़ायदे व नुक़सान के और कोई चीज़ इन्सान के अन्दर हरकत पैदा करने वाली न हो। जिस प्रकार तौहीद के पाठ में यह बात गुज़र चुकी है कि उसकी तफ़सील का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के रसूल (स0अ0) से ही होता है। आख़िरत के इल्म का भी सिर्फ़ एक ही ज़रिया है और वो

केवल अम्बिया (अलैहिस्सलाम) हैं। जिनके इमाम सैय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0) हैं। जिनके ज़रिये से आख़िरत की तफ़सील मालूम होती है। अगर नबियों की तालीम न हों तो इन्सान आख़िरत के सिलसिले में भटकता ही रहेगा।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿قُل لَّا يعلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالأرضِ الغَيبَ إِلَّا اللَّهَ وَمَا يشعُرُونَ أيانَ يبعَثُونَ بَلِ ادَّارَكَ عِلمُهم فِي الآخِرَة بَل هم فِي شَكٍّ مِّنها بَل هم مِّنها عَمُونَ﴾

"बता दीजिए कि आसमानों और ज़मीनों में ढकी–छिपी चीज़ का जानने वाला कोई नही, सिर्फ़ अल्लाह है और उनको उसकी ख़बर भी नहीं कि वे कब उठाये जायेंगे। बात यह है कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म बिल्कुल ठप पड़ गया है, बल्कि वे उसके बारे में शुब्हे में हैं (वाक़्या यह है) कि वे इस सिलसिले में अन्धे हैं।"

(सूरह नमल: 65–66)

अब आख़िरत के यक़ीन के बाद इन्सान अपने अन्दर क्या बदलाव लाये और क्या तरीक़ा अपनाये। इसका सही रास्ता मालूम करने का भी केवल एक ही रास्ता है जिसका संबंध रिसालत के अक़ीदे से है। अल्लाह तआला की मर्ज़ी मालूम करने का इसके अलावा कोई रास्ता नहीं। रसूलों ही से इन्सान को हिदायत मिलती है। जिनमें आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को अल्लाह तआला ने सारी दुनिया की हिदायत के लिये भेजा है। यह सब वे अक़ीदे हैं जो इन्सानों को सही रूख़ देते हैं। उसके जीवन में सुधार की क्रान्ति लाते हैं और उसको अस्ल कामयाबी दिलाते हैं। अगर ये तीनों अक़ीदे कमज़ोर हों तो इन्सान की ज़िन्दगी भी दुनिया के थपेड़ों में घिर कर रह जाती है और उसी उतार व चढ़ाव में वह अपनी उम्र पूरी करके मौत के घाट उतर जाता है। और दूसरी ज़िन्दगी उसकी बद से बदतर होगी। जहां सिवाये हसरत व मायूसी के कुछ उसके हाथ न लग सकेगा।

आख़िरत के माने आख़िर में आने वाली चीज़ के हैं। क़ुरआन मजीद में ये शब्द '113' जगहों पर आया है। कई जगहों पर ये

शब्द केवल “आख़िरत” आया है और बहुत सी जगहों पर और स्पष्ट रूप से इसका इस्तेमाल हुआ है। इरशाद होता है:

﴿وَإِنَّ الدَّارَ الآخِرَةَ لَهِيَ الحَيَوَان﴾

“और यह दुनिया की ज़िन्दगी बस खेल और तमाशा है और अस्ल ज़िन्दगी तो बस आख़िरत का ही घर है, काश कि वे जान लेते।” (अनकबूतः 64)

दूसरी जगह इरशाद है:

﴿وَلَلدَّارُ الآخِرَةُ خَيرٌ﴾

''और आख़िरत का घर ही बेहतर है।'' (सूरह इनआमः 32)

सूरह तौबा में इरशाद हुआः

﴿وَإِنَّ الدَّارَ الآخِرَةَ لَهِيَ الحَيَوَان﴾

''क्या तुम आख़िरत के मुक़ाबिले दुनिया की ज़िन्दगी में मगन हो गये हो।'' (सूरह तौबाः 38)

इन इस्तेमालों से पूरी बात साफ़ हो जाती है कि जहां कहीं भी आख़िरत का शब्द अकेला प्रयोग हुआ है उससे भी मुराद आख़िरत या आख़िरत की ज़िन्दगी है। इसके मुक़ाबले हमारी मौजूदा ज़िन्दगी को “दुनिया की ज़िन्दगी” कहा गया है। दुनिया के माने क़रीब के हैं, यह ज़िन्दगी या यह घर हमारे सामने है और हमसे क़रीब है और वह दूसरा घर या दूसरी ज़िन्दगी निगाहों से अभी दूर है वही अस्ल और आख़िरी ज़िन्दगी है, जिसको आख़िरत कहते हैं। यह दुनिया की ज़िन्दगी अल्लाह तआला ने आख़िरत की ज़िन्दगी के लिये बनायी है और वहां की सफलता व असफलता का दारोमदार यहां की ज़िन्दगी पर रखा है। इसीलिये एक हदीस में यह शब्द आये हैं कि “दुनिया आख़िरत की खेती है” इन्सान जैसी खेती यहां करेगा, उसका उसके अनुसार वहां बदला मिलेगा। यह एक बेहतरीन मिसाल है। जिससे बात समझाई गयी है कि जो जितना ज़्यादा रसूलुल्लाह (स0अ0) के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा, वह उतना ही ज़्यादा कामयाब होगा। इसीलिये इस दुनिया को इम्तिहान की जगह भी कहा गया है।

आख़िरत की इस ज़िन्दगी का यक़ीन करना और जानना कि इस दुनिया की ज़िन्दगी के बाद एक और ज़िन्दगी है जो हमेशा के लिये होगी और उसमें आदमी को किये के मुताबिक़ बदला मिलेगा। इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ीदों में से तीसरा अक़ीदा है जिसको आख़िरत का अक़ीदा कहते हैं।

आलम–ए–बरज़ख़

मरने के बाद क़यामत से पहले जो चरण है वह आलम–ए–बरज़ख़ कहलाता है। बरज़ख़ के माने बीच की चीज़ के हैं जो दो चीज़ों के बीच रहती है और पर्दा बन जाती है। आलम–ए–दुनिया और आलम–ए–आख़िरत के बीच का ये एक प्रकार का व्यवधान या वक़्फ़ा है इसीलिये इसको बरज़ख़ कहते हैं। सूरह मोमिनून में इसका बारे में आया है। इरशाद होता हैः

﴿وَمِن وَرَائِهِم بَرزَخٌ إِلَي يوم يبعَثُونَ﴾

"और उनके पीछे एक पर्दा है उस दिन तक जब वे उठाए जायेंगे।" (अलमोमिनूनः 100)

मरने के बाद इस चरण में इन्सान जहां भी होता है उसको क़ब्र कहते हैं। चाहे वह मिट्टी के अन्दर हो समुन्द्र या दरिया के बीच में हो या किसी जानवर के पेट में। इन्सान मरने के बाद जहां कहीं भी हो, उसको जलाकर उसकी राख को समुन्द्रों, नदियों या ज़मीन पर कहीं भी उड़ाया गया हो, उसको किसी जानवर ने खा लिया हो, वही उसके लिये क़ब्र है। अल्लाह तआला उसको वहां से क़यामत के दिन उठाकर खड़ा कर देगा।

﴿وَأَنَّ اللهَ يبعَثُ مَن فِي القُبُورِ﴾

"और अल्लाह उन सबको उठाएगा जो क़ब्रों में हैं।" (अलहज्जः 7)

उस आलम–ए–बरज़ख़ को मानना भी आख़िरत पर ईमान ही का हिस्सा है। उस पर्दे के हटते ही क़यामत बरपा हो जायेगी जिसको 'बास बाद इल मौत' कहते हैं। फिर हिसाब व किताब के बाद जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे।

इस बीच के चरण (आलम–ए–बरज़ख़) की राहत या तकलीफ़ का ज़िक्र आयत व हदीसों में ख़ूब मिलता है। कुरआन मजीद में फ़िरऔनियों के बारे में आलम–ए–बरज़ख़ के अज़ाब का ज़िक्र बड़े साफ़ तौर से मौजूद है और इरशाद होता है:

﴿وَحَاقَ بِآلِ فِرعَونَ سوءِ العَذَاب○النَّارُ يعرَضُونَ عَلَيها غُدُوّاً وَعَشِياً وَيومَ تَقُومُ السَّاعَةُ أدخِلُوا آلَ فِرعَونَ أشَدَّ العَذَاب﴾

"और फ़िरऔन वालों पर बुरी तरह का अज़ाब टूट पड़ा वह आग है जिस पर सुबह व शाम उनको तपाया जाता है और जिस दिन क़यामत आयेगी (कहा जायेगा कि) फ़िरऔन के लोगों को सख़्त तरीन अज़ाब में दाख़िल करो।" (अलग़ाफ़िरः 45–46)

यह तकलीफ़ या राहत मौत के वक़्त ही से शुरू हो जाती है। बहुत सी आयतों में इसका ज़िक्र है। एक जगह इरशाद है:

﴿وَلَو تَرَي إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ المَوتِ وَالمَلآئِكَةُ اسِطُوا ايدِيهم أخرِجُوا أنفُسَكُمُ اليومَ تُجزَونَ عَذَابَ الهونِ بِمَا كُنتُم تَقُولُونَ عَلَي اللهِ غَيرَ الحَقِّ وَكُنتُم عَن آياتِهِ تَستَكبِرُونَ وَلَقَد جِئتُمُونَا فُرَادَي كَمَا خَلَقنَاكُم أوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكتُم مَا خَوَّلنَاكُم وَرَاءَ ظُهورِكُم وَمَا نَرَي مَعَكُم شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمتُم أنَّهم فِيكُم شُرَكَاءُ لَقَد تَقَطَّعَ بَينَكُم وَضَلَّ عَنكُم مَا كُنتُم تَزعُمُون﴾

"और अगर आप देख लें जब यह नाइंसाफ़ मौत की कठिनाइयों में होंगे और फ़रिश्ते हाथ फैलाये (कहते) होंगे कि निकालो अपनी जान आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जायेगा इसलिये कि तुम अल्लाह पर नाहक़ बातें कहते थे उसकी निशानियों से अकड़ते रहते और अब एक एक करके हमारे पास पहुंच गये जैसे पहली बार हमने तुम्हें पैदा किया था और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा था वह सब पीछे छोड़ आये और हमें तुम्हारे साथ वह सिफ़ारिशी भी नज़र नहीं आते जिनके बारे में तुम्हारा ख़्याल यह था कि वे तुम्हारे मामलों में (हमारे) शरीक हैं, तुम आपस में टूट कर रह गये और तुम जो वादे किया करते थे वह सब तुमसे हवा हो गये।"

(इनआमः 93–94)

सूरह अनफ़ाल में इरशाद है:

﴿وَلَوتَرَي إِذيتَوَفَّي الَّذِينَ كَفَرُوا المَلآئِكَةُ يضرِبُونَ جُوهِهم أدبَارَهم وَذُوقُوا
عَذَابَ الحَرِيقِ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمَت أيدِيكُم وَأنَّ اللهَ لَيسَ بِظَلاَّمٍ لِّلعَبِيدِ﴾

"और अगर आप देख लें कि जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकाल रहे हों उनके चेहरों और पुश्त पर मारते जाते हों और (कहते जाते हों) कि जलने के अज़ाब का मज़ा चखो, यह नतीजा है तुम्हारे गुज़रे हुए करतूतों का और अल्लाह अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता।" (अनफ़ालः 50–51)

निम्नलिखित आयतों में नेक व बद का ज़िक्र मौजूद है। नेकों को कैसी बशारतें मौत के वक़्त ही से शुरू हो जाती हैं। इरशाद होता है:

﴿فَلَولاَ إِذَا بَلَغَتِ الحُلقُومَ ○ وَأنتُم حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ○ وَنَحنُ أقرَبُ إِلَيهِ نكُم وَلَكِن
لَّا تُبصِرُونَ ○ فَلَولاَ إِن كُنتُم غَيرَ مَدِينِين ○ تَرجِعُونَهَا إِن كُنتُم صَادِقِينَ ○
فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ المُقَرَّبِينَ ○ فَرَوحٌ وَرَيحَانٌ وَجَنَّةُ نَعِيمٍ ○
وَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ أصحَابِ اليَمِينِ ○ فَسَلَامٌ لَّكَ مِن أصحَابِ اليَمِينِ ○
وَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ المُكَذِّبِينَ الضَّالِّين ○ فَنُزُلٌ مِّن حَمِيمٍ وَتَصلِيَةُ جَحِيمٍ﴾

"तो फिर क्यों न जिस वक़्त जान हलक़ को पहुंचती है और तुम उस वक़्त को देख रहे होते हो और हम तुमसे ज़्यादा उससे क़रीब हैं हालांकि तुम नहीं देखते तो अगर तुम किसी के महकूम नहीं हो तो क्यों (ऐसा) नहीं हो जाता कि तुम उसको लौटा दो अगर तुम (अपनी बात में) सच्चे हो फिर अगर वो (मरने वाला) मुक़र्रबीन (बारगाह–ए–इलाही) में हुआ तो मज़े ही मज़े ही हैं और ख़ुशबू ही ख़ुशबू है और नेमतों भरा बाग़ हो और अगर वे दायीं तरफ़ वालों में हुआ तो तेरे लिये सलाम ही सलाम (के नज़राने) हैं कि तू दायीं तरफ़ वालों में है और अगर वे झुठलाने वालों गुमराहों में हुआ तो खौलते पानी से (उसकी) तवाज़ो होगी और (उसे) जहन्न्म रसीद किया जायेगा।" (अलवाक़्यातः 83–94)

अल्लाह ने अपने नेक बन्दों के लिये मौत के वक़्त कैसी बशारतें रखी हैं। उनको कैसी मुहब्बत भरी सदांए सुनायीं देती हैं:

﴿يا أيتها النّفس المُطمَئِنَّة ارجِعِي إلِي رَبِّکِ رَاضِية مَّرضِية فَادخُلِي فِي عِبَادِي وَادخُلِي جَنَّتِي﴾

"ऐ वह जान जो सुकून पा चुकी, अपने रब की तरफ़ इस तरह लौट कर आजा कि तू उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी, बस मेरे ख़ास बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।"

(फ़ज्रः 28–29)

इसी आलम–ए–बरज़ख़ की व्याख्या हदीस में भी आयी है। एक जगह आप (स0अ0) का इरशाद है:

﴿عَن ابنِ عُمَرَ أنَّ رَسولَ اللهِ صَلّي اللهُ عَلَيهِ وَسَلَّمَ قَالَ: انَّ أحَدَكُم اذَا مَاتَ عُرِضَ عَلَيهِ مَقعَدُه بِالغَدَاة وَالعَشِي ان كَانَ مِن أهلِ الجَنَّة فَمِن أهلِ الجَنَّة وَان كَانَ مِن أهلِ النَّارِ فَمِن أهلِ النَّارِ يقَالُ هٰذَا مَقعَدُکَ حَتّي يبعَثَکَ اللهُ الَيهِ يومَ القِيامَة﴾

(हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः जब तुममें से कोई मरता है तो उस पर सुबह व शाम उसका अस्ल मक़ाम पेश किया जाता है, अगर वह जन्नत वालों में से होता है तो जन्नत और अगर जहन्नम वालों में से है तो जहन्नम, फिर उससे कहा जाता है कि तेरी जगह उस वक़्त तक के लिये जब तू क़यामत के लिये उठाया जायेगा) [1]

क़ब्र में सवाल व जवाब

हदीसों में आप (स0अ0) से नक़ल है कि मरने के बाद क़ब्र में दो फ़रिश्ते आते हैं और वे मरने वाले से तौहीद व रिसालत के बारे में सवाल करते हैं।

अबूदाउद की रिवायत में आता है: (हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) बनू नज्जार के

---

1. सही मुस्लिम : 739, सही बुख़ारी : 1379

एक रेगिस्तान में तशरीफ़ ले गये, वहां आप (स0अ0) ने बहुत भयानक आवाज़ सुनी, आप (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः जब मोमिन क़ब्र में रख दिया जाता है, तो उसके पास एक फ़रिश्ता आता है और वो उससे कहता है, ''तुम किसकी इबादत किया करते थे?'' फिर अगर अल्लाह ने उसे हिदायत दी थी तो वह कहता हैः ''मैं अल्लाह की इबादत करता था'' फिर उससे कहा जाता है, ''तुम उस व्यक्ति के बारे में क्या कहते हो?'' तो वह कहता है, ''वे अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं'' फिर उसके बाद उससे किसी चीज़ के बारे में सवाल नहीं किया जायेगा, फिर उसको जहन्नम में उसके घर की तरफ़ ले जाया जाता है और उससे कहा जाता है कि ''मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं ये ख़ुशख़बरी अपने घर वालों के सुना सकूं, लेकिन उससे कहा जायेगा कि तुम यहीं आराम करो और जब काफ़िर को क़ब्र में लिटाया जाता है तो उसके पास एक फ़रिश्ता आता है और उसको झिंझोड़ता है और उससे कहता है ''तुम दुनिया में किसकी इबादत करते थे?'' तो वह जवाब देता है, ''मैं नहीं जानता'' फिर उससे पूछा जायेगा कि, ''तुम इस शख़्स के बारे में क्या कहते हो?'' वह जवाब देगा, ''जो लोग कहते थे वही मैं भी कहता हूँ, फिर उसके बाद वे उसके दोनों कानों के बीच एक लोहे का हथौड़ा मारेगा, जिससे उसकी एक ऐसी चीख़ निकलेगी, जिसको इन्सान व जिन्नात के अलावा सभी मख़लूक़ सुनेगी)

कुरआन मजीद की आयत में भी इसकी तरफ़ इशारा मौजूद है, इरशाद हैः

﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللهُ الظَّالِمِينَ﴾

"और अल्लाह ईमान वालों को मज़बूत बात से इस दुनिया में भी मज़बूत करता है और आख़िरत में भी, और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है, और अल्लाह तो जो चाहता है करता है।"

(इब्राहीमः 27)

इसकी तफ़सीर हदीसों में भी बयान की गयी है कि इससे मुराद क़ब्र में तौहीद व रिसालत के बारे में सवालों का होना है, सही मुस्लिम की रिवायत में आता है:

﴿عن البراء بن عازب رضي الله عنه عن النبي صلي الله عليه وسلم قال: {يثَبِّتُ الله الَّذِينَ آمَنُوا بِالقَولِ الثَّابِتِ فِي الحَياة الدُّنيا وَفِي الآخِرَة وَيضِلُّ الله الظَّالِمِينَ} قال: نزلت في عذاب القبر فيقال له من ربک؟ فيقول: ربي الله ونبيي محمد صلي الله عليه وسلم فذلک قوله عز وجل {يثَبِّتُ الله الَّذِينَ آمَنُوا بِالقَولِ الثَّابِتِ فِي الحَياة الدُّنيا وَفِي الآخِرَة وَيضِلُّ الله الظَّالِمِينَ}﴾

(हज़रत बरा इब्ने आज़िब (रज़ि0) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः ''और अल्लाह ईमान वालों को मज़बूत बात से इस दुनिया में भी मज़बूत करता है और आख़िरत में भी और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है और अल्लाह तो जो चाहता है करता है।'' यह सूरह क़ब्र के अज़ाब के संबंध में नाज़िल हुई है, बन्दे से पूछा जायेगा, "तुम्हारा रब कौन है? वह जवाब देगा, "मेरा रब अल्लाह है, और मेरा नबी मुहम्मद (स0अ0) हैं", मानो अल्लाह तआला के इस क़ौलः "और अल्लाह ईमान वालों को मज़बूत बात से इस दुनिया में भी मज़बूत करता है और आख़िरत में भी, और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है, और अल्लाह तो जो चाहता है करता है।" से मुराद बन्दे का जवाब देना है) [1]

आलम–ए–बरज़ख़ में जो कुछ होता है, ज़ाहिरी तौर पर मरने वाले के जिस्म पर उसका असर नहीं आता है। इसलिये कि इसका अस्ल संबंध रूह से होता है और बड़ी हद तक उसकी मिसाल गहरी नींद से दी जा सकती है। सोने वाला न जाने ख़्वाब में कहां–कहां की सैर करता है और तरह–तरह की ख़ुशियां उसको हासिल हो रहीं होती हैं या बहुत तकलीफ़ महसूस करता है। लेकिन पास बैठा दूसरा इन्सान इसको बिल्कुल महसूस नहीं कर पाता।

1. सही मुस्लिम : 7398

इसी तरह मरने वालों के एहसासों का संबंध उसकी रूह से और उसके साथ जो कुछ हो रहा है उसको दूसरा उसके जिस्म पर महसूस नहीं कर सकता कि वो दुनिया ही दूसरी है।

क़यामत की बड़ी निशानियां

क़यामत आने से पहले दुनिया में बहुत सी ऐसी घटनाएं होंगी जिससे खुल जाएगा कि क़यामत अब बहुत क़रीब है। उनमें इमाम मेंहदी का ज़ाहिर होना, हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का उतरना, याजूज व माजूज का निकलना, दज्जाल का निकलना, दाब्बतुल अर्ज़ यानि एक जानवर का लोगों से बाक़ायदा बातचीत करना और सबसे आख़िरी अलामत सूरज का मग़्रिब से तुलूअ होना। उसके बाद दुनिया ख़त्म कर दी जाएगी और क़यामत आ जाएगी। जिसकी तफ़सील आगे आ रही है।

क़यामत

दुनिया में आने वाला इन्सान एक दिन ख़त्म हो जाता है। जो आया है वह जाने के लिये ही आया है। यह एक ऐसी हक़ीक़त है जिसका इन्कार नहीं किया जा सकता है। लेकिन एक दिन ऐसा आने वाला है कि दुनिया ही समाप्त हो जायेगी। जो कुछ है सब कुछ बिखर कर रह जायेगा। वह क़यामत का दिन होगा, जिस अल्लाह के हुक्म से सूर फूंका जायेगा तो कोई सांस लेने वाला बाक़ी न रहेगा। फिर क़यामत आ जायेगी। आसमान व ज़मीन, चांद सितारे, सूरज और ये पूरी व्यवस्था तहस–नहस होकर रह जायेगी। निम्नलिखित आयतों को देखिएः

﴿إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَت ○ وَإِذَا الكَوَاكِبُ انتَثَرَت ○ وَإِذَا البِحَارُ فُجِّرَت ○
وَإِذَا القُبُورُ بُعثِرَت ○ عَلِمَت نَفسٌ مَّا قَدَّمَت وَأَخَّرَت﴾

“जब आसमान फट जायेगा और जब सितारे बिखर जायेंगे और जब समन्दर उबाल दिये जायेंगे और जब क़ब्रों को उथल–पुथल कर दिया जायेगा (उस वक़्त) एक–एक शख़्स को मालूम हो जाएगा कि उसने क्या भेजा क्या छोड़ा।” (सूरह इन्फ़ितारः 1–5)

﴿إِذَا الشَّمسُ كُوِّرَت ○ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَت ○ وَإِذَا الجِبَالُ سُيِّرَت﴾

"जब सूरज लपेट दिया जायेगा और जब सितारे टूट–टूट कर गिर जायेंगे और जब पहाड़ चला दिये जायेंगे।"

(सूरह अत्तकवीरः 1–3)

﴿فَإِذَا بَرِقَ البَصَرُ ○ وَخَسَفَ القَمَرُ ○ وَجُمِعَ الشَّمسُ وَالقَمَرُ﴾

"बस जब आंखें चुंधयां जायेंगी और चांद गहना जायेगा और सूरज और चांद मिला दिये जायेंगे।" (सूरह क़ियामाः 9)

﴿يَومَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالمُهلِ ○ وَتَكُونُ الجِبَالُ كَالعِهنِ﴾

"उस दिन आसमान तलछट की तरह होगा और पहाड़ रूई के रंगीन गालों की तरह होंगे।" (अल मआरिजः 8–9)

﴿فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفخَةٌ وَاحِدَةٌ ○ وَحُمِلَتِ الأَرضُ وَالجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ○ فَيَومَئِذٍ وَقَعَتِ الوَاقِعَةُ ○ وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَومَئِذٍ وَاهِيَةٌ﴾

"फिर जब एक ही दफ़ा सूर फूंकी जायेगी और ज़मीन और पहाड़ को उठाकर एक ही बार में चकनाचूर कर दिया जायेगा तो उस दिन पेश आने वाली चीज़ पेश आयेगी और आसमान फट पड़ेगा, उस दिन वह फुसफुसा होगा।" (अल हाक़्क़ाः 13–16)

﴿يَومَ تَرجُفُ الأَرضُ وَالجِبَالُ وَكَانَتِ الجِبَالُ كَثِيباً مَّهِيلاً﴾

"जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ कर रह जायेंगे और पहाड़ भरभराती रेत के तोदे बन जायेंगे।" (सूरह मुज़म्मिलः 14)

﴿فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَت وَردَةً كَالدِّهَانِ﴾

"फिर जब आसमान फट पड़ेगा तो तलछट की तरह सुर्ख़ हो जाएगा।" (सूरह रहमानः 38)

﴿يَومَ تُبَدَّلُ الأَرضُ غَيرَ الأَرضِ وَالسَّمَاوَاتُ وَبَرَزُوا للهِ الوَاحِدِ القَهَّارِ﴾

"जिस दिन ज़मीन यह ज़मीन न रहेगी और (न) आसमान (यह आसमान होगा) और एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने सब की पेशी होगी।" (सूरह इब्राहीमः 48)

सब कुछ फ़ना होने के बाद दूसरी बार सूर फूंकी जायेगी तो सब क़ब्रों से निकल खड़ें होंगे। इसीलिये इस को 'यौमुल बास' कहा गया है। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخرَي فَإِذَا هم قِيامٌ ينظُرُونَ﴾

"फिर उसमें दोबारा सूर फूंकी जायेगी, बस वह पल भर में खड़े होकर देखने लगेंगे।" (सूरह ज़ुमरः 68)

दूसरी जगह अल्लाह तआला हश्र के बारे में इन्सानी ज़हन के एतबार से मिसाल देकर फ़रमाता हैः

﴿يا أيها النَّاس اتَّقُوا رَبَّكُم إنَّ زَلزَلَة السَّاعَة شَيءٌ عَظِيمٌ ○ يوم تَرَونَها تَذهلُ كُلُّ مُرضِعَةٍ عَمَّا أرضَعَت وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَملٍ حَملَها وَتَرَي النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هم بِسُكَارَى وَلكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيد﴾

''ऐ लोगों! अपने रब से डरो, यक़ीनन क़यामत का भूचाल एक बड़ी चीज़ है, जिस दिन तुम उसको देखोगे कि हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और हर गर्भवती औरत अपने गर्भ को गिरा देगी और आपको नज़र आयेगा कि लोग मदहोश हैं जबकि वे मदहोश न होंगे अलबत्ता अल्लाह का अज़ाब है ही बड़ी सख़्त चीज़।'' (सूरह हज्जः 5–7)

हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से लेकर क़यामत तक जो भी दुनिया में आया है सबको उस दिन एकत्र किया जायेगा। इसलिये इसको कुरआन मजीद में "यौमुल जमा" भी कहा गया है, यानि जमा होने का दिन। "यौमुल ख़ुरूज" भी इसको कहा गया कि क़ब्रों से निकलने का दिन है। सूरह ज़लज़ला में इरशाद होता हैः

﴿إذَا زُلزِلَتِ الأرضُ زِلزَالَها ○ وَأخرَجَتِ الأرضُ أثقَالَها ○ وَقَالَ الإنسَانُ مَا لَها ○ يومَئِذٍ تُحَدِّثُ أخبَارَها ○ بِأنَّ رَبَّكَ أوحَي لَها ○ يومَئِذٍ يصدُرُ النَّاسُ أشتَاتًا لِّيرَوا أعمَالَهم ○ فَمَن يعمَل مِثقَالَ ذَرَّةٍ خَيرًا يرَه ○ وَمَن يعمَل مِثقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يرَه﴾

"जब ज़मीन अपने भूंचाल से झंझोड़ कर रख दी जायेगी और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल देगी और इन्सान कहेगा कि उसको हुआ क्या है। उस दिन वो अपनी सारी ख़बरें बता देगी कि आपके रब ने उसको यही हुक्म दिया होगा उस दिन लोग गिरोह दर गिरोह लौटेंगे ताकि उनको उनके सब काम दिखा दिये जाए। बस जिस चीज़ ने ज़र्रा बराबर भी भलाई की होगी वह उसको देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर भी बुराई की होगी वह उसको देख लेगा।"

(सूरह ज़लज़ला: 1–8)

कुरआन मजीद की एक पूरी सूरह भी सूरह क़ियामा के नाम से नाज़िल हुई है जिसमें बड़ी–बड़ी हक़ीक़तों को छोटी–छोटी आयतों में बड़ी बलाग़त (गूढ़ता) के साथ बयान किया गया है, इरशाद होता है:

﴿لَا أُقْسِمُ بِيَومِ الْقِيَامَةِ ○ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ○ أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَلَّن نَجمَعَ عِظَامَه ○ بَلَي قَادِرِينَ عَلَي أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَه ○ بَل يرِيدُ الْإِنسَانُ لِيفجُرَ أَمَامَه ○ يسأَلُ أَيانَ يومُ الْقِيامَةِ ○ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ○ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ○ وَجُمِعَ الشَّمسُ الْقَمَر ○ يقُولُ الْإِنسَانُ يومَئِذٍ أَينَ الْمَفَرُّ ○ كَلَّا لَا وَزَرَ ○ إِلَي رَبِّکَ يومَئِذٍ الْمُستَقَرُّ ○ ينَبَّأُ الْإِنسَانُ يومَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّر ○ بَلِ الْإِنسَانُ عَلَي نَفسِه بَصِيرَة ○ وَلَو أَلْقَي مَعَاذِيرَه﴾

"अब मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूं और मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूं, क्या इन्सान यह समझता है कि हम उसकी हड्डियों का जमा नहीं करेंगे क्यों नहीं हम उस पर पूरी ताक़त रखते हैं कि उसके पोर–पोर को ठीक कर देंगे, बल्कि इन्सान तो चाहता है कि वह अपने आगे भी ढिटाई करता रहे, पूछता है कि क़यामत का दिन कब है, बस जब आंखे चुंधयां जायेगी और चांद गहना जायेगा और सूरज और चांद मिला दिये जायेंगे, उस दिन इन्सान कहेगा कि अब बचाव की जगह कहां है, हरगिज़ नहीं! अब पनाह की कोई जगह नहीं, उस दिन आपके रब के सामने ही (हर एक को) ठहरना है, उस दिन इन्सान को जो कुछ उसने आगे पीछे किया है, सब जतला दिया जायेगा बात यह है कि इन्सान को जो कुछ उसने आगे पीछे किया है सब जतला

दिया जायेगा बात यह है कि इन्सान ख़ुद अपने आप से ख़ूब वाक़िफ़ है, चाहे अपने बहाने पेश कर डाले।" (सूरह क़यामाः 1–15)

हिसाब–किताब जज़ा–सज़ा

आख़िरत के अक़ीदे का अहम हिस्सा यह है कि इन्सान को दुनिया में अपने किये हुए कामों पर अच्छे या बुरे बदले का यक़ीन हो। वह ईमान रखता हो कि हमारे हर काम का वहां हिसाब लिया जाएगा। अच्छे कामों का अल्लाह तआला की तरफ़ से अच्छा बदला मिलेगा और बुरे कामों की सज़ा मिलेगी और जो चाहेगा अल्लाह तआला माफ़ करेगा, इरशाद होता हैः

﴿فَمَن يعمَل مِثقَالَ ذَرَّة خَيراً يَرَه ○ وَمَن يعمَل مِثقَالَ ذَرَّة شَرّاً يَرَه﴾

"बस जिसने ज़र्रा बराबर भी भलाई की होगी वह उसको देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा।" (सूरज ज़लज़लाः 7–8)

यह हिसाब आख़िरत के दिन होगा जिस दिन के बारे में कुरआन मजीद में कहा गया है कि वह बहुत बड़ा दिन होगा। उस दिन इन्सान को उसके अमल के मुताबिक़ बदला दिया जाएगा, इरशाद होता हैः

﴿اليومَ تُجزَونَ مَا كُنتُم تَعمَلُونَ﴾

"आज तुम्हें वहीं बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे थे।"

(सूरह जासियाः 28)

उस दिन पाई–पाई का हिसाब होगा और इन्सान ने जो भी अच्छे–बुरे काम किए हैं, सब उसके सामने आ जाएगें।

इरशाद होता हैः

﴿إنَّ إِلَينَا إِيابَهم ○ ثُمَّ إِنَّ عَلَينَا حِسَابَهم﴾

"जिस दिन हर शख़्स अपने हर भले अमल को हाज़िर पाएगा।"

(आले इमरानः30)

﴿إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَت ○ وَإِذَا الكَوَاكِبُ انتَثَرَت ○ وَإِذَا البِحَارُ فُجِّرَت ○ وَإِذَا القُبُورُ بُعثِرَت ○ عَلِمَت نَفس مَا قَدَّمَت وَأَخَّرَت﴾

"जब आसमान फट जाएगा और जब सितारे बिखर जाएगें और जब समन्दर उबाल दिये जाएगें, और जब क़ब्रों को उथल पुथल कर दिया जाएगा (उस वक़्त) एक–एक शख़्स को मालूम हो जाएगा कि उसने क्या भेजा और क्या छोड़ा।" (इन्फ़ितारः 1–10)

ऊपर की आयतों में क़यामत का मन्ज़र खींच दिया गया है और कहा गया है कि इन्सान जो कुछ दुनिया में करता है, उस दिन सब उसके सामने होगा और उसका हिसाब उसे देना पड़ेगा।

अल्लाह फ़रमाता हैः

﴿إِذ يَتَلَقَّي المُتَلَقِّيَانِ عَنِ اليَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيد ○ مَا يَلفِظُ مِن قَولٍ إِلَّا لَدَيهِ رَقِيبٌ عَتِيد﴾

"और जब दो लेने वाले लेते रहते हैं, एक दाएं और एक बाएं बैठा है, जो बात भी उसके मुंह से निकलती है तो उसके पास ही एक मुस्तैद निगरां मौजूद रहता है।" (सूरह क़ाफ़ः 17–18)

जबकि फ़रिश्तों का लिखना आम लिखावट की तरह नहीं। वह इस तरह महफ़ूज़ करते हैं कि क़यामत में पूरा मन्ज़र पेश कर दिया जाएगा और सब कुछ निगाहों के सामने आ जाएगा। आज के ज़माने में इसका समझना कुछ मुश्किल नहीं। छोटी सी चिप में न जाने क्या–क्या महफ़ूज़ हो जाता है और ज़रूरत के हिसाब से आदमी उसको देख और सुन सकता है और न जाने क्या–क्या आगे नयी–नयी चीज़ें ईजाद हो जाएगीं, जिनसे समझना और ज़्यादा आसान हो जाएगा। अल्लाह के लिये क्या मुश्किल है, उसी ने फ़रिश्तों को हुक्म दे रखा है कि वे सब कुछ सुरक्षित कर रहे हैं और यह सिलसिला हर इन्सान के साथ लगा हुआ है। क़यामत में इसको निकालकर सामने कर दिया जाएगा। इरशाद होता हैः

﴿وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلزَمنَاهُ طَآئِرَهُ فِي عُنُقِهِ وَنُخرِجُ لَهُ يَومَ القِيَامَةِ كِتَاباً يَلقَاهُ مَنشُورا ○ اقرَأ كَتَابَكَ كَفَي بِنَفسِكَ اليَومَ عَلَيكَ حَسِيبا﴾

"हर इन्सान के आमाल को हमने उसकी गर्दन में लगा दिया है और क़यामत के दिन हम उसको एक तहरीर (लिखावट) की शक्ल में निकाल कर उसके सामने कर देंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा। अपना आमालनामा ख़ुद ही पढ़ आज अपना हिसाब लेने को तू ख़ुद ही काफ़ी है।" (सूरह बनी इस्राईलः 13–14)

हिसाब इस तरह लिया जाएगा कि सबकुछ कच्चा–चिट्ठा सामने कर दिया जाएगा। आदमी की ज़बान गूंगी हो जाएगी और उसके अंग गवाही देंगेः

﴿اليومَ نَختِمُ عَلَي أفوَاههم وَتُكَلِّمُنَا أيدِيهم وَتَشهدُ أرجُلُهم بِمَا كَانُوا يكسِبُونَ﴾

"आज हम उनके मुंह पर मोहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बात करेंगे और उसके पैर उसकी गवाही देंगे कि वे क्या कमाई किया करते थे।" (सूरह यासीनः 65)

अच्छे–बुरे आमाल जब बिल्कुल सामने आ जांए तो अल्लाह उसको अपनी तराज़ू में तौलकर जन्नत या दोज़ख़ का फ़ैसला कर देंगेः

﴿وَنَضَعُ المَوَازِينَ القِسطَ لِيومِ القِيامَة﴾

"और क़यामत के दिन हम इन्साफ़ की तराज़ू क़ायम करेंगे।"

(सूरह अम्बियाः 47)

उस दिन ज़रा भी नाइंसाफ़ी न होगी और जो होगा वह ठीक–ठीक सामने आ जाएगा। इरशाद होता हैः

﴿وَالوَزنُ يومَئِذٍ الحَقُّ فَمَن ثَقُلَت مَوَازِينُه فَأولَـئِکَ همُ المُفلِحُونَ ○ وَمَن خَفَّت
مَوَازِينُه فَأولَـئِکَ الَّذِينَ خَسِرُوا أنفُسَهم بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يظلِمُونَ﴾

"और वज़न उस दिन ठीक–ठीक होगा, फिर जिनके तराज़ू वज़नी रहे तो वही लोग अपनी मुराद को पहुंचे और जिनके तराज़ू हल्के रहे तो वही लोग है जिन्होंने अपना नुक़सान किया, इसलिये कि वो हमारी निशानियों के साथ इन्साफ़ न करते थे।"

(सूरह आराफ़ः 8–9)

﴿فَأمَّا مَن ثَقُلَت مَوَازِينُه ○ فَهوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِية ○

﴿وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ○ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ﴾

"बस जिसकी तराज़ू भारी रही तो वो मनपसंद ज़िन्दगी में होगा और जिसकी तराज़ू हल्की रही तो उसका ठिकाना एक गहरा गढ़ा है और आपको पता भी है कि वह गहरा गढ़ा क्या है।"

(सूरह अलकारियाः 6–9)

तराज़ू का नाम आते ही डन्डी, कांटा और न जाने क्या क्या ज़हन में आता है। लेकिन अब तो इसका समझना भी आसान हो गया है। न जाने नापने और तौलने वाली कैसी–कैसी चीज़े ईजाद हो गयी हैं जिनमे अक्षर को भी तौला जा सकता है और गर्मी व सर्दी का भी अन्दाज़ा आसानी से कर लिया जाता है। यहां तक कि इन्सानी मिज़ाज को नाप लिया जाता है। अल्लाह तआला हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक है। उसकी इन्साफ़ की तराज़ू कैसी होगी उसकी हक़ीक़त को कौन समझ सकता है मगर यह बात तय है कि उसके ज़रिये से इन्सान का कुल आमाल उनका संबंध ज़ाहिरी अज़ा से हो या अन्दरूनी कैफ़ियत व एहसास से सभी चीज़ें इस तराज़ू में तुल जांएगी और दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। अब जन्नत वालों के लिये जन्नत और दोज़ख़ वालों के लिये दोज़ख़ का फ़ैसला कर दिया जाएगा।

पुल सरात

जहन्नुम के ऊपर ये एक निहायत नाज़ुक गुज़रगाह है जिस पर से हर नेक व बुरे को गुज़रना होगा। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैः

﴿وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا﴾

"और तुममें से हर एक को उस पर से होकर गुज़रना है, आपके रब का ये हतमी फ़ैसला है।" (सूरह मरियमः 71)

लोगों का गुज़रना अपने–अपने आमाल की बुनियाद पर होगा। नबियों व सच्चे लोगों, शहीदों व नेक लोग ऐसे गुज़र जाएंगे कि जैसे बिजली कौंध गयी। बहुत से तेज़ रफ़्तारी के साथ और बहुत

से चलते हुए गुज़रेंगे लेकिन जो बुरे काम करने वाले हैं जिनके लिये जहन्नम का फ़ैसला उनकी बुरे कामों की वजह से जहन्नम का हो चुका है वो घिसट–घिसट कर उस पर चलेंगे और कट कट कर उसमें गिर जाएंगे। हदीस में इसके बारे में आया है कि वह तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक है।[1]

बुख़ारी शरीफ़ की एक लम्बी रिवायत में आता है:

﴿ويضرب الصراط بين ظهري جهنم فأكون أنا وأمتي أول من يجيزها ولا يتكلم يومئذ الا الرسل ودعوي الرسل يومئذ اللهم سلم سلم وفي جهنم كلاليب مثل شوك السعدان هل رأيتم السعدان؟ قالوا: نعم يا رسول الله قال: فانها مثل شوك السعدان غير أنه لا يعلم ما قدر عظمها الا الله تخطف الناس بأعمالهم فمنهم الموبق بقي بعمله أو الموثق بعمله ومنهم المخردل أو المجازي أو نحوه﴾[2]

बुख़ारी शरीफ़ की एक दूसरी लम्बी रिवायत में है कि जब पुल सिरात का ज़िक्र आया तो सहाबा ने पूछा कि पुल सिरात क्या है? रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः

﴿مدحضة مزلة عليه خطاطيف وكلاليب وحسكة مفلطحة لها شوكة عقيفاء تكون بنجد يقال لها السعدان المؤمن عليها كالطرف وكالبرق وكالريح وكأجاويد الخيل والركاب فناج مسلم وناج مخدوش ومكدوس في نار جهنم حتي يمر أخرهم يسحب سحبا﴾

(एक बहुत ही फिसलने वाला चिकना रास्ता, जिस पर पांव टिक न सके, उस पर नोकदार मुड़ी हुई कीलें और बड़े–बड़े कांटे जिसमें मुड़े हुए छोटे–छोटे कांटे होंगे जो नज्द में पाए जाते हैं, जिसको "सादान" कहते हैं, ईमान वाला उसको पलक झपकते ही गुज़र जाएगा और जैसे बिजली कौंधे, तेज़ हवा की तरह, तेज़ रफ़्तार घोड़ों की तरह, या सवारी की तरह, जो बहुत से पूरी तरह

---

1. शोएबुल ईमान लिल बैहिक़ी : 367
2. सही बुख़ारी : 7339

से नजात पा जाएंगे और बहुत से जख़्मी होकर बचते—बचते निकलेंगे और बाज़ कटकर जहन्नम में गिर जाएंगे, यहां तक कि उनमे आख़िरी आदमी घिसट—घिसट कर चलेगा)[1]

एक दूसरी रिवायत में तफ़सील है कि उस दिन अल्लाह तआला ईमान वालों को उनके आमाल के एतबार से एक नूर अता फ़रमाएंगे बहुतों का नूर पहाड़ की तरह होगा और बहुतों का उससे यहां तक कि कुछ का केवल पैर के अंगूठे के बराबर होगा।[2]

उस रोशनी में लोग गुज़रेगे। उस नूर का ज़िक्र कुरआन मजीद में भी आया है। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿يومَ تَرَي المُؤمِنِينَ وَالمُؤمِنَاتِ يسعَي نُورُهم بَينَ أيدِيهم وَبِأيمَانِهم بُشرَاكُمُ
اليومَ جَنّاتٌ تَجرِي مِن تَحتِها الأنهارُ خَالِدِينَ فِيها ذَلِکَ هوَ الفَوزُ العَظِيم ○
يومَ يقُولُ المُنَافِقُونَ وَالمُنَافِقَاتُ لِلّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا نَقتَبِس مِن نُّورِكُم
قِيلَ ارجِعُوا وَرَاءكُم فَالتَمِسُوا نُوراً فَضُرِبَ بَينَهم بِسُورٍ لّه بَابٌ
بَاطِنُه فِيه الرَّحمَةُ وَظَاهِرُه مِن قِبَلِه العَذَاب﴾

“उस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगें कि उनका नूर उनके सामने और उनके दाएं दौड़ता चलेगा। आज तुम्हें बशारत हो ऐसी जन्नतों की जिनमें नहरें जारी हैं, उन्हीं में हमेशा के लिये रहना है। यही बड़ी कामयाबी है। उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे ज़रा हमें भी देख लो तुम्हारी कुछ रोशनी हम भी हासिल कर लेंगे। कहा जाएगा, पीछ लौट जाओ और (जाकर) रौशनी तलाश करो। बस उनके बीच एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा जिसके अन्दर की तरफ़ रहमत होगी और उधर उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा।” (सूरह अलहदीदः 12—13)

हौज़—ए—कौसर

---

1. मुस्तदरक हाकिम : 3424
2. रवाहु बुख़ारीः 6581

﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ﴾

"यक़ीनन हमने आपको कौसर अता कर दी, तो आप अपने रब के लिये नमाज़े पढ़ें और कुरबानी करें।" (सूरह कौसरः 1–2)

अल्लाह तआला अपने आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0अ0) को यह शर्फ़ भी अता फ़रमाया कि क़यामत के रोज़ रसूलुल्लाह (स0अ0) को हौज़–ए–कौसर अता होगा। उस हौज़ की कुछ तफ़सील सही हदीसों में आयी हैं। नीचे वे रिवायते पेश की जा रही हैं:

﴿عن أنس رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلي الله عليه وسلم: بينا أنا أسير في الجنة اذا أنا بنهر حافتاه قباب الدر المجوف قلت ماهذا يا جبرئيل؟ قال: هذا الكوثر الذي أعطاك ربك فاذا طينه مسك أذفر﴾

(हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः जब मैं जन्नत में चल रहा था, तो मेरा एक नहर के पास से गुज़र हुआ, जिसके किनारे अन्दर से ख़ाली मोतियों के बने हुए हैं, मैंने (हज़रत) जिब्राईल से मालूम किया कि यह क्या है? उन्होंने कहाः यह हौज़–ए–कौसर है, जो आपके रब ने आपको अता फ़रमाया है, और इसकी मिट्टी तेज़ ख़ुशबूदार मुश्क़ है) [1]

﴿عن عبدالله بن عمرو رضي الله عنهما قال: قال رسول الله صلي الله عليه وسلم حوضي مسيرة شهر وزواياه سواء ماءه أبيض من اللبن وريحه أطيب من المسك وكيزانه كنجوم السماء من يشرب منها فلا يظمأ أبدا﴾

(हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः मेरे हौज़ की दूरी एक महीना है, जिसके किनारे बिल्कुल बराबर सराबर हैं और उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और उसकी ख़ुशबू मुश्क़ से कहीं ज़्यादा बेहतर है

---

1. बुख़ारी : 7337

और उसके प्याले आसमान के सितारों की तादाद में है, अगर कोई शख़्स उसको एक मर्तबा पी ले तो वह कभी प्यासा नहीं होगा) [1]

﴿عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلي الله عليه وسلم ان حوضي أبعد من أيلة من عدن لهو أشد بياضا من الثلج وأحلي من العسل باللبن ولآنيته أكثر من عدد النجوم واني لأصد الناس عنه كما يصد الرجال ابل الناس عن حوضه قالوا يا رسول الله! أتعرفنا يومئذ؟ قال: نعم لكم سيماء ليست لأحد من الأمم تردون علي غرا محجلين من أثر الوضوء﴾

(हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः मेरा हौज़ इतना बड़ा है, जिस क़दर ईला व अदन का फ़ासला हो, जिसकी सफ़ेदी बर्फ़ से कहीं ज़्यादा, और जिसकी मिठास दूध के अन्दर घुले हुए शहद से कहीं ज़्यादा है, और उसके बर्तनों की तादाद तो सितारों से कहीं ज़्यादा है और मैं उसके पास से लोगों को इस तरह रोक रहा होऊंगा जैसा कि लोग अपने कुवें से दूसरे लोगों के ऊंटों को दूर करते हैं, चुनान्चा सहाबा किराम (रज़ि0) ने अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के रसूल (स0अ0) क्या आप हमको उस वक़्त पहचान लेंगे? आप (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः बिल्कुल, तुम्हारे पास एक ऐसी शिनाख़्त होगी जो किसी उम्मत के पास न होगी, तुम मेरे पास इस हाल में लौटोगे कि तुम्हारी पेशानी और हाथ–पांव वुज़ू की तरह चमक–दमक रहे होंगे) [2]

﴿عن سهل بن سعد قال: قال رسول الله صلي الله عليه وسلم: اني فرطكم علي الحوض من مر علي شرب ومن شرب لم يظمأ أبدا ليردن علي أقوام أعرفهم ويعرفونني ثم يحال بيني وبينهم فأقول انهم مني فيقال: انک لا تدري ما أحدثوا بعدک فأقول: سحقا سحقا لمن غير بعدي﴾

(हज़रत सहल बिन साद (रज़ि0) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः मैं हौज़ पर तुममें से सबसे पहले पहुंचने वाला हूं, जिसका मेरे पास से गुज़र होगा तो वह उसे

---

1. बुख़ारी : 6579
2. सही मुस्लिम : 604

पियेगा और जो उसे पी लेगा वह कभी प्यासा नहीं होगा, अलबत्ता बहुत से ऐसे लोग भी मेरे पास पहुंचेगे कि मैं उनको पहचानता होऊंगा और वे मुझे पहचानते होंगे, लेकिन फिर उनके और मेरे दरमियान दूरी कर दी जाएगी, चुनान्चे मैं कहूंगाः यह लोग तो मेरे (उम्मती) हैं, तो जवाब दिया जाएगाः आपको नहीं मालूम, कि उन्होंने आपके जाने के बाद क्या किया है, लिहाज़ा फिर मैं भी यही कहूंगा कि ऐसे लोगों से दूरी ही बेहतर है, जिन्होंने मेरे बाद कुछ कमी–बेशी की)[1]

जन्नत

﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُم
جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ○ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا﴾

''(हां) यक़ीनन जिन्होंने माना और अच्छे काम किये उनके लिये मेहमानी को फ़िरदौस की जन्नतें होंगी। हमेशा उसी में रहेंगे, उसे छोड़कर कहीं जाना न चाहेंगे।'' (सूरह कहफ़ः 107–108)

जन्नत वह ख़ुशियों की और केवल ख़ुशियों की जगह है। जो ईमानवालों और अच्छे काम करने वालों को नसीब होगी जिसका ऐश हमेशा का और जिसका लुत्फ़ व ख़ुशी हर तरह की कुढ़न से बिल्कुल ख़ाली है और जो इसमें एक बार दाख़िल हो जाएगा वह हमेशा के लिये वहीं का होकर रह जाएगा। न वह निकाला जाएगा और न वह निकलना चाहेगा। वहां नेमतों में ऐसी बहार होगी कि हर नेमत एक नई बहार लिये हुए सामने आयेगी। वहां किसी क़िस्म का न कोई ख़ौफ़ होगा न कोई डर और न आपसी रंजिश की कोई संभावना होगी। जन्नत में हर दाख़िल होने वाला अपनी ख़ुशियों और न ख़त्म होने वाली ख़ुशियों में ऐसा मस्त होगा जिसका तसव्वुर भी दुनिया में मुमकिन नहीं है। ग़रज़ यह कि वह ऐसी बादशाहत होगी जिसका ख़्याल दुनिया के बड़े–बड़े बादशाह को भी नहीं हो

1. सही बुख़ारी : 7075

सका। वहां आदमी जो चाहेगा वह उसको मिलेगा, दिल में जिस चीज़ की ख़्वाहिश होगी वह सामने मौजूद पायेगा।

दुनिया में हर फूल के साथ कांटे हैं, हर रोशनी के साथ अंधेरा है, हर वजूद के साथ फ़ना है, न जाने कितने ग़म सहने के बाद ख़ुशी का मंज़र सामने आता है और अभी मन भरता भी नहीं होती कि उसका ख़ात्मा हो जाता है। जन्नत को अल्लाह ने ख़ुशी और आनन्द का ऐसा अजर ठिकाना बनाया है जिसमें ग़म व दुख का कभी गुज़र नहीं।

﴿فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ﴾

"तो उनके लिये न ख़त्म होने वाला अज्र है।" (सूरह तीनः 6)

कुरआन मजीद की परिभाषा में वह "जन्नातुन्नईम" (नेमत का बाग़) भी है। "जन्नतुल ख़ुल्द" (हमेशा बाक़ी रहने वाले बाग़) भी हैं। जन्नातुन अद्न (हमेशा के सुकून के बाग़) भी है और दारुल इस्लाम (सलामती का घर) भी है।

वहां के दवाम व बक़ा और वहां की नेमतों के क्रम और जन्नतवालों का सदा उनमें रहना ऐसी क़तईयत के साथ कुरआन मजीद में बयान किया गया है कि इसमें ज़रा सा शुब्हा भी बाक़ी नहीं रह जाता। वहां की नेमतों के क्रम का ज़िक्र नीचे की आयतों में देखें:

﴿وَجَنَّاتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ﴾

"और ऐसी जन्नतों की जिसमें उनके लिये हमेशा की नेमतें हैं।" (सूरह तौबाः 21)

﴿أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا﴾

"इसके फल भी सदा (बहार) हैं और उसका साया भी।"

(सूरह रअदः 35)

﴿وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ○ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ﴾

"और बहुत से फलों में जो न ख़त्म होने को आएगें और न उनमें कोई रोक–टोक होगी।" (सूरह वाक़्यहः 32–33)

﴿إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ﴾

"सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये तो उनके लिये न ख़त्म होने वाला अज्र है।" (सूरह तीनः 6)

जन्नतवाले जो इन नेमतों में रहेंगे उनके हमेशा रहने का ज़िक्र कर बार बार आया है:

﴿خَالِدِينَ فِيهَا أَبَداً﴾

"वे हमेशा इसी में रहेंगे।" (सूरह निसाः 57)

एक जगह इरशाद है:

﴿لا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوتَ إِلَّا الْمَوتَةَ الأُولَى﴾

"वह सिवाए पहली मौत के फिर वहां मौत का मज़ा न चखेंगे।"

(सूरह दुख़्ख़ानः 56)

एक हदीस में आता है कि जब जन्नत वाले जन्नत में जा चुकेंगे तो मौत को एक मेंढे की शक्ल में लाया जाएगा और ज़िबह कर दिया जाएगा और ऐलान हो जाएगा कि अब मौत को मौत आ चुकी है। अब किसी को मौत आने वाली नहीं। जन्नतवालों को इस बात से बहुत ज़्यादा ख़ुशी मिलेगी।[1]

अब आख़िरी बात यह होगी कि जन्नतवाले न वहां से निकाले जाएंगे और न वे वहां से निकलना चाहेंगे। इसी सूरत के बारे में इरशाद होता है:

﴿لاَ يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ﴾

"न वहां थकन का नाम होगा और न ही वे वहां से निकाले जाएंगे।" (सूरह हिज्रः 48)

और दूसरी ज़रूरत के बारे में इरशाद हुआ कि:

﴿خَالِدِينَ فِيهَا لاَ يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلاً﴾

"हमेशा इसी में रहेंगे, इसे छोड़कर कहीं जाना न चाहेंगे।"

---

1. सुनन तिरमिज़ी : 2755

(सूरह कहफ़: 108)

वहां की अधिकाधिक नेमतों का नक़्शा इन आयात में खींच दिया गया है:

﴿فَوَقَاهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذَلِکَ الیومِ وَلَقَّاهم نَضرَةً وَسُرُوراً وَجَزَاهم بِمَا صَبَرُوا جَنَّة وَحَرِيراً مُتَّكِئِينَ فِيها عَلَي الأرَائِکِ لَا يرَونَ فِيها شَمساً وَلَا زَمهرِيراً وَدَانِية عَلَيهم ظِلَالُها وَذُلِّلَت قُطُوفُها تَذلِيلا ○ وَيطَافُ عَلَيهم بِآنِية مِّن فِضَّة وَأكوَابٍ كَانَت قَوَارِيرَا قَوَارِيرَ مِن فِضَّة قَدَّرُوها تَقدِيرا ○ وَيسقَونَ فِيها كَأساً كَانَ مِزَاجُها زَنجَبِيلا عَيناً فِيها تُسَمَّي سَلسَبِيلاً ○ وَيطُوفُ عَلَيهم وِلدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأيتَهم حَسِبتَهم لُؤلُؤاً مَّنثُوراً وَإِذَا رَأيتَ ثَمَّ رَأيتَ نَعِيماً وَمُلكاً كَبِيراً عَالِيهم ثِيابُ سُندُسٍ خُضرٌ وَإِستَبرَقٌ وَحُلُّوا أسَاوِرَ مِن فِضَّة وَسَقَاهم رَبُّهم شَرَاباً طَهوراً إِنَّ هذَا كَانَ لَكُم جَزَاءً وَكَانَ سَعيكُم مَّشكُوراً﴾

"बस अल्लाह इनको उस दिन की बुराई से बचा लेगा और उनको ताज़गी और आनन्द प्रदान करेगा और उनको उनके सब्र के बदले में बाग़ और रेशम प्रदान करेगा। वे इनमें आराम से मसहरियों पर तकियों से टेक लगाए होंगे। वहां न उनको धूप की तपिश से पाला पड़ेगा, न सख़्त सर्दी से और इन पर बाग़ के साये झुके पड़ रहे होंगें और उनके फल झुके हुए लटक रहे होंगे और उनपर चांदी के बरतनों और शीशे की प्यालियों के दौर चल रहे होंगे। शीशे भी जो चांदी की क़िस्म के होंगे और वहां उनको ऐसे जाम पिलाये जाएंगे, जिसमें जन्हील (सोंठ का मिश्रण) मिली हुई होगी, वहां के ऐसे स्रोत से जिसका नाम सलसबील होगा। और उनके सामने सदाबहार लड़के आ जा रहे होंगे, जब उनको आप देखेंगे तो लगेगा जैसे बिखरे हुए मोती हों, और जब आप देखेंगे तो उस जगह आपको नेमतों की एक दुनिया और बड़ी बादशाहत नज़र आयेगी। उन पर बारीक रेशम के हरे वस्त्र होंगे और अतलस और दीबा के कपड़े होंगे और उनको चांदी के कंगन से सजाया जायेगा और

उनको उनका रब पाकीज़ा शराब पिलायेगा। यह है तुम्हारा बदला, और तुम्हारी मेहनत रंग लायी है।'' (सूरह दहरः 11–22)

तिरमिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में आता हैः

﴿عن المغيرة بن شعبة رضي الله عنه عن النبي صلي الله عليه وسلم قال: ان موسي عليه السلام سأل ربه فقال: أي رب أي أهل الجنة أدني منزلة قال: رجل يأتي بعد ما يدخل أهل الجنة الجنة فيقال له: ادخل الجنة فيقول: كيف أدخل وقد نزلوا منازلهم وأخذوا أخذاتهم قال: فيقال له أترضي أن يكون لک ما كان لملک من ملوک الدنيا فيقول: نعم أي رب قد رضيت فيقال له: فان لک هذا ومثله ومثله ومثله فيقول: رضيت أي رب فيقال له: فان لک هذا وعشرة أمثاله فيقول: رضيت أي رب فيقال له: فان لک مع هذا ما اشتهت نفسک ولذت عينک﴾

(हज़रत मुग़ैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने परवरदिगार से पूछा कि ऐ परवरदिगार! जन्नत वालों में से सबसे कम रुत्बेवाला कौन होगा? फ़रमायाः वह शख़्स जो जन्नत वालों के जन्नत में दाख़िल हो चुकने के बाद आख़िर में आयेगा, तो उससे कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ, वह कहेगा कि अब मैं कहां जाऊंगा, लोग अपने–अपने मक़ाम पर जा चुके और रब्बानी नवाज़िशों पर क़ाबिज़ हो चुके, उससे कहा जाएगा कि क्या तू इस पर राज़ी है कि तुझे वह मिले जो दुनिया के बादशाहों में से किसी को भी न मिला। कहेगा कि अल्लाह मैं राज़ी हूं, कहेगा तेरे लिये इतना और उससे दूना और उससे तिगना और चौगुना है, कहेगा अल्लाह मैं राज़ी हो गया, अल्लाह तआला कहेगा तेरे लिये वह और उसका दस गुना है। फ़रमाएगा उसके साथ यह भी कि जो तेरा दिल आरज़ू करे और जो तेरी आंखों को लज़्ज़त बख़्शे) [1]

---

1. सुनन तिरमिज़ी : 155/2

हासिल यह कि जन्नतवालों को वह मिलेगा जिसका ज़िक्र इस रिवायत में है कि:

﴿ما لا عين رأت ولا أذن سمعت وما خطر علي قلب بشر﴾

(जो न आंख ने देखा, न कान ने सुना, न दिल पर उसका ख़्याल गुज़रा)[1]

यह सब नेमतें अल्लाह के उन बन्दों को हासिल होंगी जो अल्लाह के मानने वाले हैं। सच्चा ईमान रखने वाले हैं। और अच्छे काम करने वाले हैं।

दोज़ख़

﴿وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ﴾

''और जिन्होंने नाफ़रमानी की तो उनका ठिकाना जहन्नम है, जब जब वे उससे निकलने का इरादा करेंगे वहीं पल्टा दिये जाएंगे और उनसे कहा जाएगा जहन्नम का वह मज़ा चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे।'' (सूरह सज्दाः 20)

जन्नत के बिल्कुल ख़िलाफ़ यह बहुत बड़े अज़ाब और बहुत ही सख़्त तकलीफ़ों का वह ठिकाना है जो अल्लाह तआला ने अपने नाफ़रमान और बाग़ी बन्दों के लिये तैयार किया है। जज़ा व सज़ा, जन्नत व दोज़ख़ का यह यक़ीन ही इन्सान को फ़रमाबरदारी पर उभारता है।

दोज़ख़ की सख़्त हौलनाकियों का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में भी है और हदीसों में भी। यह हौलनाकियां और सख़्त तकलीफ़ें जिस्मानी भी होंगी, और रूहानी और अक़्ली भी। जिस्मानी तकलीफ़ों का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में इस अंदाज़ से मिलता है:

﴿تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ﴾

---

1. सुनन तिरमिज़ी : 3501

''आग उनके चेहरों को झुलसा रही होगी और उसमें उनके चेहरे बिगड़ चुके होंगे।'' (सूरह मोमिनूनः 104)

दोज़ख़ का एक और नाम "سقر"भी है जिसके बारे में इरशाद हैः

﴿وَمَاأدرَاكَ مَاسَقَرُ ○ لَاتُبقِي وَلَاتَذَرُ ○ لَوَّاحَةٌلِّلبَشَر﴾

''और आप जानते भी हैं कि जहन्नम क्या है, न बाक़ी रखेगी, न छोड़ेगी, जिस्म को झुलसा डालेगी।'' (सूरह मुदस्सिरः 28—29)

मज़ीद इरशाद हैः

﴿كَلَّا إِنَّهَا لَظَي ○ نَزَّاعَةً لِّلشَّوَي﴾

''हरगिज़ नहीं वह एक भड़कती हुई आग है, जो खाल खींच लेने वाली है।'' (सूरह मआरिजः 15—16)

पीने को गरम पानी मिलेगा, जिससे आंते निकल पड़ेगी।

﴿وَسُقُوا مَاءً حَمِيماً فَقَطَّعَ أمعَاءهم﴾

''और उनको खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो वह उनकी आंतों को काट कर रख देगा।'' (सूरह मुहम्मदः 15)

गरम पानी के साथ पीप पीने को दिया जाएगाः

﴿إِلَّا حَمِيماً وَغَسَّاقاً﴾

''सिवाए खौलते हुए पानी और बहते हुए पीप के।''

(सूरह नबाः 25)

उनके ऊपर से गरम पानी डाला जाएगा, जो उनके जिस्मों को काटकर रख देगा।

﴿يُصَبُّ مِن فَوقِ رُؤُوسِهِمُ الحَمِيمُ ○
يصهرُ بِهِ مَافِي بُطُونِهِم وَالجُلُود ○ وَلَهُم مَّقَامِعُ مِن حَدِيد﴾

''उनके सर के ऊपर से खौलता हुआ पानी डाला जाएगा, उससे उनके पेट की सब चीज़ें और खालें गल जाएंगी और उनके लिये लोहे के हथौड़े होंगे।'' (सूरह हज्जः 19—21)

ज़ख़्मों को धुवों की ख़ुराक दी जाएगी।

﴿وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ﴾

"और न उनके लिये कोई खाना है सिवाए ज़ख़्मों के धुवों के।"

(सूरह हाक़्क़ाः 36)

आग के कपड़ों का लिबास होगाः

﴿فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ﴾

"तो जिन्होंने इन्कार किया उनके लिये आग का लिबास तैयार किया जाएगा।" (सूरह हज्जः 19)

गले में तौक़ व ज़ंजीरें होंगीः

﴿إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ﴾

"जब तौक़ व सलासल उनकी गर्दनों में पड़े होंगे, वे घसीट कर ले जाए जाएंगे।" (सूरह ग़ाफ़िरः 71)

﴿إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَا وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا﴾

"यक़ीनन हमने इन्कार करने वालों के लिये बेड़ियां और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।" (सूरह दहरः 4)

﴿وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ﴾

"और आप उस दिन मुजरिमों को देखेंगे कि वे बेड़ियों में जकड़े होंगे।" (सूरह इब्राहीमः 49)

यह तकलीफ़ें ऐसी सख़्त होंगी कि दिल उनसे जलकर कबाब होंगे, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ○ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ﴾

"वह अल्लाह की भड़काई हुई आग है, जो दिलों तक जा पहुंचेगी।" (सूरह हम्ज़ाः 6–7)

इन सख़्त जिस्मानी तकलीफ़ों के साथ उनके साथ बहुत ही ज़िल्लत भरा सुलूक भी होगा। जिसके दिल व जिगर कट–कट कर रह जाएंगे। अल्लाह फ़रमाता है कि उनको ख़िताब करके कहा जाएगाः

﴿فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ﴾

"बस आज तुम्हें ज़िल्लत के अज़ाब की सजा मिलेगी।"

(सूरह एहक़ाफ़ः 20)

उनसे कहा जाएगा कि तुमने दुनिया में अल्लाह को भुला दिया, आज तुमको भुलाया जाता हैः

﴿كَذٰلِكَ أَتَتكَ آياتُنافَنَسِيتَهاوَكَذٰلِكَ اليومَ تُنسَىٰ﴾

"इसी तरह मेरी निशानियां तेरे पास आयीं थीं तो तूने उन्हें फ़रामोश कर दिया था और ऐसे ही आज तुझे फ़रामोश किया जाता है।" (सूरह ताहाः 126)

इस ज़िल्लत व रुस्वाई को महसूस करेंगे और दिल ही दिल में पछताएंगे।

﴿وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا العَذَابَ﴾

"और वे जब अज़ाब देखेंगे तो अन्दर ही अन्दर पछताएंगे।"

(सूरह यूनुसः 54)

﴿يا حَسرَتَي عَلَي مَا فَرَّطتُ فِي جَنبِ اللهِ﴾

"हाय मेरी शामत कि मैंने अल्लाह के हक़ में कमी की।"

(सूरह ज़ुमरः 56)

उनको इस वक़्त माफ़ी मांगने की भी इजाज़त न होगी।

﴿لَا تَعتَذِرُوا اليوم﴾

"जिन्होंने इन्कार किया आज उज़्र पेश मत करो।"

(सूरह तहरीमः 7)

न उनको ख़ुदा–ए–रहीम से बात करने का मौक़ा दिया जाएगा, ऐलान होगाः

﴿اخسَؤُوا فِيهاوَلَا تُكَلِّمُونِ﴾

"उसी में धंसे रहो और मुझसे बात भी मत करना।"

(सूरह मोमिनूनः 108)

दोज़ख़ और उसकी हौलनाकियां अल्लाह के बाग़ी और नाफ़रमान बन्दों के लिये होंगी। फिर उनकी दो क़िस्में होंगी, एक क़िस्म उन लोगों की होगी जो अल्लाह के मुनकिर हैं या उन्होंने अल्लाह को पहचानने से इन्कार किया। और इसके साथ दूसरों को शरीक किया। हक़ीक़त में जहन्नम ऐसे लोगों के लिये है। वे हमेशा हमेश इसी में ज़लील व ख़्वार होकर पड़े रहेंगे, इरशाद होता हैः

﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعاً وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ○ يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ﴾

"बिलाशुब्हा जिन्होंने कुफ़्र किया अगर उनके पास ज़मीन भर चीज़ें हों और उतना ही और भी हो, ताकि वे उसको फ़िदिया में देकर क़यामत के दिन अज़ाब से छूट जाएं तो भी यह सब चीज़ें उनकी तरफ़ से कुबूल न की जाएगीं और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है, वे चाहेंगे कि जहन्नम से निकल आएं हालांकि वे उससे निकलने वाले नहीं उनके लिये हमेशा का अज़ाब है।"

(सूरह माइदाः 36–37)

﴿وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً﴾

"और पैरवी करने वाले कहेंगे कि अगर हमको एक मौक़ा और मिल जाए।" (सूरह बक़राः 167)

एक जगह उसूल फ़रमा दिया गया किः

﴿إِنَّ اللهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ﴾

"बेशक अल्लाह ही उसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ शिर्क किया जाये और उसके अलावा जिसको चाहता है माफ़ कर देता है।" (सूरह निसाः 47)

अल्लाह के बाग़ियों और मुनकिरों के लिये और उसके साथ दूसरों को शरीक करने वालों के लिये यह दोजख़ अज़ाब ही अज़ाब है। इसी में हमेशा उनको रहना है। अलबत्ता एक दूसरी क़िस्म

दोज़ख़ में जाने वालों की ऐसे ईमान वालों की होगी जो धोखे में पड़े रहे और उनके गुनाहों की कसरत ने उनको जहन्नम में पहुंचाया। ऐसे लोगों के लिये दोज़ख़ एक तरफ़ अज़ाब है, तो दूसरी तरफ़ उनके लिये रहमत का एक बहाना भी है। ऐसे लोगों को अपने–अपने बुरे कामों के नतीजे में लम्बे अर्से तक जहन्नम में रहना होगा, लेकिन आख़िर में उनका ठिकाना जन्नत बनेगा। मानों कि दोज़ख़ में उनका डाला जाना उनको पाक करने के लिये और जन्नत में दाख़िले का मुस्तहिक़ बनाने के लिये होगा। इसीलिए एक सही हदीस में आता है कि:

﴿حتي اذاهذبوا ونقوا أذن لهم في دخول الجنة﴾

(यहां तक जब गुनाहगारों को पाक–साफ़ कर दिया जाएगा और सुथरा कर दिया जाएगा तो उनको जन्नत में दाख़िले की इजाज़त मिल जाएगी)[1]

हदीस में आता है कि एक लम्बे अर्से तक अपने किये की सज़ा भुगतने के बाद पूरी तरह साफ़–सुथरा हो जाने के बाद उन लोगों को जहन्न्म से निकाला जाएगा, जिनके दिल में अल्लाह की वहदानियत होगी, यहां तक कि रसूलुल्लाह (स0अ0) उसी की सिफ़ारिश करेंगे, जिसके दिल में तौहीद की दौलत होगी, बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है कि: (मेरी सिफ़ारिश से सरफ़राज़ होने की ख़ुश क़िस्मती उसको हासिल होगी जिसने ख़ुलूसे दिल के साथ अल्लाह का इक़रार किया हो)[2]

---

1. बुख़ारी: 6535
2. बुख़ारी: 657

तक़दीर पर ईमान

जिन चीज़ों का मानना ईमान के लिये ज़रूरी है, उनमें तक़दीर भी है। हज़रत उमर (रज़ि0) की एक लम्बी हदीस में इसका ज़िक्र मौजूद है। हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) ने रसूलुल्लाह (स0अ0) से जब ईमान के बारे में सवाल किया तो आप (स0अ0) ने जवाब में फ़रमायाः

﴿وأن تؤمن بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر﴾

(तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर और आख़िरत के दिन पर और तक़दीर पर अच्छी हो या बुरी)[1]

कुरआन मजीद में बहुत सी जगहों पर इसका ज़िक्र मौजूद है कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ एक निश्चित मात्रा के साथ तय कर दी है और पूरी दुनिया की व्यवस्था उसी निश्चित व्यवस्था के अधीन उसी क्रम के साथ चल रही है। इसी तय व्यवस्था के लिये तक़दीर का शब्द इस्तेमाल हुआ है। इरशाद होता हैः

﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ﴾

"हमने हर चीज़ को नाप–तौल कर ही पैदा किया है।"

(सूरह क़मरः 49)

इसी बात को दूसरी जगह यूं फ़रमायाः

﴿قَدْ جَعَلَ اللهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا﴾

"अल्लाह ने हर चीज़ का एक निज़ाम तय कर रखा है।"

(सूरह तलाक़ः 3)

---

1. मुस्लिमः 102

अल्लाह के बड़े ताक़त के प्रदर्शन के बारे में कहा गया:

﴿وَالشَّمسُ تَجرِي لِمُستَقَرٍّ لَّها ذَلِکَ تَقدِيرُ العَزِيزِ العَلِيم○ وَالقَمَرَ قَدَّرنَاه مَنَازِلَ حَتَّي عَادَ کَالعُرجُونِ القَدِيمِ○ لَا الشَّمسُ ينبَغِي لَها أن تُدرِکَ القَمَرَ وَلَا اللَّيلُ سَابِقُ النَّهارِ وَکُلٌّ فِي فَلَکٍ يسبَحُونَ﴾

''और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ रवा–दवां है यह उस ज़बरदस्त ख़ूब जानने वाले का तय किया हुआ है और चांद की मंज़िले भी हम ही ने तय कर रखी हैं यहां तक कि फिर वह वैसे ही हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी, न सूरज को रवा है कि वह चांद को जा ले और न रात दिन से पहले आ सकती है और सबके सब (अपने अपने) मदार में तैर रहे हैं।''

(सूरह यासीन: 38–40)

ज़मीन के बारे में कहा गया:

﴿وَقَدَّرَ فِيها أقوَاتَها﴾

''और उसने उसमें ज़िन्दगी के सब सामान तय किये।''

(सूरह हामीम सज्दा: 10)

मौत व ज़िन्दगी के तय करने के बारे में कहा गया:

﴿نَحنُ قَدَّرنَا بَينَکُمُ المَوتَ﴾

''हम ही ने तुम्हारे बीच मौत मुक़र्रर कर रखी है।''

(सूरह वाक़्या: 60)

इसकी और अधिक व्याख्या यूं की गयी:

﴿فَإِذَا جَاءَ أجَلُهم لَا يَستَأخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَستَقدِمُونَ﴾

''बस जब उनका वक़्त आ पहुंचा तो वे एक लम्हे के लिये न आगे हो सकते हैं न पीछे।'' (सूरह आराफ़: 34)

इसके अलावा बहुत सी आयते हैं जिनमें पूरी स्पष्टता के साथ यह बात कह दी गयी कि पूरी कायनात का निज़ाम उसी ने तय कर दिया है और वह उसके तय किये हुए रास्तों पर चल रहा

है। क़ज़ा उस तय किये गये निज़ाम लागू करने को कहते हैं। इरशाद होता हैः

﴿فقضاهن سبع سماوات﴾

"तो उसने दो दिन में वह (यानि) सात आसमान बनाए।"

(सूरह हा मीम सज्दाः 12)

इस अक़ीदे का मतलब यह है कि कायनात में जो कुछ अब तक हुआ है और जो कुछ हो रहा है और जो कुछ आगे होगा, वह अल्लाह तआला के फ़ैसले के मुताबिक़ हुआ है, होता है और होगा। कायनात बनाने वाले ने कायनात की पैदाइश से पहले उसके सभी भाग तय करके हर चीज़ के बारे में फ़ैसल कर दिया था। अब उसी फ़ैसले के मुताबिक़ कायनात और उसकी सब घटनाएं वुजूद में आ रही हैं। मौत व जिन्दगी, अमीरी व ग़रीबी, कामयाबी व नाकामी, तकलीफ़ व राहत हर चीज़ पहले से तय है। और उसी के मुताबिक़ वुजूद में आती जा रही है। तक़दीर अच्छी हो या बुरी का मतलब यही है कि अल्लाह के तय किये हुए निज़ाम में जो पहलू ज़ाहिरी तौर पर इन्सान के लिये अच्छा है, वह उसके लिये ख़ैर है, और जो पहलू उसके लिये तकलीफ़ देने वाला है वह उसके लिये शर है। वरना हक़ीक़त में अल्लाह ने जो तय किया वह ख़ैर ही ख़ैर है, इसमें शर का कोई तसव्वुर नहीं और जो हदीस नक़ल की गयी उसका भी यही मतलब है कि तक़दीर पर ईमान लाओ, "ख़ैरुहू व शर्रुहु" इसका वह पहलू जो ख़ैर है उस पर भी और उसका वह पहलू जिसका ज़ाहिरी पहलू इन्सान के लिये तकलीफ़ देह है उस पर भी।

तक़दीर का यह अक़ीदा इन्सान के अन्दर एक अमल की ताक़त पैदा करता है। हिम्मत हारना और मायूसी से उसको निकालकर हौसला देता है और दूसरी तरफ़ फ़ख़्र व घमन्ड से बचाता है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः

﴿لِكَيلَا تَأسَوا عَلَى مَا فَاتَكُم وَلَا تَفرَحُو
بِمَا آتَاكُم وَاللهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُختَالٍ فَخُورٍ﴾

"ताकि जो चीज़ तुमसे छूट जाए उस पर ग़म न करो और जो वह तुम्हें दे दे उस पर इतराओ नहीं और अल्लाह किसी भी अकड़ने वाले शेख़ीबाज़ को पसंद नहीं करता।" (सूरह हदीदः 22–23)

एक ईमान वाले का दिल जब इस यक़ीन से भर जाता है कि जो होता है सब अल्लाह के करने से होता है तो उसको किसी चीज़ के ख़त्म हो जाने, किसी नुक़सान उठाने, या किसी नाकामी से मायूसी नहीं होती और वह यूं होता हैः

﴿قُل لَّن يصِيبَنَا إِلاَّ مَا كَتَبَ الله لَنَا هوَ مَولاَنَا وَعَلَي الله فَليتَوَكَّلِ المُؤمِنُون﴾

"आप कह दीजिए कि हमको वही (तकलीफ़) पहुंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिये लिख दी है, वही हमारा मालिक है और ईमान वाले अल्लाह ही पर भरोसा करते हैं।" (सूरह तौबाः 51)

वह कभी मायूस नहीं होता, बल्कि हर क़दम नये हौसले के साथ उठाता है और हर क़दम को वह कामयाबी का क़दम समझता है और आगे बढ़ता चला जाता है। इसका यक़ीन इस पर होता है कि ख़ैर का हर क़दम उसको एक नयी कामयाबी के लिये तैयार कर रहा है। इसका यक़ीन अल्लाह के इस इरशाद पर होता हैः

﴿فَأَمَّا مَن أعطَي وَاتَّقَي ○ وَصَدَّقَ بِالحُسنَي ○ فَسَنُيسِّرُه لِليسرَي ○ وَأَمَّا مَن بَخِلَ وَاستَغنَي ○ وَكَذَّبَ بِالحُسنَي ○ فَسَنُيسِّرُه لِلعُسرَي﴾

"और जहां तक इसका ताल्लुक़ है जिसने (अल्लाह के रास्ते में कुछ) दिया और परहेज़गारी अख़्तियार की, और भली बात को सच माना, तो हम धीरे–धीरे उसको आसानी की तरफ़ ले चलेंगे, और जिसने कंजूसी की और बेपरवाह रहा, उसने भली बात न मानी तो हम उसको धीरे–धीरे सख़्ती की तरफ़ ले चलेंगे।"(सूरह लैलः 5–10)

उसके सामने अल्लाह के रसूल (स0अ0) का यह फ़रमान होता हैः

﴿كل ميسر لما خلق له﴾

(हर एक के लिये वही ख़ैर आसानी कर दी जाती है, जिसके लिये वह पैदा किया गया है)[1]

इसी के साथ उसको अपनी कामयाबी पर घमन्ड नहीं होता, वह यक़ीन रखता है कि जो कामयाबी मिली है वह केवल अल्लाह का करम और उसका ईनाम है, हर फ़तेह पर उसका सर अल्लाह के सामने झुक जाता है, वह उसको अपनी ज़ात से नहीं जोड़ता, बल्कि उसको सिर्फ़ अल्लाह का दिया हुआ तोहफ़ा समझता है।

मतलब यह कि यक़ीन ईमान वाले के अन्दर संतुलन और काम करने की ताक़त पैदा करता है, न कि मायूसी और दुख।

---

1. बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर : 54